जय-तिथि-पत्रक

श्री वीर-निर्वाण संवत्
२५४४-२५४५
विक्रम संवत् २०७५

तेरापंथ संवत्
२५८-२५९
ईस्वी सन् २०१८-२०१९

सम्पादक : 'शासन स्तम्भ' मंत्री मुनि सुमेरमल

जैन विश्व भारती
लाडनूं - 341306 (राजस्थान)

दूरभाष : 01581-226025, 224671, 226080
E-mail : jainvishvabharati@yahoo.com, Visit us at : www.jvbharati.org

अहिंसा यात्रा

₹20

जैन विश्व भारती

मानवीय मूल्यों को समर्पित संस्था

प्रमुख गतिविधियां : एक नजर

शिक्षा :
- जैन विश्व भारती संस्थान (मान्य विश्वविद्यालय)
- विमल विद्या विहार सीनियर सैकण्डरी स्कूल
- महाप्रज्ञ इंटरनेशनल स्कूल, टमकोर
- महाप्रज्ञ इंटरनेशनल स्कूल, जयपुर
- समण संस्कृति संकाय
- केन्द्रीय जीवन विज्ञान अकादमी

सेवा :
- सेवाभावी आयुर्वेदिक रसायनशाला
- श्रीमद् आचार्य तुलसी महाप्रज्ञ मानव कल्याण केन्द्र, बीदासर
- स्व. माणकचन्द मनोहरी देवी दूगड़ आयुर्वेद चिकित्सालय, बीदासर
- विद्युत चुम्बकीय चिकित्सा केन्द्र
- समणी केन्द्र व्यवस्था

साहित्य :
- प्रकाशन एवं वितरण
- आगम मंथन प्रतियोगिता
- इतिहास मंथन प्रतियोगिता

संस्कृति :
- तुलसी कला दीर्घा (आर्ट गैलेरी)

शोध :
- आगम सम्पादन
- हस्तलिखित एवं पाण्डुलिपियों की सुरक्षा एवं संरक्षण

समन्वय :
- पुरस्कार एवं सम्मान
- विदेशों में प्रचार–प्रसार

साधना :
- प्रेक्षाध्यान
- प्रेक्षाध्यान पत्रिका

उक्त सभी गतिविधियों में संपूर्ण समाज की सहभागिता एवं सहयोग हेतु सादर निवेदन

अधिक जानकारी हेतु सम्पर्क करें

जैन विश्व भारती

पोस्ट : लाडनूं–341306, जिला : नागौर (राज.) फोन : 01581–226080 I 224671

E-mail : jainvishvabharati@yahoo.com, Visit us at : www.jvbharati.org

आशीर्वचन

जैन विश्व भारती के परिसर का कण-कण जप-तप से भावित है। भिक्षु विहार में अनवरत जप-तप की तरंगें प्रवाहित होती रहती है। प्रज्ञालोक में अध्यात्म चिंतन और ध्यान के विकिरण सतत संचरित रहते हैं। तुलसी अध्यात्म नीडम् का वायब्रेशन उस समूचे भाग को प्रभावित करता है। आगम, शोध व सम्पादन के क्रम में आगमों के पाठ का पारायण होता रहता है। मुझे तो लगता है कि यहां अध्यात्म का वातावरण है, इसलिए यहां आने वाले अत्यधिक प्रसन्नता का अनुभव करते हैं। मेरा एक सुझाव है कि यहां आने वाले ध्याता बनकर आएं और ध्येय के प्रति समर्पित रहें। ऐसा होने पर प्रसन्नता और पवित्रता हर पल आपकी परिक्रमा करती रहेगी।

- आचार्य तुलसी

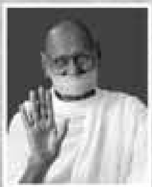

जैन विश्व भारती और जैन विश्व भारती संस्थान जैन विद्या के विश्व प्रसिद्ध केन्द्र हैं। जैन विश्व भारती के पास ज्ञान की विशाल राशि है। इसकी मिट्टी में सात सकारों के बीज हैं। आचार्यश्री तुलसी का तप तेजस्वी सूर्य है, जो इसकी उर्वरा को बढ़ाएगा। ज्ञान का स्रोत है, दर्शन का संरक्षण है, चरित्र की हवा है। जिससे यह बगीचा प्राच्य विद्याओं के फूलों की सुगंध को, सुवास को क्षितिज पर फैलाएगा। उस सुवास और सौरभ से विश्व मानस प्रभावित हो, जीवन बोध पाएगा।

- आचार्य महाप्रज्ञ

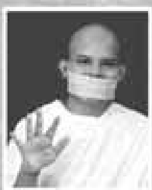

जैन विश्व भारती एक गौरवशाली संस्था है। उसके द्वारा जैन विद्या, शिक्षा, साहित्य, प्रेक्षाध्यान, जीवन विज्ञान जैसी विभिन्न महत्त्वपूर्ण गतिविधियों का संचालन किया जा रहा है। परमपूज्य गुरुदेव तुलसी और परमपूज्य आचार्य महाप्रज्ञजी का महनीय मार्गदर्शन इस संस्था को प्राप्त हुआ। जैन विश्व भारती संस्थान (मान्य विश्वविद्यालय) उसके साथ जुड़ा हुआ है। लाडनूं स्थित जैन विश्व भारती परिसर मुनिवृंद, समणीवृंद और मुमुक्षुवृंद का भी आवास स्थल बना हुआ है। तेरापंथ समाज मानो इस माने भी भाग्यशाली है कि उसके पास इतनी बड़ी संस्था है। यह संस्था आध्यात्मिक आरोहण करती रहे तथा समाज को आध्यात्मिक पोषण देती रहे। शुभाशंसा।

- आचार्य महाश्रमण

प्रत्येक कर्म के साथ धर्म को जोड़ दिया जाए तो
धर्म के लिए अलग से समय निकालने की जरूरत नहीं ।

-आचार्य महाश्रमण

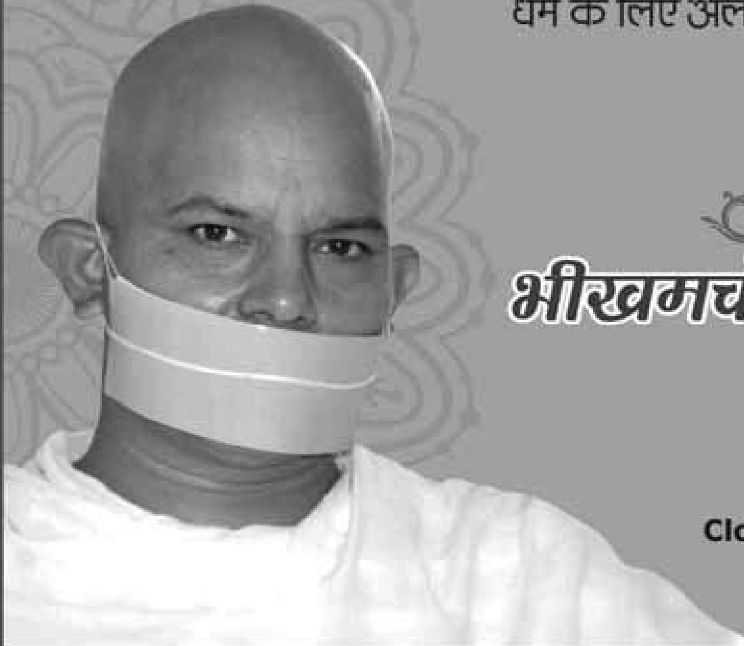

श्रद्धावनत

भीखमचंद जीतमल चोरड़िया

बीदासर

J.M. Jain

Cloth Merchant & Commission Agents
2285/9, Gali Hinga Beg,
Tailak Bazar, Delhi-110006

सद्व्यवहार सबके साथ करो ।
विश्वास किसी योग्य का करो ।
दुर्व्यवहार किसी के साथ मत करो ।

–आचार्य महाश्रमण

'श्रद्धानिष्ठ श्रावक'

स्व. हनुमानमलजी दूगड़ 'जौहरी' की पुण्य स्मृति में

: श्रद्धावनत :

'श्रद्धा की प्रतिमूर्ति' गिन्नीदेवी दूगड़

मदनचंद, आलोक, अजित दूगड़ समस्त 'जौहरी' दूगड़ परिवार

(सरदारशहर-मुम्बई-सूरत)

Royal Diam

: OFFICE :

DC-4220, Bharat Diamond Bourse, BKC, Bandra (E)
Mumbai-400051 | T : 91-22-2361 1056/57/58
F : 91-22-2361 1055 | E : royal_diam@hotmail.com

: FACTORY :

SY-433/1, Nodh - TPS-3, Nandu Doshi Ni Wadi
Vasta Devdi Road, Surat - 395004
T : 91-261-2531700 | F : 91-261-2531100

जीवन में एक संकल्प ऐसा रखो, जिसे रखने के लिए
तुम अपने प्राणों का भी अर्पण कर सको।

–आचार्य महाश्रमण

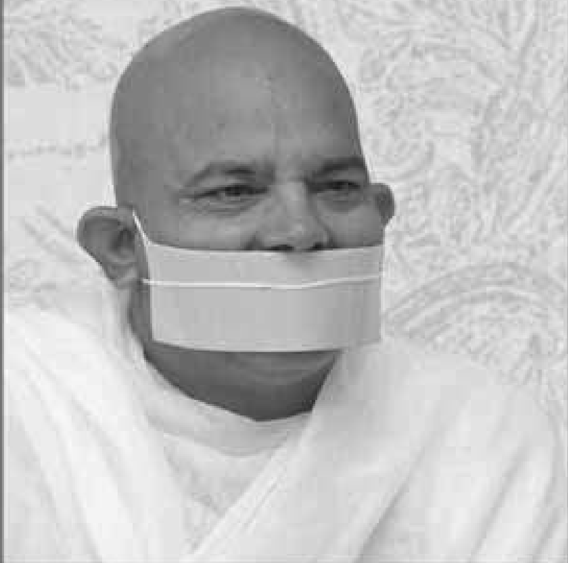

श्रद्धावनत

Rameshchand, Vijaraj, Rakesh Bohra

Musaliya-Chennai-Dubai

Pradeep Stainless India Pvt. Ltd.

C 3, Phase II, 3rd Main Road, MEPZ SEZ, Tambaram
Chennai- 600 044, Mob. : 09840177330

धन तुम्हारे अहंकार, विलास और
मूर्च्छा का कारण न बने।
यह सोचो, वह परोपकार का साधन
कैसे बन सकता है ?

– आचार्य महाश्रमण

Sri Poosalal Suganibai Anchaliya Charitable Trust

P. Sampathraj Anchaliya
P. Tarachand Anchaliya
P. Gyanchand Anchaliya

Sirkali-Chennai-Delhi-Marudhar (Padukallan)

जैन विश्व भारती का महत्त्वपूर्ण उपक्रम आगम साहित्य का प्रकाशन

नव प्रकाशित आगम

वाचना प्रमुख
आचार्य श्री तुलसी

मुख्य संपादक विवेचक
आचार्य श्री महाप्रज्ञ

प्रधान संपादक
आचार्य श्री महाश्रमण

जैन विश्व भारती का महत्वपूर्ण उपक्रम आगम साहित्य का प्रकाशन

अन्य प्रकाशित आगम

1 अंगसुत्ताणि भाग - 1,2,3
2 उवंगसुत्ताणि भाग - 1,2
3 नवसुत्ताणि
4 दसवेआलियं
5 उत्तरज्झयणाणि
6 आगम शब्द कोष
7 श्री भिक्षु आगम विषय कोश भाग - 1,2
8 देशी शब्द कोश
9 निरूक्त कोश
10 एकार्थक कोश
11 जैनागम वनस्पति कोश
12 जैनागम प्राणी कोश
13 जैनागम वाद्य कोश
14 जैन पारिभाषिक कोश
15 भगवती जोड़ खण्ड 1 से 7
16 आयारो (अंग्रेजी)
17 आचारांगभाष्यम् (अंग्रेजी)
18 भगवई खण्ड 1 - (अंग्रेजी)
19 उत्तरज्झयणाणि भाग 1,2 (गुजराती)
20 सूयगडो भाग 1,2 (गुजराती)
21 आयारो
22 आचारांगभाष्यम्
23 सूयगडो
24 ठाणं
25 समवाओ
26 भगवई भाग 1,2,3,4,5
27 नायाधम्मकहाओ
28 उवासगदसाओ
29 नंदी
30 अणुओगदाराइं
31 दसवेआलियं
32 कप्पो (बृहतकल्प)
33 निसीहज्झयणं
34 दसाओ
35 विवागसुयं
36 आवस्सयं
37 इसिभासियाइं
38 निर्युक्तिपंचक
39 पिण्डनिर्युक्ति
40 विवाहनिर्युक्ति
41 सानुवाद व्यवहार भाष्य
42 व्यवहार भाष्य
43 बृहतकल्पभाष्य भाग 1, 2
44 विशेषावस्यक भाष्य भाग 1, 2
45 निशीथ भाष्य भाग 1, 2, 3, 4
46 गाथा
47 आत्मा का दर्शन

अधिक जानकारी हेतु संपर्क सूत्र : जैन विश्व भारती लाडनूं : 8742004849, आचार्य महाश्रमण प्रवास स्थल : 9928393902

ईमेल : books@jvbharati.org

Books are available online at : http://books.jvbharati.org

अनाग्रह अच्छा है पर आग्रह भी सर्वत्र बुरा नहीं।
सत्य की खोज में अनाग्रह उपयोगी है और
प्राप्त सत्य की रक्षा के लिए आग्रह भी लाभदायी है।

– आचार्य महाश्रमण

हार्दिक शुभकामनाओं सहित

सरला देवी - महेन्द्र कुमार जैन

महनसर (राजस्थान) - किशनगंज (बिहार)
बैंगलोर (कर्नाटक)

प्रकाशकीय

जैन विश्व भारती के समण संस्कृति संकाय द्वारा विगत 40 वर्षों से मर्यादा महोत्सव के पावन अवसर पर जय-तिथि-पत्रक का प्रकाशन प्रतिवर्ष निरंतर किया जा रहा है। इसी क्रम में 154वें मर्यादा महोत्सव के पावन अवसर पर संवत् 2075 का जय-तिथि-पत्रक सुधी पाठकों के हाथों में प्रस्तुत करते हुए हमें हार्दिक प्रसन्नता है। जय-तिथि-पत्रक में ज्योतिषीय सूचनाओं, विशेष पर्वों, महत्त्वपूर्ण दिवसों व अनुष्ठानों के साथ-साथ संस्थाओं एवं विभिन्न संघीय गतिविधियों, कार्यक्रमों आदि से संबंधित उपयोगी सामग्री प्रकाशित की गई है।

परमाराध्य आचार्यप्रवर के निर्देशानुसार 'शासन स्तंभ' मंत्रीमुनि श्री सुमेरमलजी ने जय-तिथि-पत्रक संपादन के गुरुतर दायित्व का सम्यक् निर्वहन करते हुए दैनंदिन आवश्यकता की ज्योतिषीय सूचना-सामग्री प्रस्तुत करने की कृपा की है, हम मंत्री मुनिश्री के प्रति हार्दिक कृतज्ञता ज्ञापित करते हैं। मुनिश्री उदितकुमारजी के महनीय मार्गदर्शन हेतु हार्दिक कृतज्ञता। श्री जीतमल नाहटा, कोलकाता का सामग्री संकलन कार्य में सहयोग प्राप्त हुआ, तदर्थ हार्दिक आभार।

जय-तिथि-पत्रक के प्रकाशन के लिए हमें अनेक महानुभावों का आर्थिक सौजन्य प्राप्त हुआ है। उनका उदार सहयोग-भाव संस्था की प्रवृत्तियों को गतिशील रखने में योगभूत बनता है। सभी अनुदानदाताओं के प्रति हम हार्दिक आभार ज्ञापित करते हैं। प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप से इस कार्य में सहयोगी सभी महानुभावों के सहयोग हेतु आभार।

विश्वास है कि जय-तिथि-पत्रक की सामग्री सभी उपयोगकर्ताओं के लिए महत्त्वपूर्ण एवं उपयोगी सिद्ध होगी तथा इसमें प्रस्तुत सामग्री से उपयोगकर्ता त्याग-प्रत्याख्यान के लिए प्रेरित होंगे।

बी. रमेशचन्द बोहरा	**मालचन्द बेगानी**	**राजेश कोठारी**
अध्यक्ष, जैन विश्व भारती	**विभागाध्यक्ष, समण संस्कृति संकाय**	**मंत्री, जैन विश्व भारती**

01 जनवरी, 2018

अध्यक्ष की कलम से

जैन विश्व भारती तेरापंथ धर्मसंघ की एक महत्त्वपूर्ण संस्था है। संपूर्ण जैन समाज में यह एक गौरवशाली संस्था के रूप में प्रतिष्ठित है। इसके द्वारा अनेक संघीय एवं समाजोपयोगी गतिविधियां संचालित की जा रही है।

आचार्य तुलसी के सपनों की कामधेनु जैन विश्व भारती आज केवल एक संस्था के रूप में नहीं, अपितु मानव कल्याणकारी प्रवृत्तियों के केन्द्र, प्राच्य एवं जैन विद्या की संरक्षण स्थली एवं आध्यात्मिक वैज्ञानिक व्यक्तित्व-निर्माण स्थल के रूप में विविध दिशाओं में कार्य कर रही है। समाज-परिवर्तन एवं समाज-विकास की आचार्यश्री तुलसी की प्रबल उत्कंठा को जैन विश्व भारती ने यथार्थ में परिणित करने का प्रयास किया है। इस संस्था के माध्यम से आचार्यश्री तुलसी, आचार्यश्री महाप्रज्ञजी और आचार्यश्री महाश्रमणजी का भविष्योन्मुखी एवं युगान्तरकारी चिंतन देश-विदेश तक पहुंचा है, जिस कारण से आज जैन विश्व भारती प्रस्तर खण्डों में नहीं, अपितु लोकमानस में प्रतिष्ठित है।

शिक्षा, शोध, साहित्य, साधना, सेवा, संस्कृति और समन्वय-इस 'सप्तसकार' को केन्द्र में रखकर कार्य करने वाली यह संस्था वर्तमान में अपने अनुशास्ता आचार्यश्री महाश्रमणजी के आशीर्वाद, समाज के सहयोग एवं सक्षम कार्यकर्ताओं के श्रम के फलस्वरूप अनेक मानव कल्याणकारी गतिविधियों का संचालन कर रही है। लगभग साढ़े चार दशक की यात्रा में जैन विश्व भारती ने अनेक पड़ावों को पार किया है। संस्था के सूत्रधारों के समक्ष संभावनाओं का असीम आकाश भी है और उसे प्राप्त करने का उत्साह, उमंग और जज्बा भी। उस असीम विकास के लिए परमपूज्य आचार्यप्रवर का पावन आशीर्वाद और चारित्रात्माओं का पावन पथदर्शन निरन्तर हमें प्राप्त है। सादर निवेदन है कि संपूर्ण समाज तन-मन-धन एवं चिंतन से जैन विश्व भारती की असीम विकास यात्रा के सहयात्री बनें।

बी. रमेशचंद बोहरा
अध्यक्ष

01 जनवरी 2018

मर्यादा महोत्सव क्षेत्र कटक : एक परिचय

कटक शहर भारत के प्राचीन शहरों में से एक है। सन् 990 के दशक में इस शहर की नींव केशरी वंश के महाराजा केशरी ने रखी। तीन तरफ पानी से घिरे इस शहर में महानदी एवं काठजोड़ी नदी पर ग्यारहवीं शताब्दी में केशरीवंश के महाराजा मर्कट केशरी के शासनकाल में बांध बनाया गया। केशरीवंश के पश्चात् यहां पर गंगावंश के शासकों ने राज्य किया। 12वीं शताब्दी पूर्व में गंग शासकों ने एक किले का निर्माण करवाया। राजा मुकुन्ददेव ने सन् 1560-1568 में इस किले का विस्तार किया तथा एक सम्पूर्ण किला का रूप दिया। सन् 1568 से 1603 तक यह किला अफगान, मुगल और मराठा राजाओं के प्रशासन का केन्द्र रहा।

मुगल बादशाह अकबर के सेनापति राजा टोडरमलजी ने सन् 1575 में यहां आकर मुसलमान शासक दाउद खां को परास्त किया। पुनः सन् 1590 में बादशाह अकबर ने राजा मानसिंहजी को मुसलमान बागी कुतूल खां एवं उसके साथी पठान को कुचलने के लिए भेजा। सन् 1598 तक राजा मानसिंहजी यहीं रहे तथा इस किले का नाम बाराबाटी रखा गया। वर्तमान में यह किला ध्वस्त हो चुका है। राजा मानसिंह जी के नाम से आज भी कनिका चौक के पास का रास्ता मानसिंह पटना के नाम से नामित हैं। सन् 1611 में मुगल बादशाह ने राजपूताना के राजा कल्याणमल को उड़ीसा का दायित्व दिया। उन्होंने अपनी योग्यता से ओड़िशा का संचालन कुशलता से किया। राजा टोडरमल, राजा मानसिंह तथा राजा कल्याणमल तीनों राजपूताना के शासक थे। उनकी सेवा में राजपूताना के सिपाही, रक्षक होने के कारण ही यहां पर उनके शासनकाल से ही राजस्थान के लोगों का आवागमन शुरू हो गया।

लगातार आवागमन के कारण यहां पर राजस्थान के लोग व्यापार करने लगे। सन् 1803 में अंग्रेजों ने मराठों को परास्त कर यहां पर अपना अधिकार कर लिया। अंग्रेजों के जमाने में उड़ीसा की राजधानी कटक बनाई गई। बंगाल प्रान्त पास में होने के कारण यहां पर बंगाल के बहुत से नागरिक निवास करने लगे, जिनमें स्वतंत्रता सेनानी विपिन चन्द्र पाल और नेताजी सुभाष चन्द्र बोस का नाम बड़े आदर से लिया जाता हैं। नेताजी सुभाषचंद्र बोस का जन्म 23 जनवरी 1897 को कटक में ही हुआ था। उनका जन्म स्थान आज एक संग्रहालय के रूप में जानकीनाथ भवन के नाम से जाना जाता हैं। ओड़ीशा के पूर्व मुख्यमंत्री बीजू पटनायक तथा वर्तमान मुख्यमंत्री नवीन पटनायक की भी जन्म स्थली कटक हैं।

कटक में सब धर्मों के अनुयायी शताब्दियों से निवास करते हैं। राजस्थान तथा हरियाणा से आने वाले नागरिक यहां पर मारवाड़ी नाम से जाने जाते हैं। मारवाड़ी समाज में सब जाति, धर्मों के लोग है, जिनमें जैन समाज भी एक हैं। यहां पर जैन समाज के चारों सम्प्रदायों के (दिगम्बर, श्वेताम्बर मूर्तिपूजक, स्थानकवासी एवं श्वेताम्बर तेरापंथी) के परिवार निवास करते हैं।

तेरापंथ समाज के कटक में निवास करने वालों में पुराने श्रावकों में थे–रामचन्द्र जी सुराणा (तारानगर), कन्हैयालाल जी बिनायकिया (राजलदेसर), जेठमल जी चौपड़ा (छोटी खाटू) तथा रतनलालजी बोथरा (सरदारशहर) आदि। उस समय तेरापंथ समाज के पुरुष ही यहां पर व्यापार, नौकरी आदि कार्यों में संलग्न थे। तेरापंथ समाज का महिला वर्ग बाद में यहां पर निवास करने आया। इस प्रकार तेरापंथ समाज की संख्या निरन्तर बढ़ती गई और वर्तमान में कटक में प्रवासी ही नहीं बल्कि सम्पूर्ण ओड़िशा में प्रवासी जैन समाज में सर्वाधिक संख्या तेरापंथ समाज कटक की है। लगभग 210 परिवार यहां पर प्रवासित हैं।

सन् 1967 में श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा की स्थापना हुई तथा सन् 1969 से तेरापंथ महिला मंडल और सन् 1980 से तेरापंथ युवक परिषद कार्यरत है। सन् 1989 से समाज के साधर्मिक भाइयों के सहयोग से यहां पर तेरापंथ भवन बना जिसका सन् 2003-2004 में विस्तार कर दुगुना भवन बन गया, जहां पर धर्मसंघ की सारी गतिविधियां व्यवस्थित चलती है। तेरापंथी सभा, महिला मंडल, युवक परिषद के साथ-साथ अणुव्रत समिति भी सक्रिय हैं। कन्या मंडल, किशोर मंडल भी व्यवस्थित हैं।

गत 17-18 वर्षों से तेरापंथ भवन में ज्ञानशाला का व्यवस्थित संचालन हो रहा है। सभा द्वारा सन् 1987 से होमियोपैथिक चिकित्सालय निःशुल्क चल रहा है, जहां पर सुबह शाम दोनों समय डॉक्टर रोगियों को देखते हैं। जैन विद्या परीक्षाओं का संचालन भी व्यवस्थित चलता है। कटक में जैन विश्व भारती संस्थान द्वारा संचालित पत्राचार पाठ्यक्रम का भी केन्द्र चार वर्ष तक रहा। तेरापंथ प्रोफेशनल फोर्म का भी गठन कटक में हो गया हैं।

पूज्यप्रवरों–आचार्यश्री तुलसी, आचार्यश्री महाप्रज्ञ एवं आचार्यश्री महाश्रमण की असीम अनुकम्पा कटक पर है। यहां पर प्रथम चातुर्मास सन् 1968 में मुनि शुभकरणजी (अब गणमुक्त) का हुआ। इससे पूर्व यहां पर साध्वी श्री रूपांजी एवं मुनि श्री बुद्धमल जी (दो बार) और मुनि श्री मगनमल जी का भी आगमन हुआ। सन् 1977 से प्रायः

चातुर्मास या समणी केन्द्र होते रहते हैं। जिस वर्ष चातुर्मास या समणी केन्द्र नहीं होते हैं तो उपासकों का आगमन गुरुदेव की कृपा से होता रहता है।

कटक का लाडला भाई आकाश मुनि दीक्षा ग्रहण कर मुनि आकाश कुमार के रूप में कटक का नाम उजागर करते हुए धर्मसंघ में साधनारत है। कटक में वर्तमान में 2 भाई उपासक तथा 6 बहिनें उपासिका के रूप में सेवा दे रहे हैं। सन् 1989 में स्थानीय उड़ीया भाषा के अखबार समाज के सम्पादक श्री राधानाथ रथ को अणुव्रत पुरस्कार से भी सम्मानित किया गया था। पूज्य प्रवर की अनुकम्पा से स्थानीय भाई को 'श्रद्धानिष्ठ श्रावक' एवं कई बहनों को 'श्रद्धा की प्रतिमूर्ति' से भी अलंकृत किया गया हैं। स्थानीय श्रद्धासिक्त श्रावक समाज प्रायः प्रतिवर्ष गुरु-दर्शनार्थ जाते हैं। गुरुकृपा से स्थानीय कई भाई-बहिनों ने केन्द्रीय संस्थाओं में महत्त्वपूर्ण दायित्व निभा कर अपनी क्षमता का परिचय दिया हैं तथा वर्तमान में भी दे रहे हैं।

-: निवेदक :-

मानिकचंद पुगलिया
महामंत्री

मोहनलाल सिंघी
अध्यक्ष

आचार्य महाश्रमण मर्यादा महोत्सव व्यवस्था समिति, कटक (उड़ीसा)
तेरापंथ भवन, काठगड़ा साही, कटक-753001

चेन्नई तेरापंथ इतिहास के उजले पृष्ठ

मेवाड़ की शौर्य भूमि में अवतरित जैन धर्म का नया संस्करण तेरापंथ और मारवाड़ की पावन धरा पर पल्लवित नन्हा अंकुर क्रमशः वटवृक्ष का रूप ग्रहण करने लगा था। पूर्वजों ने अर्थोपार्जन के लिए अन्य क्षेत्रों में जाना प्रारम्भ किया। उन्नीसवीं सदी तक राजस्थान प्रदेश के लोग देश के उन भिन्न-भिन्न क्षेत्रों तक पहुंच गए थे, जहां यातायात के साधनों के अभाव में जाना मुश्किल लगता था।

सुदूर दक्षिण में लगभग 163 वर्ष पूर्व सन् 1847 में मद्रास में तेरापंथी परिवार के रूप में सर्वप्रथम समाजभूषण श्री जसवन्तमल सेठिया के पूर्वज (चार पीढ़ी पूर्व) श्री गम्भीरमल सेठिया, बलूंदा से जालना और जालना से अंग्रेज सेना के साथ पैदल चल कर मद्रास पट्टालम में आए। मद्रास में सन् 1936 में 22 तेरापंथी परिवार प्रवासित थे। तमिलनाडु में तेरापंथी परिवारों की संख्या 1968 में 250, 1976 में 700, 1988 में 1240 थी जो कि 2010 में 2700 परिवारों से अधिक पहुंच गई है।

बीसवीं सदी से पहले तेरापंथ धर्मसंघ में संघीय व सामाजिक दृष्टि से कोई संस्था नहीं थी। उस समय की परिस्थितियों में संभवतः उसकी अपेक्षा भी नहीं थी। बीसवीं सदी में समाज के चिन्तनशील लोगों ने अनुभव किया कि सामाजिक संगठन के श्लथ होने की स्थिति में कार्यकर्त्ताओं का केन्द्रीकरण होना अपेक्षित है।

इस अपेक्षा की आपूर्ति के लिए तथा दक्षिण में प्रवासित तेरापंथी परिवारों में साधर्मिक वात्सल्य बढ़ाने के उद्देश्य से सन् 1945 में 'दक्षिण भारतीय श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा' का गठन कर मुख्यालय बैंगलोर रखा गया। इसमें मद्रास, कोलार, चिकमंगलूर, जयसिंगपुर और बैंगलोर का प्रतिनिधित्व था। तदनन्तर दिनांक 2.7.1950 को चूले पट्टालम में श्री जसवन्तमल सेठिया के समीपस्थ श्री नेमकरणजी सेठिया के मकान में एक आम सभा प्रवासित तेरापंथी परिवारों की बुलाई गई, जिसमें मद्रास शाखा का गठन किया गया। प्रथम सभापति श्री जसवन्तमल सेठिया को बनाया गया।

सन् 1950 में 'समाजभूषण' श्री छोगमल चोपड़ा के मद्रास पदार्पण के अवसर पर श्री जसवन्तमल सेठिया के नेतृत्व में स्थानीय तेरापंथी बंधुओं ने उनका अभिनन्दन किया। सामाजिक और शिक्षण संस्थाओं में उनके विद्वतापूर्ण भाषणों का आयोजन कर धर्मसंघ की प्रभावना में उल्लेखनीय योगदान किया।

तेरापंथ धर्मसंघ के वरिष्ठ श्रावक श्री नेतीचन्द गधैया के प्रथम बार मद्रास पदार्पण पर तेरापंथ समाज ने भव्य अभिनन्दन किया।

दिनांक 14.11.1954 को कार्यकारिणी के सदस्यों की संख्या 15 से बढ़ा कर 21 की गई। सन् 1955-56 में मुनिश्री जसकरणजी का प्रथम चातुर्मास आदियप्पा नाइकन स्ट्रीट में श्री सनातन धर्म स्कूल के पास वाले मकान में हुआ।

दिनांक 8.4.1956 को श्री दानमल सेठिया की अध्यक्षता में आयोजित बैठक में 'श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, मद्रास' का गठन किया गया। दिनांक 29.6.1956 को आयोजित बैठक में सभापति श्री जसवन्तमलजी सेठिया को नियुक्त किया गया।

दिनांक 22.11.1957 की बैठक में लोक सभा में श्री दीवानचन्द्र शर्मा द्वारा रखा जाने वाला 'बाल दीक्षा प्रतिबन्धक विधेयक' का प्रबल विरोध करने व स्थान-स्थान से तत्संबंधित पत्र व टेलिग्राम भिजवाने का निश्चय किया गया। मुनिश्री जसकरणजी की सेवा में जाने का निर्णय किया गया।

दिनांक 24.10.1958 को आचार्यश्री तुलसी को दक्षिण पधारने की अर्ज करने के लिए दिनांक १५.११.१९५८ को सात सदस्यों का प्रतिनिधि भेजने का निर्णय किया गया। सभा का निजी भवन खरीदने के लिए समिति गठन की जिम्मेदारी श्री जसवन्तमल सेठिया व श्री हस्तीमल गादिया, पल्लावरम को दी गई।

दिनांक 19.12.1958 व दिनांक 6.1.1959 की कार्यकारिणी की बैठकों में समिति द्वारा निर्मित सभा की नियमावली पर विचार कर स्वीकृत किया गया और दिनांक 18.1.1959 की साधारण सभा में प्रस्तुत कर पारित कराने का निर्णय किया गया। दिनांक 18.1.1959 की साधारण सभा में कार्यकारिणी द्वारा स्वीकृत सभा की नियमावली पारित की गई।

दिनांक 12.8.1960 को सभा की साधारण सभा में सभा के लिए साहुकारपेट में मकान खरीदने का निर्णय किया गया। सभा को रजिस्टर्ड कराने व बैंक में खाता खोलने का निर्णय भी किया गया।

सन् 1960 में सभा भवन का शिलान्यास श्री दानमल सेठिया के कर-कमलों से सम्पन्न हुआ। दिनांक 3.1.1961 की बैठक में सभा भवन को चार मंजिला बनाने का निर्णय किया गया। निर्माणाधीन सभा भवन की द्वितीय मंजिल पर दिनांक 11.2.1962 को मर्यादा महोत्सव का आयोजन किया गया।

दिनांक 14.9.1962 को महामना आचार्यश्री तुलसी को दक्षिण पधारने की अर्ज करने के लिए प्रतिनिधि मण्डल को उदयपुर भेजने का निर्णय किया गया। मद्रास वासियों का चिरसंचित स्वप्न साकार हुआ। सन् 1968 में अणुव्रत अनुशास्ता आचार्यश्री तुलसी का पावस प्रवास पाकर। तेरापंथ के इतिहास में प्रथम बार आचार्य का चातुर्मास पाकर मद्रास वासी मानो धन्य हो गए। परमाराध्य आचार्यप्रवर ने 33 श्रमण व 25 श्रमणी वृंद के साथ 5 जुलाई 1968 को नगर प्रवेश किया और पूरे महानगर में आध्यात्मिक पाथेय प्रदान कर लोगों में नैतिकता के प्रति नव-चेतना का संचार कर दिया।

श्रीमान् जसवन्तमल सेठिया जैसे विरल व्यक्तित्व जिन्होंने अपने जीवन में समाज और धर्मसंघ के लिए अन्यान्य सभी बातों को गौण कर दिया। गणाधिपति श्री तुलसी के शब्दों में वे अजातशत्रु थे। सेठियाजी की इन्हीं सब विशेषताओं का अंकन कर श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा, कलकत्ता ने चिदम्बरम मर्यादा महोत्सव पर उन्हें सर्वोच्च सम्मान 'समाजभूषण' से अलंकृत किया। समग्र तेरापंथ धर्मसंघ में श्रीयुत् छोगमलजी चोपड़ा के बाद श्री सेठियाजी दूसरे व्यक्ति थे जिन्हें इस सर्वोच्च अलंकरण से सम्मानित किया गया।

महासभा के आंचलिक कार्यक्रमों की योजना के तहत पहला दक्षिणांचल केन्द्र श्री प्रदीपकुमार सेठिया के संयोजन में चेन्नई में प्रारम्भ किया गया।

दिनांक 22.9.2004 को दक्षिण से गुरु दर्शनार्थ स्पेशल ट्रेन 'भिक्षु तेरापंथ एक्सप्रेस' का अभूतपूर्व आयोजन हुआ। 720 श्रद्धालुओं ने पूज्य प्रवरों के श्रीचरणों में 'गुरुदेव दक्षिण पधारो' स्वराभिव्यक्ति प्रस्तुत की। तत्कालीन सभा अध्यक्ष श्री घीसूलाल बोहरा के अथक प्रयासों से ही यह कार्य सम्भव हो सका।

चेन्नई महानगर व श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, चेन्नई के इतिहास में सुश्रावक श्री जैवंतराज सुराणा द्वारा संथारा व संथारे में मुनि दीक्षा की घटना अविस्मरणीय, अद्वितीय और हृदय को झंकृत करने वाली रही। पूज्यवरों की अनुज्ञा से मुनिश्री जिनेशकुमारजी ने दिनांक 19.3.2009 को तेरापंथ सभा भवन, तण्डियारपेट के पास 'मांडोत गार्डन' में संथारालीन श्रावक श्री जैवंतराज सुराणा को मुनि दीक्षा प्रदान कर मुनिश्री जिनभक्तजी के रूप में तेरापंथ इतिहास में स्वर्ण कलश अर्पित कर दिया।

श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, चेन्नई के गौरवपूर्ण साठ साल के उपलक्ष्य में दिनांक 26.1.2010 को हीरक जयन्ती समारोह मनाया।

पूज्यवरों ने महती कृपा कर जोजावर निवासी ताम्बरम चेन्नई प्रवासी मुमुक्षु सुनील बम्ब (मुनिश्री सुबोधकुमारजी) की मुनि दीक्षा चेन्नई में मुनिश्री जिनेशकुमारजी के कर कमलों व मुनिश्री धर्मेशकुमारजी की मंगलमयी उपस्थिति में देने की अनुज्ञा देकर चेन्नई ही नहीं अपितु सम्पूर्ण दक्षिणांचल पर महान कृपा दृष्टि की।

सन् 1968 में पूज्य गुरुदेव श्री तुलसी ने प्रथम बार चेन्नई में चातुर्मास किया था। उस चातुर्मास की स्वर्ण जयन्ती पर पूज्यप्रवर आचार्यश्री महाश्रमणजी ने महती कृपा कर सन् 2018 में अपना पवास प्रवास चेन्नई में फरमाया है। हम सभी गुरुदेव के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करते हैं।

50 वर्षों पश्चात् चेन्नई शहर में तेरापंथ के आचार्य का आगमन होगा। इस बात को लेकर सम्पूर्ण चेन्नई उत्साहित और प्रफुल्लित है। पवास प्रवास हेतु माधावरम स्थित जैन तेरापंथ नगर में तैयारियां गतिमान है। सम्पूर्ण चेन्नई का जैन श्रावक समाज आचार्यप्रवर के स्वागत हेतु पलक पावड़े बिछाए आतुरता से प्रतीक्षरत है।

श्रावक-श्राविकाओं को चेन्नई पावस प्रवास के दौरान पूज्यप्रवर की सन्निधि में दर्शन-सेवा-उपासना का पूर्ण लाभ मिले, इस बात का विशेष ध्यान रखा जा रहा है। आप सभी महानुभावों को इस ऐतिहासिक अवसर पर चेन्नई तेरापंथ समाज का भाव भरा आमंत्रण है।

निवेदक

आचार्यश्री महाश्रमण चतुर्मास प्रवास व्यवस्था समिति 2018 चेन्नई (तमिलनाडु)

बी. रमेशचंद बोहरा
महामंत्री
मो. 09840344333

धरमचंद लुंकड़
अध्यक्ष
मो. 09840166699

आचार्य महाश्रमण

जन्म : वि.सं. 2019, वैशाख शुक्ला नवमी (13 मई 1962) सरदारशहर

पिता : स्व. श्री झूमरमलजी दूगड़

माता : स्व. श्रीमती नेमादेवी दूगड़

दीक्षा : वि.सं. 2031 वैशाख शुक्ला चतुर्दशी (5 मई 1974) सरदारशहर

अन्तरंग सहयोगी : वि.सं. 2042, माघ शुक्ला सप्तमी (16 फरवरी 1986) उदयपुर

साझपति : वि.सं. 2043, वैशाख शुक्ला चतुर्थी (13 मई 1986) ब्यावर

महाश्रमण पद : वि.सं. 2046, भाद्रव शुक्ला नवमी (9 सितम्बर 1989) लाडनूं

युवाचार्य पद : वि.सं. 2054, भाद्रव शुक्ला द्वादशी (14 सितम्बर 1997) गंगाशहर

आचार्य पदाभिषेक : वि.सं. 2067, द्वितीय वैशाख शुक्ला दशमी (23 मई 2010) सरदारशहर

महातपस्वी : वि.सं. 2064, भाद्रपद शुक्ला पंचमी (17 सितम्बर 2007) उदयपुर

शान्तिदूत : वि.सं. 2068, ज्येष्ठ कृष्णा द्वादशी (29 मई 2011) उदयपुर

श्रमण संस्कृति उद्गाता : वि.सं. 2069, आश्विन कृष्णा चतुर्दशी (14 अक्टूबर 2012) जसोल

प्रकाशित पुस्तकें : आओ हम जीना सीखें, दुःख मुक्ति का मार्ग, क्या कहता है जैन वाङ्मय, संवाद भगवान से (भाग-1,2), शिक्षा सुधा, शेमुषी, मेरे गीत, धम्मो मंगलमुक्किट्ठं, महात्मा महाप्रज्ञ, सुखी बनो, संपन्न बनो, विजयी बनो, रोज की एक सलाह, शिलान्यास धर्म का, अदृश्य हो गया महासूर्य, निर्वाण का मार्ग, परमसुख का पथ, 18 पाप।

आचार्यश्री महाश्रमण की प्रमुख कृतियां

दुःख मुक्ति का मार्ग

आचार्यश्री महाश्रमण ने इस पुस्तक में साधना के रहस्यों को प्रस्तुत किया है। सुख, शांति और आनंद की प्राप्ति में यह कृति मार्गदर्शक की भूमिका अदा करती है।

क्या कहता है जैन वाङ्मय

इस पुस्तक में जैन शास्त्रों में उपलब्ध सफलता के सूत्रों में से चुनिंदा मोतियों को पिरोया गया है। प्रस्तुत कृति आचार्यश्री महाश्रमण के हृदयस्पर्शी प्रवचनों का महत्त्वपूर्ण संग्रह है।

आओ हम जीना सीखें

जीता हर कोई है, किन्तु कलापूर्ण जीना कोई-कोई जानता है। प्रस्तुत पुस्तक में आचार्यश्री महाश्रमण ने कलात्मक जीवन के सूत्रों को प्रकाशित करते हुए जीवन की प्रत्येक क्रिया का व्यवस्थित प्रशिक्षण दिया है। वस्तुतः यह कृति 'कैसे जीएं' इस प्रश्न का सटीक समाधान है।

संवाद भगवान से

प्रतिष्ठित जैनागम उत्तराध्ययन के २९वें अध्ययन पर आधारित इस पुस्तक में भगवान महावीर और उनके प्रमुख शिष्य गौतम के रोचक संवाद के माध्यम से मन में संशय पैदा करने वाले प्रश्नों को विस्तृत रूप में समाहित किया गया है। यह कृति दो भागों में उपलब्ध है।

महात्मा महाप्रज्ञ

युगप्रधान आचार्यश्री महाप्रज्ञ तेरापंथ के आचार्य, अनुशास्ता, साहित्यकार और प्रवचनकार थे। इन सबसे पहले वे एक सन्त थे, महात्मा थे, उनकी आत्मा में महानता थी। उनके उत्तराधिकारी आचार्यश्री महाश्रमण ने उन्हें नजदीकी से देखा और जाना। प्रस्तुत पुस्तक में श्री महाप्रज्ञ के नौ दशकों के इतिहास और रहस्यों को उजागर किया गया है।

रोज की एक सलाह

लघु आकार में प्रस्तुत यह पुस्तक 'गागर में सागर' उक्ति को चरितार्थ करती है। आचार्य महाश्रमण द्वारा सूक्तियों में दी गई 'रोज की एक सलाह' हर व्यक्ति के लिए प्रतिदिन की पर्याप्त खुराक है। सदा साथ रखी जा सकने वाली यह कृति न केवल सफलता की प्राप्ति में सहायक है, अपितु व्यक्तिगत समस्याओं के समाधान में भी इसकी उपयोगिता असंदिग्ध है।

१. सुखी बनो २. सम्पन्न बनो ३. विजयी बनो

आचार्य महाश्रमण ने प्रस्तुत तीनों पुस्तकों में श्रीमद्भगवद्गीता और उत्तराध्ययन की तुलनात्मक विवेचना करते हुए साधक का सुन्दर पथदर्शन किया है। तीन भागों में उपलब्ध यह ग्रन्थमाला जहां दो महनीय ग्रन्थों को युगीन रूप में प्रस्तुति देती है, वहीं अध्यात्मरसिकों के लिए पोषक का कार्य भी करती है।

धम्मो मंगलमुक्किट्ठं

आचार्यश्री महाश्रमण की प्रस्तुत पुस्तक में जैन तत्त्वज्ञान, साधना के प्रयोगों, महापुरुषों और उनके अवदानों आदि विविध विषयों से संबद्ध उपयोगी और प्रेरणास्पद सामग्री संजोई गई है।

शिलान्यास धर्म का

धर्म का आदि बिन्दु है–सम्यक्त्व। आचार्य महाश्रमण की प्रस्तुत कृति सम्यक्त्व, उसके लक्षण, दूषण, भूषण तथा देव, गुरु, धर्म आदि विषयों पर आधारित प्रवचनों और प्रश्नोत्तरों का संग्रह है। जैन अनुयायियों की आस्था के दृढ़ीकरण में यह कृति सहायक की भूमिका अदा करती है।

निर्वाण का मार्ग

अध्यात्म साधना का अन्तिम लक्ष्य है–निर्वाण। भगवान् महावीर और गौतम बुद्ध ने वर्षों तक साधना कर निर्वाण के रहस्यों को प्राप्त किया और जनता को दिखाया–निर्वाण का मार्ग। जैनागम उत्तराध्ययन और बौद्धग्रंथ धम्मपद पर आधारित आचार्यश्री महाश्रमण की प्रलम्ब प्रवचनमाला के चुनिंदा मोतियों से निर्मित इस पुस्तक को पढ़कर अध्यात्मरसिक व्यक्ति परम सुख का पथ प्राप्त कर सकता है।

• प्राप्ति स्थान •

जैन विश्व भारती, लाडनूं–8742004849, आचार्य महाश्रमण प्रवास स्थल–9928393902,

ई-मेल : **books@jvbharati.org, Books are available online at : https://books.jvbharati.org**

नवाह्निक आध्यात्मिक अनुष्ठान

दुनिया में शक्ति का महत्त्व होता है। शक्तिहीन व्यक्ति अपने आप में रिक्तता अनुभव करता है। कभी-कभी शक्तिविहीन मनुष्य अपने आपको दयनीय और असहाय भी अनुभव करता है। सबसे बड़ी शक्ति आध्यात्मिक शक्ति होती है। अन्य शक्तियों का भी अपना-अपना महत्त्व होता है।

गुरुदेवश्री तुलसी और आचार्यश्री महाप्रज्ञ ने नवाह्निक आध्यात्मिक अनुष्ठान का एक नया उपक्रम प्रारंभ किया। आचार्यश्री महाश्रमण के निर्देशन में वह उसी रूप में विधिवत् चल रहा है। उसका उद्देश्य है—आत्मशुद्धि और ऊर्जा का विकास। उसकी कालावधि आश्विन शुक्ला प्रथमा से प्रारंभ कर निरंतर नौ दिनों की निर्धारित की गई है। चैत्र शुक्ला प्रथमा से प्रारंभ कर निरंतर नौ दिनों की कालावधि में भी इसकी आराधना की जा सकती है। संपूर्ण विधि एवं समय सारिणी इस प्रकार निश्चित की गई है–

प्रातः ९.३० से १०.००

'चंदेसु निम्मलयरा आइच्चेसु अहियं पयासयरा
सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु' – का पांच बार पाठ
चंदेसु निम्मलयरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु – का तेरह बार पाठ
आइच्चेसु अहियं पयासयरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु—का तेरह बार पाठ
सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु – का तेरह बार पाठ
आरोग्ग बोहिलाभं, समाहिवरमुत्तमं दिंतु – का तेरह बार पाठ
सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु – का इक्कीस बार पाठ
'चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा
सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु।' – का पांच बार पाठ

ॐ ह्रीं क्लीं क्ष्वीं

धम्मो मंगलमुक्किट्ठं, अहिंसा संजमो तवो।
देवा वि तं नमंसंति, जस्स धम्मे सया मणो ॥१॥
जहा दुमस्स पुप्फेसु, भमरो आवियइ रसं।
न य पुप्फं किलामेइ, सो य पीणेइ अप्पयं ॥२॥
एमेए समणा मुत्ता, जे लोए संति साहुणो।
विहंगमा व पुप्फेसु, दाणभत्तेसणे रया ॥३॥
वयं च वित्तिं लब्भामो, न य कोई उवहम्मई।
अहागडेसु रीयंति, पुप्फेसु भमरा जहा ॥४॥
महुकारसमा बुद्धा, जे भवंति अणिस्सिया।
नाणापिंडरया दंता, तेण वुच्चंति साहुणो ॥५॥– का सात बार पाठ

प्रातः १०.०० से १०.३०—आध्यात्मिक प्रवचन

मध्याह्न २.३० से ३.१५ आगम पाठ का स्वाध्याय।

(दसवेआलियं, उत्तरज्झयणाणि आदि के मूल पाठ का स्पष्ट व शुद्ध उच्चारण एवं व्याख्या)

पश्चिम रात्रि—४.४५ से ५.३०

उवसग्गहरं पासं (उपसर्गहर स्तोत्र) आदि पांच श्लोक एवं 'ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं नमिऊण' का नौ बार पाठ। फिर 'विघनहरण' का जप।

उपसर्गहर स्तोत्र

उवसग्गहरं पासं, पासं वंदामि कम्मघणमुक्कं।
विसहर-विसनिन्नासं, मंगल-कल्लाण आवासं ॥१॥
विसहर-फुलिंग-मंतं, कंठे धारेइ जो सया मणुओ।
तस्स गह-रोग-मारी, दुट्ठ जरा जंति उवसामं ॥२॥
चिट्ठउ दूरे मंतो, तुज्झ पणामो वि बहुफलो होइ।
नरतिरिएसु वि जीवा, पावंति न दुक्ख-दोहग्गं ॥३॥
तुह सम्मत्ते लद्धे, चिन्तामणि-कप्पपायपब्भहिए।
पावंति अविग्घेणं, जीवा अयरामरं ठाणं ॥४॥
इह संथुओ महायस! भत्तिब्भर-निब्भरेण हियएण।
ता देव! दिज्ज बोहिं, भवे भवे पास जिणचंद ॥५॥

ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं नमिऊण पास
विसहर वसह जिण फुल्लिंग ह्रीं श्रीं नमः ॥

विघनहरण

विघनहरण मंगलकरण, स्वाम भिक्षु रो नाम।
गुण ओलख सुमिरण करै, सरै अचिंत्या काम॥

जप और आगम-स्वाध्याय के साथ तप का योग भी आवश्यक माना गया है। तप में एकासन, आयंबिल, षड्विगय वर्जन, पंच विगय वर्जन और दस प्रत्याख्यान में से किसी एक तप की आराधना इस अवधि में की जाए। व्यक्तिगत इच्छा के अनुसार नौ दिनों तक एक ही तप अथवा वैकल्पिक तप की आराधना की जा सकती है।

निर्धारित कालावधि और करणीय क्रम को यथावत् रखते हुए स्थानीय सुविधानुसार समय में परिवर्तन भी किया जा सकता है। साधु-साध्वियों की भांति श्रावक-श्राविकाएं भी इसमें संभागी बन सकते हैं। संभागी श्रावक-श्राविकाओं के लिए निम्नांकित नियम भी अनुष्ठान काल में पालनीय हैं—

ब्रह्मचर्य का पालन, रात्रि भोजन-विरमण (चौविहार/तिविहार), जमीकंद का वर्जन।

अनुष्ठान का प्रारंभ प्रथम दिन प्रातः ९.३० से यानी प्रातःकालीन सत्र में किया जाए एवं अनुष्ठान का समापन रात्रि के ५.३० बजे यानी रात्रिकालीन सत्र में किया जाए।

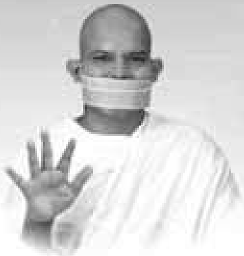

संघ संग चलें

चेन्नई चातुर्मास 2018

॥ अर्हम् ॥

शान्तिदूत महातपस्वी **आचार्य श्री महाश्रमणजी**

का सन् 2018 का पावस प्रवास चेन्नै में

तमिलनाडु प्रवेश - 1 जुलाई 2018 - आरम्बाक्कम

तमिलनाडु प्रवेश समारोह - 5 जुलाई 2018 - मीन्जूर

चेन्नै प्रवेश - 6 जुलाई 2018 - मनली

नागरिक अभिनन्दन - 8 जुलाई 2018 - नेहरू स्टेडियम

चातुर्मासिक प्रवेश - 21 जुलाई 2018 - माधावरम

समस्त धर्मानुरागी बंधुओं को भाव भरा

॥ आमंत्रण ॥

आचार्य श्री महाश्रमण चातुर्मास प्रवास व्यवस्था समिति, चेन्नै

धरमचन्द लुंकड़	बी. रमेशचन्द बोहरा	ललित दूगड़
अध्यक्ष	महामंत्री	कोषाध्यक्ष

कुटीर बुकिंग हेतु सम्पर्क करें

पुखराज बड़ोला	रमेश खटेड़
मो. 94440 76737	मो. 98400 85004

चेन्नई में संघ संग चलें

जैन विश्व भारती, लाडनूं में संचालित

सेवाभावी आयुर्वेदिक रसायनशाला

शास्त्रीय विधान से निर्मित जीएमपी प्रमाणित विश्वसनीय विशिष्ट आयुर्वेदिक औषधियां

SEVABHAVI
DEDICATED TO AYURVED

क्र. सं.	औषध का नाम	उपयोग	वजन (ग्राम)	मूल्य
01.	सेवाभावी सुपर्वप्राश	शक्तिवर्धक व स्फूर्तिदायक	1000	890/-
	(मकरध्वज, केशर, चांदी भस्म युक्त)	पौष्टिक योग	500	480/-
02.	सेवाभावी स्पेशलप्राश	शक्तिवर्धक व स्फूर्तिदायक	1000	680/-
	(केशर, रससिंदूर, पौष्टिक योग चांदी भस्म युक्त)		500	370/-
03.	दंतफ्रेश टूथपेस्ट	दंत रोगों में उपयोगी	100	99/-
04.	सेवाभावी प्रतिदिनम् चूर्ण	कब्ज को दूर करने में उपयोगी	100	60/-
			500	270/-
05.	सेवाभावी अग्निसंदीपन चूर्ण	पाचक एवं गैस निवारक	100	130/-
			500	590/-
06.	सेवाभावी तुलसीप्रभावटी	मधुमेह (शुगर) में उपयोगी	30	170/-
			100	540/-
07.	सेवाभावी अर्जुनघनसत्व वटी	रक्तचाप व हृदयरोग में उपयोगी	10	40/-
			100	360/-

08.	सेवाभावी दिव्यतेज वटी	जुखाम, बुखार आदि में उपयोगी	05	80/-
09.	सेवाभावी कंठसुधाकर वटी	कफ, खांसी आदि में उपयोगी	10	50/-
			100	450/-
10.	सेवाभावी अमृतम् पिल्स	मुख शोधक	05	80/-
11.	सेवाभावी सितोपलादि योग	पुरानी खांसी, श्वास, फेफड़ों के रोग में उपयोगी	30 पुड़िया	270/-

: नोट :

✦ औषधियां चिकित्सक की सलाहनुसार सेवन करें।

✦ सेवाभावी आयुर्वेदिक रसायनशाला द्वारा निर्मित उक्त औषधियों के अतिरिक्त लगभग 150 प्रकार की अन्य औषधियां पूर्ण शास्त्रीय विधि से प्रामाणिक रूप में तैयार की जाती है।

औषधियां मंगवाने के लिए संपर्क करें

सेवाभावी आयुर्वेदिक रसायनशाला
जैन विश्व भारती परिसर, पोस्ट : लाडनूं-341306
जिला : नागौर (राजस्थान)
संपर्क : 01581-226969, 97849-31457
Email : contact@sevabhaviayurveda.com
www.sevabhaviayurveda.com

महेन्द्रा आयुर्वेद सेन्टर, बैंगलोर , 94820-82782 ❊ महासभा भवन, कोलकाता, 98300-50188 ❊ आचार्य महाश्रमण प्रवास स्थल (चल औषधि विक्रय केन्द्र) 99283-93902

लक्ष्य का निर्धारण करो। लक्ष्य स्पष्ट होने पर दिशा निश्चित हो जाती है और दृष्टि स्पष्ट। सफलता की पृष्ठभूमि तैयार हो जाती है।

-आचार्य महाप्रज्ञ

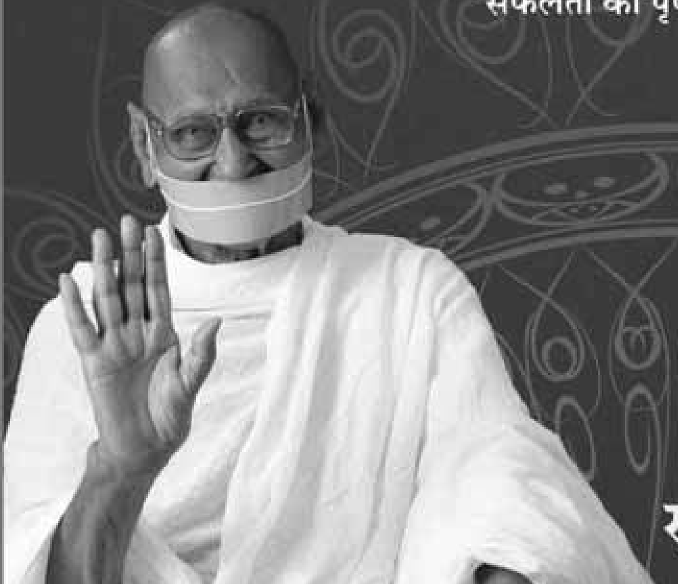

श्रद्धावनत

ORBIT GROUP

BUILDING RELATIONSHIPS

रतनलाल बसन्त कुमार पारख

(चुरु) कोलकाता

विषय-प्रवेश

कोष्ठक विवरण

जय-तिथि-पत्रक का पहला कोष्ठक अंग्रेजी दिनांक का है और फिर वार का है। उसके बाद तिथि का कोष्ठक है। उसके आगे के दो कोष्ठक में क्रमशः इतने बजे व मिनट तक का संकेत है। छठा कोष्ठक नक्षत्र का है। सातवें व आठवें में नक्षत्र के कितने बजे व मिनट तक का सूचन है। नौवें व दसवें में क्रमशः सूर्योदय व सूर्यास्त कितने बजे होता है इसका निदर्शन है। सूर्योदय व सूर्यास्त लाडनूं को केन्द्र मानकर स्टेण्डर्ड टाइम में दिया गया है। ग्यारहवें कोष्ठक में प्रथम प्रहर कितने बजे आती है तथा बारहवें कोष्ठक में दिन का एक प्रहर कितने घंटे व मिनट का होता है, इसका दिग्दर्शन है। तेरहवें कोष्ठक में चन्द्रमा तथा चौदहवें कोष्ठक में विशेष विवरण के अंतर्गत योग तथा भद्राकाल है। ये भी बजे व मिनट के क्रम से हैं।

तिथि-पत्रक में बजे-मिनट रेलवे समय-सारिणी पद्धति से दिये गये हैं। मध्य रात्रि में १२ बजे से रेलवे समय सारिणी के अनुसार २४ बजे होता है, के बाद ०० समय से शुरू कर २४ बजे तक २४ घंटे मानते हुए चलता है। जैसे—चैत्र शुक्ला द्वादशी २३/२५ बजे है। इसका तात्पर्य है—यह तिथि उस दिन २३ बजकर २५ मिनट तक है। अर्थात् रात्रि में ११ बजकर २५ मिनट तक है। चैत्र शुक्ला द्वितीया १७/५४ बजे है। इसका अर्थ है यह तिथि उस दिन सायं ५ बजकर ५४ मिनट तक रहेगी। इसी तरह चैत्र शुक्ला ८/९ को आर्द्रा नक्षत्र १४/२२ बजे है। अर्थात् उस दिन दोपहर २ बजकर २२ मिनट तक है।

तिथि व नक्षत्र के बजे-मिनट बराबर में हैं। वे बजे, मिनट से स्पष्ट हैं। चंद्रमा के आगे संख्या ऊपर नीचे हैं। चंद्रमा के ऊपर वाली संख्या बजे व नीचे वाली मिनट है। जैसे—चैत्र शुक्ला दशमी को चंद्रमा कर्क राशि में $\frac{०७}{१८}$ अर्थात् प्रातः ७ बजकर १८ मिनट पर कर्क राशि में प्रवेश करेगा। चंद्रमा के लिए इतना विशेष है कि उसका प्रवेश काल दिया है। विशेष विवरण स्पष्ट है। इसमें योग व अन्य के आगे संख्या बराबर में हैं।

तिथि, नक्षत्र आदि के साथ जहां शून्य (०) अंकित है, वह उस दिन 'पूरे दिन और पूरी रात' है अर्थात् वह तिथि या नक्षत्र उस दिन सूर्योदय से पूर्व शुरू हो गया और दूसरे दिन सूर्योदय होने के बाद तक रहा। वह समय अगले दिन की पंक्ति में है। जैसे—बैशाख कृष्णा तृतीया को विशाखा नक्षत्र के आगे (०) अंकित है जिससे यह नक्षत्र पूरे दिन-रात है। बैशाख कृष्णा दशमी (प्रथम) के आगे (०) अंकित है अर्थात् यह तिथि पूरे दिन-रात है।

सूर्यास्त से लेकर सूर्योदय होने के ठीक पहले तक का समय "रात्रि समय" और उसके बाद "दिवा समय" होता है।

विशेष विवरण के कोष्ठक में प्रदत्त योगों के सांकेतिक अक्षरों में पूर्ण नाम इस प्रकार हैं :—

- र.—रवि योग (शुभ व कुयोगनाशक)
- अ.—अमृत सिद्धि योग (शुभ)
- राज.—राजयोग (शुभ)
- कु.—कुमार योग (शुभ)

- सि.—सिद्धि योग (शुभ)
- मृ.—मृत्यु योग (अशुभ)
- व्या.—व्याघात योग (अशुभ)
- वै.—वैधृति (अशुभ)
- व्य.—व्यतिपात योग (अशुभ)
- ज्वा.—ज्वालामुखी योग(अशुभ)
- पं.—पंचक (अशुभ) घास, लकड़ी एकत्र करने, घर की छत बनाने, दक्षिण यात्रा करने में वर्जित।
- भ.—भद्राकाल (शुभ-अशुभ दोनों)
- यम.—यमघंट योग (अशुभ)

नोट : शास्त्रीय मान्यता है कि मध्याह्न के पश्चात् अशुभ योगों का दोष नहीं रहता।

भद्रा-काल

श्रेष्ठ कार्यों में भद्रा-काल होना वर्जित है, किन्तु शास्त्रकारों ने भद्रा को शुभ भी माना है, जो इस प्रकार है—मेष, वृष, मिथुन और वृश्चिक के चंद्रमा में भद्रा का वास स्वर्ग में रहता है। यह भद्राकाल शुभ और ग्राह्य है।

कन्या, तुला, धनु और मकर के चन्द्रमा में भद्रा का वास नागलोक (पाताल) में रहता है। यह भद्राकाल भी लक्ष्मीदायक-धनदायक होने से शुभ है।

कुंभ, मीन, कर्क और सिंह के चंद्रमा में भद्रा का वास मृत्युलोक में होता है। यह अशुभ है, इसलिए शुभ कार्यों में सर्वथा वर्जनीय है।

भद्राकाल समय-विशेष के साथ शुभ भी बताया है।

शुक्ल पक्ष की भद्रा वृश्चिक संज्ञक और कृष्ण पक्ष की भद्रा सर्वसंज्ञक है। मतान्तर से रात्रि की भद्रा वृश्चिक संज्ञक और दिन की भद्रा सर्वसंज्ञक है। सर्वसंज्ञक भद्रा के मुख की पांच घटी (२ घंटा) और वृश्चिक संज्ञक भद्रा की पुच्छ की तीन घटी (१ घंटा १२ मि.) शुभ कार्य में त्याज्य है।

तिथि-पत्रक के विवरण पृष्ठों के बाद कोलकाता, दिल्ली, मुंबई, चेन्नई, बैंगलोर व जोधपुर—इन छह शहरों के महीने की पहली व पन्द्रहवीं तारीख के सूर्योदय व सूर्यास्त का समय दिया गया है।

समय-सारिणी के बाद नक्षत्र के नाम का अक्षर और राशि की तालिका है। फिर राशि स्वामी एवं गुरु दर्शन के नक्षत्र हैं। फिर घातचक्र है। इसके बाद यात्रा में चंद्र विचार, योगिनी विचार चक्र, दिशाशूल विचार चक्र तथा काल-राहू विचार चक्र है। इनसे अगले पृष्ठ पर सुयोग-कुयोग चक्र है। अंतिम पृष्ठ पर पोरसी प्रमाण, राहुकाल, दिन एवं रात्रि के चौघड़िये हैं।

चौघड़िया-अवलोकन

दिन का चौघड़िया सूर्योदय से प्रारंभ होता है तथा रात्रि का चौघड़िया सूर्यास्त से प्रारंभ होता है। एक दिन में आठ चौघड़िये व रात्रि में आठ चौघड़िये होते हैं।

चौघड़िया का काल दिन-रात छोटे-बड़े होने के अनुसार न्यूनाधिक होता रहता है। प्रत्येक दिन के सूर्योदय से सूर्यास्त तक की समयावधि को आठ से विभाजित करने पर जो एक भाग प्राप्त होगा वह उस दिन में एक चौघड़िया का मान होगा, अर्थात् दिन की समयावधि का आठवां हिस्सा एक चौघड़िया होता है। इसी प्रकार सूर्यास्त से अगले सूर्योदय तक की समयावधि को आठ से विभाजित करने से प्राप्त होने वाला एक हिस्सा रात्रि के चौघड़िये का मान होता है। अर्थात् रात्रि की समयावधि का आठवां हिस्सा रात्रि का एक चौघड़िया होता है।

चौघड़िये में उद्वेग, काल और रोग—ये तीन अशुभ हैं। शेष तीन लाभ,

अमृत और शुभ–ये चौघड़िये श्रेष्ठ होते हैं। शुक्र के अर्थात् चल (चंचल) वेला के चौघड़िये को भी अच्छा मानते हैं। श्रेष्ठ चौघड़िये में सभी कार्य करने प्रशस्त हैं। अमृत का चौघड़िया सभी शुभ कार्यों में अत्युत्तम है।

इस तिथि-पत्रक में लाडनूं को केन्द्र मानकर सूर्योदय एवं सूर्यास्त दिया गया है। उससे पूर्व दिशा वाले स्थानों में प्रति तीस किलोमीटर पर एक-एक मिनट पहले सूर्योदय व सूर्यास्त होगा। उससे पश्चिम दिशा वाले स्थानों में प्रति तीस किलोमीटर पर एक-एक मिनट बाद में सूर्योदय व सूर्यास्त होगा। लाडनूं अक्षांश २७°-४०', उत्तर पर है। रेखांश ७४°-२४' पूर्व है। अयनांश २३° १७'-१८' रेखांतर ३२ मिनट २० सैकिण्ड है। बेलान्तर+२ मिनट ३२ सैकिण्ड है। पलभा ६-१० है।

धार्मिक उपासना में पर्व तिथियों का अपना महत्त्व होता है। पक्खी आदि का प्रतिक्रमण तिथि के आधार पर करना पड़ता है। पहले इसे 'पक्खी' के नाम से संत तैयार करते थे। उसे हर सिंघाड़े (ग्रुप) को एक-एक दे दिया जाता था, बाद में 'लघु-पंचांग' के नाम से श्री हनूतमलजी सुराणा (चूरू) छपाने लग गये। परमाराध्य गुरुदेव व आचार्यवर की दृष्टि से पिछले कई वर्षों से इसका संपादन संतों द्वारा होने लगा। 'लघु पंचांग' के बाद 'जय पंचांग' के रूप में सामने आया। सन् १९८४ से इसका संपादन मेरे द्वारा होने लगा। वर्तमान में यह **'जय-तिथि-पत्रक'** के नाम से प्रकाशित हो रहा है।

५ नवम्बर २०१७ — **मुनि सुमेरमल (लाडनूं)**

अणुविभा भवन-जयपुर

विशेष अवगति

वर्ष के दिन–इस वर्ष मास-१३, पक्ष-२६, तिथि क्षय-१९, तिथि वृद्धि-१३, कुल-दिन ३८४

गाज बीज की अस्वाध्याय नहीं–ज्येष्ठ (द्वितीय) शुक्ला १०, शुक्रवार, दिनांक २२ जून २०१८ से आश्विन शुक्ला १५, बुधवार, दिनांक २४ अक्टूबर २०१८ तक।

चंद्र ग्रहण–आषाढ़ शुक्ला १५, शुक्रवार, दिनांक २७/२८ जुलाई २०१८

सूर्य ग्रहण–भारत में दिखाई नहीं देगा।

मलमास–(i) वर्ष प्रारंभ से वैशाख कृष्णा १३, शनिवार, दिनांक १४ अप्रैल २०१८ तक रहेगा। यह पिछले वर्ष चैत्र कृष्णा १२, बुधवार, दिनांक १४ मार्च २०१८ से प्रारंभ हो चुका था।

(ii) मार्गशीर्ष शुक्ला ९ (प्रथम), शनिवार, दिनांक १६ दिसम्बर २०१८ से प्रारंभ, पौष शुक्ला ८, सोमवार, दिनांक १४ जनवरी २०१९ तक।

(iii) फाल्गुन शुक्ला ८, गुरुवार, दिनांक १४ मार्च २०१९ से प्रारंभ, अगले वर्ष में चलेगा।

तारा–(१) गुरु अस्त–कार्तिक शुक्ला ७ (द्वितीय), गुरुवार, दिनांक १५ नवम्बर २०१८ को प्रारंभ, मार्गशीर्ष कृष्णा १४, गुरुवार, दिनांक ६ दिसम्बर २०१८ को संपन्न।

(२) शुक्र अस्त–आश्विन शुक्ला ९, गुरुवार, दिनांक १८ अक्टूबर २०१८ को प्रारम्भ, कार्तिक कृष्णा ५, सोमवार, दिनांक २९ अक्टूबर २०१८ को सम्पन्न।

नोट–ग्रहण, मलमास तथा गुरु, शुक्र के अस्तकाल में विशिष्ट शुभ कार्य वर्जनीय हैं।

विशेष ज्ञातव्य

(क) विशेष मुहूर्त्त

(१) अभिजित मुहूर्त्त, (२) रवियोग, (३) अमृत का चौघड़िया

(४) दीपावली का प्रदोषकाल (सूर्यास्त से दो घड़ी-४८ मिनट तक)

(५) पुष्य नक्षत्र के साथ रविवार या गुरुवार सदा श्रेष्ठ माना जाता है। गुरु-पुष्य विवाह में वर्जित है।

(ख) यात्रा के लिए आवश्यक

(१) यात्रा-कर्ता की जन्म-राशि से यात्रा दिन का चंद्रमा चौथे, आठवें में स्थित न हो। पंचांग में घातचक्र में दिये गये चंद्रमा को भी टालें। (जन्म-राशि ज्ञात न होने से प्रचलित नाम राशि)।

(२) यात्रा के समय सम्मुख चंद्रमा हो तो सब दोष नष्ट माने जाते हैं। पूर्व दिशा में जाने के लिए मेष, सिंह, धन का चंद्रमा, पश्चिम में मिथुन, तुला और कुंभ का, दक्षिण में वृष, कन्या, मकर का और उत्तर में कर्क, वृश्चिक और मीन का चंद्रमा सम्मुख रहता है। दाहिना चंद्रमा भी शुभ है।

(३) यात्रा-योग न मिलने पर अमृत का चौघड़िया अथवा अभिजित मुहूर्त सदैव ग्राह्य है। बुधवार को अभिजित शुभ नहीं।

(४) राहू काल-कुवेला का समय वर्जनीय है।

(५) मृत्यु योग आदि अशुभ योग वर्जनीय है।

(ग) यात्रा के लिए अन्य ज्ञातव्य

(१) सोमवार और शनिवार को पूर्व में, रविवार और शुक्रवार को पश्चिम में, मंगलवार और बुधवार को उत्तर में तथा गुरुवार को दक्षिण में यात्रा न करें, क्योंकि दिशाशूल रहता है।

(२) उषाकाल में पूर्व में, गोधूलिकाल में पश्चिम में, मध्याह्न में दक्षिण में तथा मध्य रात्रि में उत्तर में यात्रा न करें, क्योंकि समयशूल रहता है।

(३) ज्येष्ठा नक्षत्र में पूर्व को, पूर्वाभाद्रपद में दक्षिण को, रोहिणी में पश्चिम को तथा उत्तराफाल्गुनी में उत्तर को यात्रा न करें, क्योंकि नक्षत्र-शूल रहता है।

(४) धनिष्ठा का उत्तरार्ध, शतभिषा, पूर्वाभाद्रपद, उत्तराभाद्रपद, रेवती को पंचक कहते हैं। इन दिनों में दक्षिण की ओर यात्रा वर्जनीय है।

(५) तिथियां ४,६,८,९,१२,१४,३० और शुक्ल पक्ष की एकम यात्रा के लिए शुभ नहीं है।

(६) भरणी, कृतिका, आर्द्रा, आश्लेषा, मघा, चित्रा, स्वाति और विशाखा नक्षत्र यात्रा के लिए शुभ नहीं है।

(७) अश्विनी, मृगशिरा, पुनर्वसु, पुष्य, हस्त, अनुराधा, श्रवण, धनिष्ठा, रेवती यात्रा में विशेष शुभ नक्षत्र माने जाते हैं।

(८) उत्तर में २,१०; दक्षिण में ५,१३; पूर्व में १,९; पश्चिम में ६,१४ तिथियों में योगिनी रहती है। योगिनी के सामने या दाहिने होने पर यात्रा वर्जनीय है।

(९) पूर्व में शनिवार को, पश्चिम में मंगलवार को, उत्तर में रविवार को

तथा दक्षिण में गुरुवार को यात्रा का निषेध है क्योंकि काल-राहू सम्मुख रहता है।

(१०) शनिवार और बुधवार को ईशान कोण (पूर्वोत्तर) में, मंगलवार को वायव्य (पश्चिमोत्तर) में, रविवार, शुक्रवार को नैऋत्य (दक्षिण-पश्चिम) में तथा सोमवार, गुरुवार को आग्नेय (पूर्व-दक्षिण) में विदिशाशूल है अतः यात्रा में वर्जनीय है।

दिशा-शूल परिहार–रवि को तांबूल, सोम को चंदन, मंगल को मट्ठा, बुध को पुष्प, गुरु को दही, शुक्र को घृत व शनि को तिल खाकर या देकर यात्रा करने में दिक्शूल-दोष मिटता है।

शकुन–यात्रा के समय लोहा, तेल, घास, मट्ठा, पत्थर, लकड़ी, बिलाव मिले तो अशुभ व दही, चावल, चांदी का घड़ा, पुष्प, हंस तथा मुर्दा शुभ है।

सुयोग के सामने सभी कुयोगों का नाश

इक्कस्स भए पंचाणणस्स, भज्जंति गय सय सहस्सा।
तह रवि जोग पणट्ठा, गयणम्मि गहा न दीसंति ।। यति वल्लभ ।।

एक शेर के सामने लाख हाथी भी भाग जाते हैं। एक सूर्य के आने पर आकाश में एक भी ग्रह नहीं दीखता। इसी तरह रवि योग होने पर अन्य अप्योग स्वतः अप्रभावी बन जाते हैं।

रवियोगे राजयोगे, कुमारयोगे असुद्ध दिहए वि।
जं सुह कज्जं कीरइ, तं सव्वं बहुफलं होइ ।। यतिवल्लभ ।।

अशुभ दिन में भी रवियोग, राजयोग व कुमारयोग होने पर जो भी शुभ कार्य किया जाये तो वह बहुत फलदायी होता है।

सिद्धियोगः कुयोगश्च, जायेतां युगपद्यदि।
कुयोगं तत्र निर्जित्य, सिद्धि योगो विजृम्भते ।। आरंभ सिद्धि ।।

सिद्धियोग व कुयोग यदि एक साथ हो तो कुयोग का फल नष्ट हो जाता है।

(घ) यात्रा-निवृत्ति पर प्रवेश मुहूर्त्त

शुभ नक्षत्र–अनु., चि., मृ., तीनों उत्तरा, रो., पुष्य, ह., ध.।

शुभ वार–सोम, बुध, गुरु, शुक्र, शनि।

आजकल नक्षत्र चंद्रमा के अनुकूल होने पर रवि को भी प्रवेश करते हैं।

शुभ-तिथि–२,३,५,७,१०,११,१३,१५।

नोट : एक ही दिन में यात्रा और प्रवेश हो तो मात्र प्रवेश देखा जाए।

(च) दीक्षा-ग्रहण-मुहूर्त्त

शुभ मास–वैशाख, श्रावण, आश्विन, कार्तिक, मार्गशीर्ष, माघ, फाल्गुन।

शुभ नक्षत्र–तीनों उत्तरा,अश्वि,रो.,रे.,अनु.,पुष्य.,स्वा.,पुन,श्र.ध., श.,मू.।

शुभ वार–रवि, सोम, बुध, गुरु, शुक्र।

शुभ तिथि–२,३,५,७,१०,११,१३ शुक्ल पक्ष में;२,३,५ कृष्ण पक्ष में।

तीर्थंकरों के दीक्षा-कल्याणक दिन, नक्षत्र भी लिए जा सकते हैं।

नोट : गुरु अस्त न हो, अधिक मास व तिथि न हो।

(छ) विद्यारंभ आदि

शुभ तिथि–२,३,५,६,१०,११,१२ कृष्ण पक्ष २,३,५।

शुभ वार–बुध, गुरु, शुक्र।

शुभ नक्षत्र–मृ, आर्द्रा, पुन, पुष्य, आश्ले, मृ, ह, चि, स्वा, अश्वि, श्र, ध, श, तीनों पूर्वा।

नोट : सोमवार, मंगलवार, शनिवार को आरंभ किया हुआ कोई भी साहित्य सृजन, शोध-कार्य आदि सफलता का सूचक नहीं होता। जैन विद्या का सत्रारंभ रवि और शुक्र को श्रेष्ठ रहता है।

साहित्य-सृजन में आर्द्रा, पुनः, पुष्य, रे, ह, चि, स्वा, अश्वि, श्र, अनु, नक्षत्र उत्तम माने गये हैं, बुध, गुरु, शुक्रवार श्रेष्ठ हैं।

(ज) जन्म के पाये

आर्द्रा नक्षत्र से १० नक्षत्र तक चांदी का, विशाखा नक्षत्र से ४ नक्षत्र तक लोहे का, पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र से ६ नक्षत्र तक तांबे का तथा उत्तराभाद्रपद नक्षत्र से ७ नक्षत्र तक सोने का पाया होता है।

प्रकारान्तर से जन्म-नक्षत्र के कालमान को समान चार भागों में बांट लिया जाता है। प्रथम भाग में जन्म होने से सोने का पाया, द्वितीय भाग में होने से चांदी का पाया, तृतीय भाग में होने से तांबे का पाया और चौथे भाग में होने से लोहे का पाया मानते हैं।

लग्न और चंद्रमा से भी पाया देखा जाता है। जन्म-कुंडली में लग्न से पहला, छठा, ग्यारहवां चंद्रमा पड़ा हो तो सोने का पाया, लग्न से दूसरा, पांचवां तथा नौवां चंद्रमा पड़ा हो तो चांदी का पाया, लग्न से तीसरा, सातवां व दसवां चंद्रमा पड़ा हो तो तांबे का पाया मानते हैं। जन्म से चौथा, आठवां व बारहवां चंद्रमा पड़ा हो तो लोहे का पाया मानते हैं। सोना एवं लोहे का पाया कष्टप्रद तथा चांदी व तांबे का पाया श्रेष्ठ माने जाते हैं।

अधिकांश ज्योतिषियों के मतानुसार लग्न और चंद्रमा से देखा गया पाया ही मान्य होता है। पूरे देश में प्रायः इसी का प्रचलन है।

(झ) वार संज्ञक नक्षत्र

आश्लेषा, मूल, ज्येष्ठा और मघा–ये वार संज्ञक नक्षत्र हैं। इन नक्षत्रों में जन्म होने पर जातक का जन्म वारों में हुआ माना जाता है। इनमें उत्पन्न बच्चों का प्रायः वही नक्षत्र आने से नामकरण होता है। ज्येष्ठा की अंतिम चार घड़ी तथा मूल की पहली चार घड़ी अभुक्त मूल मानी जाती है जो कष्टदायक है। मूल के प्रथम चरण में जन्म होने से पिता के लिए, दूसरे में माता के लिए, तीसरे में आर्थिक पक्ष के लिए अनिष्टकारक माना जाता है। मूल का चौथा चरण शुभ माना जाता है। इसके विपरीत आश्लेषा का प्रथम चरण शुभ माना जाता है। दूसरा धन के लिए, तीसरा माता के लिए तथा चौथा पिता के लिए अनिष्टकारक माना जाता है। इसी प्रकार ज्येष्ठा का प्रथम बड़े भाई के लिए, दूसरा छोटे भाई के लिए, तीसरा माता के लिए और चौथा स्वयं बालक के लिए अनिष्टकारक माना जाता है।

(ट) ग्रहण

सब जगह एक साथ ग्रहण नहीं लगता, इस कारण उसका समय नहीं दिया जाता है। जो ग्रहण जहां नहीं दीखता, उस ग्रहण की अस्वाध्याय आदि रखने की जरूरत नहीं है।

संवत् २०७५ के विशेष पर्व-दिवस

१.	२५९वां भिक्षु अभिनिष्क्रमण दिवस, रामनवमी	चैत्र शुक्ला-८/९	२५ मार्च २०१८	रविवार
२.	२६१७वीं महावीर जयन्ती (महावीर जन्म कल्याणक दिवस)	चैत्र शुक्ला-१३	२९ मार्च २०१८	गुरुवार
३.	आचार्यश्री महाप्रज्ञ का नवम महाप्रयाण दिवस	वैशाख कृष्णा-११	१२ अप्रैल २०१८	गुरुवार
४.	अक्षय तृतीया	वैशाख शुक्ला-०३	१८ अप्रैल २०१८	बुधवार
५.	आचार्यश्री महाश्रमण का ५७वां जन्म दिवस	वैशाख शुक्ला-०९	२४ अप्रैल २०१८	मंगलवार
६.	आचार्यश्री महाश्रमण का ९वां पदाभिषेक दिवस	वैशाख शुक्ला-१०	२५ अप्रैल २०१८	बुधवार
७.	भगवान् महावीर केवलज्ञान कल्याणक दिवस	वैशाख शुक्ला-१०	२५ अप्रैल २०१८	बुधवार
८.	आचार्यश्री महाश्रमण का ४५वां दीक्षा दिवस (युवा दिवस)	वैशाख शुक्ला-१४	२९ अप्रैल २०१८	रविवार
९.	आचार्यश्री तुलसी का २२वां महाप्रयाण दिवस	आषाढ़ कृष्णा-०३	०१ जुलाई २०१८	रविवार
१०.	आचार्यश्री महाप्रज्ञ का ९९वां जन्म दिवस (प्रज्ञा दिवस)	आषाढ़ कृष्णा-१३	११ जुलाई २०१८	बुधवार
११.	आचार्य भिक्षु का २९३वां जन्म दिवस एवं २६१वां (बोधि दिवस)	आषाढ़ शुक्ला-१३	२५ जुलाई २०१८	बुधवार
१२.	चातुर्मासिक पक्खी	आषाढ़ शुक्ला-१५	२७ जुलाई २०१८	शुक्रवार
१३.	२५९वां तेरापंथ स्थापना दिवस	आषाढ़ शुक्ला-१५	२७ जुलाई २०१८	शुक्रवार
१४.	७२वां स्वतंत्रता दिवस	श्रावण शुक्ला-५	१५ अगस्त २०१८	बुधवार
१५.	श्रीमज्जयाचार्य का १३७वां निर्वाण दिवस	भाद्रपद कृष्णा-१२/१३	०७ सितम्बर २०१८	शुक्रवार
१६.	पर्युषण प्रारंभ दिवस	भाद्रपद कृष्णा-१२/१३	०७ सितम्बर २०१८	शुक्रवार
१७.	पर्युषण पक्खी	भाद्रपद कृष्णा-१५	०९ सितम्बर २०१८	रविवार
१८.	संवत्सरी महापर्व	भाद्रपद शुक्ला-०५	१४ सितम्बर २०१८	शुक्रवार
१९.	आचार्यश्री कालूगणी का ८२वां स्वर्गवास दिवस	भाद्रपद शुक्ला-०६	१५ सितम्बर २०१८	शनिवार
२०.	२५वां विकास महोत्सव	भाद्रपद शुक्ला-०९	१८ सितम्बर २०१८	मंगलवार
२१.	२१६वां भिक्षु चरमोत्सव	भाद्रपद शुक्ला-१३	२२ सितम्बर २०१८	शनिवार
२२.	दीपावली	कार्तिक कृष्णा-३०	०७ नवम्बर २०१८	बुधवार

२३.	भगवान् महावीर का २५४५वां निर्वाण कल्याणक दिवस	कार्तिक कृष्णा-३०	०७ नवम्बर २०१८	बुधवार
२४.	आचार्यश्री तुलसी का १०५वां जन्म दिवस (अणुव्रत दिवस)	कार्तिक शुक्ला-०२	०९ नवम्बर २०१८	शुक्रवार
२५.	चातुर्मासिक पक्खी	कार्तिक शुक्ला-१४	२२ नवम्बर २०१८	गुरुवार
२६.	भगवान् महावीर का २५८७वां दीक्षा कल्याणक दिवस	मार्गशीर्ष कृष्णा-१०	०२ दिसम्बर २०१८	रविवार
२७.	भगवान् पार्श्वनाथ जन्म कल्याणक दिवस	पौष कृष्णा-१०	३१ दिसम्बर २०१८	सोमवार
२८.	७०वां गणतंत्र दिवस	माघ कृष्णा-०६	२६ जनवरी २०१९	शनिवार
२९.	१५५वां मर्यादा महोत्सव	माघ शुक्ला-०७	१२ फरवरी २०१९	मंगलवार
३०.	होलिका	फाल्गुन शुक्ला-१४	२० मार्च २०१९	बुधवार
३१.	चातुर्मासिक पक्खी	फाल्गुन शुक्ला-१५/१	२१ मार्च २०१९	गुरुवार
३२.	भगवान् ऋषभ दीक्षा कल्याणक दिवस (वर्षीतप प्रारंभ)	चैत्र कृष्णा-०८	२८ मार्च २०१९	गुरुवार

आचार्यश्री महाश्रमणजी के सान्निध्य में आयोजित होने वाले वार्षिक महत्त्वपूर्ण आयोजन

कार्यक्रम	स्थान	दिनांक	संपर्क सूत्र
महावीर जयन्ती	बड़ीगांव (उड़ीसा)	29 मार्च 2018	
अक्षय तृतीया	विशाखापट्टनम् (उड़ीसा)	18 अप्रैल 2018	
सन् 2018 का चातुर्मास वि.सं. (2075)	चेन्नई (तमिलनाडु)	21 जुलाई 2018 (प्रवेश)	
155वां मर्यादा महोत्सव	कोयम्बतूर	12 फरवरी 2019	

दिनांक	वार	तिथि	बजे	मिनट	नक्षत्र	बजे	मिनट	सूर्योदय घं. मि.	सूर्यास्त घं. मि.	प्र.प्रहर घं. मि.	प्र. अ. घं. मि.	चन्द्रमा	विशेष विवरण
१८	र	१	१८	३३	उ.भा.	२०	१०	६.४२	६.३९	९.४१	२.५९	मीन	पं., सूर्य उत्तराभाद्रपद में ०८/०२ से, राज. १८/३३ से २०/१० तक
१९	सो	२	१७	५४	रे	२०	०९	६.४१	६.३९	९.४०	२.५९	मेष २०/०९	पं. २०/०९ तक
२०	मं	३	१६	५२	अ	१९	४५	६.४०	६.३९	९.४०	३.००	मेष	अ. १९/४५ तक (प्रवेशे वर्ज्य), र. १९/४५ से, भ. ०४/१३ से, वै १५/४२ से
२१	बु	४	१५	२९	भ	१९	०२	६.३९	६.४०	९.३९	३.००	वृष २४/४९	भ. १५/२९ तक, व्या. १५/२९ से १९/०२ तक, र. १९/०२ तक, सि. १९/०२ से, वै. १३/२७ तक
२२	गु	५	१३	५२	कृ	१८	०६	६.३८	६.४१	९.३९	३.०१	वृष	यम. १८/०६ तक, र. १८/०६ से
२३	शु	६	१२	०४	रो	१६	५८	६.३६	६.४१	९.३७	३.०१	मि. ०४/२२	कु. १२/०४ तक, यम. १६/५८ तक, र. १६/५८ तक, राज. १६/५८ से
२४	श	७	१०	०७	मृ	१५	४३	६.३५	६.४२	९.३७	३.०२	मिथुन	भ. १०/०७ से २१/०६ तक
२५	र	८/९	०८/०५	०४/५६	आ	१४	२२	६.३३	६.४३	९.३६	३.०३	मिथुन	र. १४/२२ से, **रामनवमी, श्री भिक्षु अभिनिष्क्रमण दिवस**
२६	सो	१०	०३	४५	पुन	१२	५६	६.३२	६.४३	९.३५	३.०३	कर्क ०७/१८	र. अहोरात्र, कु. १२/५६ तक
२७	मं	११	०१	३३	पु	११	२९	६.३१	६.४४	९.३४	३.०३	कर्क	र. ११/२९ तक, भ. १४/३९ से ०१/३३ तक
२८	बु	१२	२३	२५	आ	१०	०२	६.३०	६.४४	९.३४	३.०३	सिंह १०/०२	
२९	गु	१३	२१	२४	म	०८	४०	६.२९	६.४५	९.३३	३.०४	सिंह	र. ०८/४० से, **२६१७वीं महावीर जयंती**
३०	शु	१४	१९	३७	पू.फा./उ.फा.	०७/०६	१८/३२	६.२८	६.४५	९.३२	३.०४	क. १३/१३	सि. ०७/५८ तक, र. ०७/२८ तक, भ. १९/३७ से
३१	श	१५	१८	०८	ह	०५	५८	६.२७	६.४५	९.३१	३.०४	कन्या	मू. एवं यम. ०५/५८ तक, भ. ०६/५० तक, सूर्य रेवती में १८/५२ से, व्या. ०५/१३ से **पक्खी**

दिनांक	वार	तिथि	बजे	मिनट	नक्षत्र	बजे	मिनट	सूर्योदय घं. मि.	सूर्यास्त घं. मि.	प्र.प्रहर घं. मि.	प्र. अ. घं. मि.	चन्द्रमा	विशेष विवरण
१	र	१	१७	०६	चि	०५	५३	६.२६	६.४६	९.३१	३.०५	तुला १७/५१	राज. १७/०६ से ०५/५३ तक, व्या. ०३/२८ तक
२	सो	२	१६	३७	स्वा	०६	२३	६.२५	६.४६	९.३०	३.०५	तुला	भ. ०४/३६ से, यम ०६/२३ से
३	मं	३	१६	४५	वि	०	०	६.२४	६.४६	९.२९	३.०५	वृ. ०१/१२	भ. १६/४५ तक
४	बु	४	१७	३४	वि	०७	३३	६.२३	६.४७	९.२९	३.०६	वृश्चिक	अ. ०७/३३ से, व्य. ०१/१० से
५	गु	५	१९	०३	अ	०९	२१	६.२२	६.४७	९.२८	३.०६	वृश्चिक	व्य. ०१/२४ तक
६	शु	६	२१	०६	ज्ये	११	४४	६.२१	६.४७	९.२७	३.०६	धन ११/४४	र. ११/४४ से, कु. ११/४४ से २१/०६ तक, भ. २१/०६ से
७	श	७	२३	३१	मू.	१४	३४	६.१९	६.४८	९.२६	३.०७	धन	भ. १०/१६ तक, र. १४/३४ तक
८	र	८	०२	०६	पू.षा.	१७	३८	६.१८	६.४८	९.२५	३.०७	म. २४/२४	
९	सो	९	०४	३५	उ.षा.	२०	४०	६.१७	६.४८	९.२५	३.०८	मकर	मृ. २०/४० तक, सि. २०/४० से, कु. ०४/३५ से
१०	मं	१०	०	०	श्र	२३	२५	६.१६	६.४९	९.२४	३.०८	मकर	भ. १७/४२ से, कु. २३/२५ तक
११	बु	१०	०६	४१	ध	०१	४१	६.१५	६.५०	९.२४	३.०९	कुंभ १२/३७	पं. १२/३७ से, भ. ०६/४१ तक
१२	गु	११	०८	१४	श	०३	१८	६.१४	६.५०	९.२३	३.०९	कुंभ	पं., आचार्यश्री महाप्रज्ञ का ९वां महाप्रयाण दिवस
१३	शु	१२	०९	०४	पू.भा.	०४	१४	६.१३	६.५१	९.२३	३.०९	मीन २३/०४	पं.
१४	श	१३	०९	१२	उ.भा.	०४	२८	६.१२	६.५१	९.२२	३.१०	मीन	पं., सूर्य मेष एवं अश्विनी में ०८/१४ से, भ. ०९/१२ से २१/०० तक, वै. ०३/०६ से, मलमास समाप्त
१५	र	१४	०८	३८	रे	०४	०६	६.११	६.५२	९.२१	३.१०	मेष ०४/०६	पं. ०४/०६ तक, वै ०१/०९ तक **पक्खी**
१६	सो	३० / १	०७ / ०५	२८ / ४८	अ	०३	१३	६.१०	६.५२	९.२०	३.१०	मेष	कु. ०७/२८ से ०३/१३ तक

दिनांक	वार	तिथि	बजे	मिनट	नक्षत्र	बजे	मिनट	सूर्योदय घं. मि.	सूर्यास्त घं. मि.	प्र.प्रहर घं. मि.	प्र. अ. घं. मि.	चन्द्रमा	विशेष विवरण
१७	मं	२	०३	४६	भ	०१	५७	६.०९	६.५२	९.२०	३.११	मेष	राज. ०१/५७ तक
१८	बु	३	०१	३१	कृ	२४	२८	६.०८	६.५३	९.१९	३.११	वृष ०७/३६	सि. २४/२८ तक, र. २४/२८ से, अक्षय तृतीया (वर्षीतप पारणा)
१९	गु	४	२३	०९	रो	२२	५२	६.०७	६.५४	९.१९	३.११	वृष	प. १२/२० से २३/०९ तक, मृ. २२/५२ से, र. २२/५२ तक
२०	शु	५	२०	४७	मृ	२१	१६	६.०६	६.५४	९.१८	३.१२	मि. १०/०४	र. २१/१६ से
२१	श	६	१८	२९	आ	१९	४४	६.०५	६.५५	९.१७	३.१२	मिथुन	र. १९/४४ तक
२२	र	७	१६	१९	पुन	१८	१९	६.०४	६.५६	९.१७	३.१३	कर्क १२/४०	प. १६/१९ से ०३/१७ तक
२३	सो	८	१४	१८	पु	१७	०४	६.०३	६.५६	९.१६	३.१३	कर्क	र. १७/०४ से
२४	मं	९	१२	२७	आ	१६	००	६.०२	६.५७	९.१६	३.१४	सिंह १६/००	र. अहोरात्र, ज्वा. १२/२७ से १६/०० तक, कु. १६/०० से, आचार्यश्री महाश्रमण का ५७वां जन्म दिवस
२५	बु	१०	१०	४८	म	१५	०७	६.०१	६.५८	९.१५	३.१४	सिंह	र. एवं कु. १५/०७ तक, प. २२/०३ से, आचार्यश्री महाश्रमण का ९वां पदाभिषेक दिवस, भगवान् महावीर केवलज्ञान कल्याणक दिवस
२६	गु	११	०९	२२	पू.फा.	१४	२७	६.००	६.५८	९.१५	३.१४	क. २०/११	प. ०९/२२ तक, ज्वा. १६/४२ से
२७	शु	१२	०८	०९	उ.फा.	१४	०२	५.५९	६.५९	९.१४	३.१५	कन्या	र. १४/०२ से २४/०१ तक, सूर्य भरणी में २४/०१ से, ज्वा. १४/४२ तक
२८	श	१३	०७	१४	ह	१३	५४	५.५८	७.००	९.१४	३.१५	तुला ०१/५८	मृ. एवं यम १३/५४ तक, र. १३/५४ से
२९	र	१४	०६	३९	चि.	१४	०८	५.५७	७.००	९.१३	३.१६	तुला	राज. ०६/३९ से १४/०८ तक, प. ०६/३९ से १८/३१ तक, र. १४/०८ तक, आचार्यश्री महाश्रमण का ४५वां दीक्षा दिवस (युवा दिवस)
३०	सो	१५	०६	३०	स्वा	१४	४८	५.५७	७.०१	९.१३	३.१६	तुला	कु. १४/४८ से, यम. १४/४८ से, ज्वा. १०/२५ से **पक्खी**

दिनांक	वार	तिथि	बजे	मिनट	नक्षत्र	बजे	मिनट	सूर्योदय घं. मि.	सूर्यास्त घं. मि.	प्र. प्रहर घं. मि.	प्र. अ. घं. मि.	चन्द्रमा	विशेष विवरण
१	मं	१	०६	४९	वि	१५	५८	५.५६	७.०१	९.१३	३.१६	वृ. ०९/३८	कु. ०६/४९ तक, राज. १५/५८ से, व्य. ०९/४१ तक
२	बु	२	०७	४२	अ	१७	३९	५.५५	७.०२	९.१२	३.१६	वृश्चिक	अ. १७/३९ तक, राज. १७/३९ तक, भ. २०/२० से
३	गु	३	०९	०७	ज्ये	१९	५३	५.५४	७.०२	९.११	३.१७	धन १९/५३	भ. ०९/०७ तक
४	शु	४	११	०४	मू.	२२	३४	५.५३	७.०३	९.१०	३.१७	धन	कु. ११/०४ से २२/३४ तक
५	श	५	१३	२४	पू.षा.	०१	३४	५.५२	७.०३	९.१०	३.१८	धन	र. ०१/३४ से
६	र	६	१५	५७	उ.षा.	०४	४१	५.५१	७.०४	९.०९	३.१८	म. ०८/३१	भ. १५/५७ से ०५/१४ तक, र. ०४/४१ तक
७	सो	७	१८	२९	श्र	०	०	५.५१	७.०४	९.०९	३.१८	मकर	सि. अहोरात्र
८	मं	८	२०	४४	श्र	०७	३९	५.५०	७.०५	९.०९	३.१९	कुंभ २०/५९	पं. २०/५९ से
९	बु	९	२२	२७	ध	१०	१३	५.५०	७.०६	९.०९	३.१९	कुंभ	पं.
१०	गु	१०	२३	२८	श	१२	११	५.४९	७.०७	९.०९	३.१९	कुंभ	पं., भ. ११/०३ से २३/३८ तक, वै. १४/२२ से
११	शु	११	२३	४२	पू.भा.	१३	२५	५.४९	७.०८	९.०९	३.२०	मीन ०७/१२	पं., कु. १३/२५ तक, सूर्य कृतिका में १८/१४ से, राज. २३/४२ से, वै. १३/४५ तक
१२	श	१२	२३	०६	उ.भा.	१३	५१	५.४८	७.०८	९.०९	३.२०	मीन	पं.
१३	र	१३	२१	४६	रे	१३	३१	५.४७	७.०९	९.०८	३.२०	मेष १३/३१	पं. १३/३१ तक, भ. २१/४६ से
१४	सो	१४	१९	४७	अ	१२	३०	५.४७	७.१०	९.०७	३.२१	मेष	भ. ०८/५१ तक, सूर्य वृषभ में ०५/०४ से
१५	मं	३०	१७	१९	भ	१०	५७	५.४६	७.१०	९.०७	३.२१	वृष १६/३०	**पक्सी**

दिनांक	वार	तिथि	बजे	मिनट	नक्षत्र	बजे	मिनट	सूर्योदय घं. मि.	सूर्यास्त घं. मि.	प्र.प्रहर घं. मि.	प्र. अ. घं. मि.	चन्द्रमा	विशेष विवरण
१६	बु	१	१४	२९	कृ	०९	००	५.४६	७.१०	९.०७	३.२१	वृष	मि. ०९/०० तक, कु. ०९/०० से १४/२९ तक
१७	गु	२	११	२८	रो/मृ	०६/०४	४९/३५	५.४५	७.१०	९.०६	३.२१	मि. १७/४२	मृ. ०६/४९ से ०४/३५ तक, र. ०४/३५ से
१८	शु	३/४	०८/०५	२६/२९	आ	०२	२५	५.४४	७.११	९.०६	३.२२	मिथुन	भ. १८/५७ से ०५/२९ तक, र. ०२/२५ तक, कु. ०५/२९ से
१९	श	५	०२	४६	पुन	२४	२७	५.४४	७.१२	९.०६	३.२२	कर्क १८/५५	र. २४/२७ से
२०	र	६	२४	२०	पु	२२	४६	५.४३	७.१२	९.०६	३.२२	कर्क	र. २२/४६ तक
२१	सो	७	२२	१५	आ	२१	२७	५.४३	७.१३	९.०५	३.२२	सिंह ११/२७	भ. २२/१५ से, व्या. ०३/११ से
२२	मं	८	२०	३३	म	२०	३०	५.४३	७.१३	९.०५	३.२२	सिंह	भ. ०९/२१ तक, र. २०/३० से, व्या. २४/४८ तक
२३	बु	९	१९	१४	पू.फा.	१९	५६	५.४२	७.१४	९.०५	३.२३	क. ०१/५२	र. अहोरात्र
२४	गु	१०	१८	२०	उ.फा.	१९	४७	५.४२	७.१५	९.०५	३.२३	कन्या	र. १९/४७ तक, भ. ०६/०१ से
२५	शु	११	१७	४९	ह	२०	०१	५.४१	७.१५	९.०५	३.२३	कन्या	कु. १७/४९ तक, सूर्य रोहिणी में १४/२२ से, र. १४/२२ से २०/०१ तक, भ. १७/४९ तक, राज. २०/०१ से, व्य. १९/३८ से
२६	श	१२	१७	४२	चि	२०	३८	५.४१	७.१५	९.०५	३.२३	तुला ०८/१९	व्य. १८/३२ तक
२७	र	१३	१७	५९	स्वा	२१	३९	५.४१	७.१६	९.०५	३.२४	तुला	र. २१/३९ से
२८	सो	१४	१८	४२	वि	२३	०५	५.४१	७.१६	९.०५	३.२४	वृ. १६/४२	यम. २३/०५ तक, भ. १८/४२ से, र. २३/०५ तक
२९	मं	१५	१९	५१	अ	२४	५७	५.४०	७.१७	९.०४	३.२४	वृश्चिक	राज. १९/५१ तक, भ. ०७/१३ तक **पक्की**

दिनांक	वार	तिथि	बजे	मिनट	नक्षत्र	बजे	मिनट	सूर्योदय घं. मि.	सूर्यास्त घं. मि.	प्र. प्रहर घं. मि.	प्र. अ. घं. मि.	चन्द्रमा	विशेष विवरण
३०	बु	१	२१	२७	ज्ये	०३	१४	५.४०	७.१७	९.०४	३.२४	धन ०३/१४	यम. ०३/१४ से
३१	गु	२	२३	२६	मू.	०५	५४	५.४०	७.१८	९.०४	३.२४	धन	
१	शु	३	०१	४६	पू.षा.	०	०	५.४०	७.१८	९.०४	३.२४	धन	राज ०१/४६ तक, भ. १२/३४ से ०१/४६ तक
२	श	४	०४	१९	पू.षा.	०८	५२	५.४०	७.१८	९.०४	३.२४	म. १५/३८	
३	र	५	०	०	उ.षा.	१२	००	५.३९	७.१८	९.०४	३.२५	मकर	
४	सो	५	०६	५४	श्र	१५	०६	५.३९	७.१९	९.०४	३.२५	कुंभ ०४/३५	कु. एवं मि. १५/०६ तक, र. १५/०६ से, पं. ०४/३५ से, वै. २२/०४ से
५	मं	६	०९	१७	ध	१७	५८	५.३९	७.१९	९.०४	३.२५	कुंभ	पं., राज. ०९/१७ से १७/५८ तक, भ. ०९/१७ से २२/२० तक, र. १७/५८ तक, मृ. १७/५८ से, वै. २२/५१ तक
६	बु	७	११	१६	श	२०	२१	५.३९	७.२०	९.०४	३.२५	कुंभ	पं.
७	गु	८	१२	३७	पू.भा.	२२	०५	५.३९	७.२१	९.०४	३.२५	मीन २५/४३	पं.
८	शु	९	१३	१३	उ.भा.	२३	०२	५.३९	७.२१	९.०४	३.२५	मीन	पं., सूर्य मृगशीर्ष में १२/१८ से, अ. २३/०२ से, भ. ०१/१२ से
९	श	१०	१२	५९	रे	२३	०९	५.३९	७.२२	९.०५	३.२६	मेष २३/०९	भ. १२/५९ तक, पं. २३/०९ तक
१०	र	११	११	५४	अ	२२	२९	५.३९	७.२२	९.०५	३.२६	मेष	राज. २२/२९ से
११	सो	१२	१०	०४	भ.	२१	०६	५.३९	७.२३	९.०५	३.२६	वृष ०३/३१	
१२	मं	१३/१४	०७/०४	३५/३५	कृ	१९	०८	५.३९	७.२३	९.०५	३.२६	वृष	भ. ०७/३५ से १८/०८ तक
१३	बु	३०	०१	१४	रो	१६	४४	५.३९	७.२४	९.०५	३.२६	मि. ०३/३६	पक्खी

दिनांक	वार	तिथि	बजे	मिनट	नक्षत्र	बजे	मिनट	सूर्योदय घं. मि.	सूर्यास्त घं. मि.	प्र.प्रहर घं. मि.	प्र. अ. घं. मि.	चन्द्रमा	विशेष विवरण
१४	गु	१	२१	४३	मृ	१४	०५	५.३९	७.२४	९.०५	३.२६	मिथुन	मृ. १४/०५ तक
१५	शु	२	१८	११	आ	११	२२	५.३९	७.२५	९.०५	३.२६	कर्क ०३/२३	सूर्य मिथुन में ११/३८ से
१६	श	३	१४	४८	पुन	०८	४५	५.३९	७.२५	९.०५	३.२६	कर्क	र. ०८/४५ से, भ. ०१/१२ से, व्या. १७/३६ से
१७	र	४	११	४१	पु / आ	०६ / ०४	२२ / २१	५.३९	७.२५	९.०५	३.२६	सिंह ०४/२१	र. ०६/२२ तक, भ. ११/४१ तक, र. ०४/२१ से, यम. ०४/२१ से, व्या. १४/०० तक
१८	सो	५	०८	५८	म	०२	४८	५.३९	७.२५	९.०५	३.२६	सिंह	कु. ०२/४८ तक, र. ०२/४८ तक
१९	मं	६ / ७	०६ / ०५	४३ / ००	पू.फा.	०१	४८	५.३९	७.२५	९.०५	३.२६	सिंह	राज. ०६/४३ से ०१/४८ तक, भ. ०५/०० से, व्य. ०५/३२ से
२०	बु	८	०३	५३	उ.फा.	०१	२१	५.३९	७.२६	९.०६	३.२७	क. ०७/३०	भ. १६/२२ तक, र. ०१/२१ से, व्य. ०३/३६ तक
२१	गु	९	०३	२१	ह	०१	२९	५.३९	७.२६	९.०६	३.२७	कन्या	र. अहोरात्र
२२	शु	१०	०३	२२	चि	०२	१०	५.३९	७.२६	९.०६	३.२७	तुला १३/४९	र. अहोरात्र, सूर्य आर्द्रा में ११/१२ से, गाजबीज की अस्वाध्याय नहीं
२३	श	११	०३	५४	स्वा	०३	२२	५.४०	७.२७	९.०७	३.२७	तुला	सि. ०३/२२ तक, भ १५/३४ से ०३/५४ तक, र. ०३/२२ तक
२४	र	१२	०४	५६	वि	०५	०२	५.४१	७.२७	९.०९	३.२७	वृ. २२/३५	मृ. ०५/०२ से
२५	सो	१३	०	०	अ	०	०	५.४१	७.२७	९.०८	३.२७	वृश्चिक	
२६	मं	१३	०६	२४	अ	०७	०८	५.४२	७.२७	९.०८	३.२६	वृश्चिक	र. ०७/०८ से
२७	बु	१४	०८	१५	ज्ये	०९	३६	५.४२	७.२७	९.०८	३.२६	धन ०९/३६	र. ०९/३६ तक, यम. ०९/३६ से, भ. ०८/१५ से २१/१७ तक
२८	गु	१५	१०	२४	मू	१२	२३	५.४३	७.२७	९.०९	३.२६	धन	ज्वा. १०/२४ से १२/२३ तक पक्खी

दिनांक	वार	तिथि	बजे	मिनट	नक्षत्र	बजे	मिनट	सूर्योदय घं. मि.	सूर्यास्त घं. मि.	प्र. प्रहर घं. मि.	प्र. अ. घं. मि.	चन्द्रमा	विशेष विवरण
२९	शु	१	१२	४९	पू.षा.	१५	२३	५.४३	७.२७	९.०९	३.२६	म. ११/०९	राज. १२/४९ से १५/२३ तक, वै. ०३/३६ से
३०	श	२	१५	२२	उ.षा.	१८	३०	५.४४	७.२७	९.१०	३.२६	मकर	भ. ०४/३९ से, वै. ०४/४२ तक
१	र	३	१७	५६	श्र	२१	३८	५.४४	७.२७	९.१०	३.२६	मकर	भ. १७/५६ तक, आचार्यश्री तुलसी का २२वां महाप्रयाण दिवस
२	सो	४	२०	२२	ध	२४	३६	५.४५	७.२७	९.११	३.२५	कुंभ ११/०८	पं. ११/०८ से
३	मं	५	२२	२९	श	०३	१५	५.४५	७.२७	९.११	३.२५	कुंभ	पं., मृ. ०३/१५ तक, र. एवं कु. ०३/१५ से
४	बु	६	२४	०७	पू.भा.	०५	२४	५.४६	७.२७	९.११	३.२६	मीन २३/५४	पं., कु. २४/०७ तक, भ. २४/०७ से, र. ०५/२४ तक, राज. ०५/२४ से
५	गु	७	०१	०७	उ.भा.	०	०	५.४६	७.२७	९.११	३.२५	मीन	पं., भ. १२/४२ तक
६	शु	८	०१	२२	उ.भा.	०६	५४	५.४६	७.२७	९.११	३.२५	मीन	पं., अ. ०६/५४ से, सूर्य पुनर्वसु में १०/५२ से
७	श	९	२४	५०	रे	०७	४०	५.४६	७.२७	९.११	३.२५	मेष ०७/४०	पं. ०७/४० तक
८	र	१०	२३	३०	अ	०७	३९	५.४६	७.२७	९.११	३.२५	मेष	भ. १२/१६ से २३/३० तक
९	सो	११	२१	२७	भ / कृ	०६ / ०५	५१ / २२	५.४६	७.२७	९.११	३.२५	वृष १२/३२	
१०	मं	१२	१८	४६	रो	०३	१६	५.४६	७.२७	९.११	३.२५	वृष	
११	बु	१३	१५	३५	मृ	२४	४४	५.४६	७.२७	९.११	३.२५	मि. १४/०३	भ. १५/३५ से ०१/५१ तक, आचार्यश्री महाप्रज्ञ का ९९वां जन्म दिवस
१२	गु	१४	१२	०२	आ	२१	५५	५.४७	७.२६	९.१२	३.२५	मिथुन	सि. २१/५५ से, व्या. १२/४५ से
१३	शु	३० / १	०८ / ०४	११ / ३४	पुन	१९	००	५.४७	७.२६	९.१२	३.२४	कर्क १३/४४	कु. ०८/११ से १९/०० तक, राज. ०४/३४ से, व्या ०८/३५ तक, **पञ्चमी**

दिनांक	वार	तिथि	बजे	मिनट	नक्षत्र	बजे	मिनट	सूर्योदय घं. मि.	सूर्यास्त घं. मि.	प्र.प्रहर घं. मि.	प्र. अ. घं. मि.	चन्द्रमा	विशेष विवरण
१४	श	२	२४	५७	पु	१६	०८	५.४७	७.२५	९.१२	३.२४	कर्क	
१५	र	३	२१	३७	आ	१३	३०	५.४८	७.२५	९.१२	३.२४	सिंह १३/३०	र. १३/३० से, यम १३/३० से, व्य. २०/३५ से
१६	सो	४	१८	४२	म	११	१५	५.४९	७.२५	९.१३	३.२४	सिंह	भ. ०८/०६ से १८/४२ तक, र. ११/१५ तक, सूर्य कर्क में २२/२८ से, व्य. १७/०५ तक
१७	मं	५	१६	२१	पू.फा.	०९	३०	५.५०	७.२५	९.१४	३.२४	क. १५/०९	र. ०९/३० से
१८	बु	६	१४	३९	उ.फा.	०८	२२	५.५०	७.२५	९.१४	३.२४	कन्या	र. ०८/२२ तक, कु. ०८/२२ से १४/३९ तक
१९	गु	७	१३	३९	ह	०७	५५	५.५१	७.२४	९.१४	३.२३	तुला ११/५८	भ. १३/३९ से ०१/२५ तक
२०	शु	८	१३	२१	चि	०८	११	५.५१	७.२४	९.१४	३.२३	तुला	र. ०८/११ से १०/१८ तक, सूर्य पुष्य में १०/१८ से
२१	श	९	१३	४६	स्वा	०९	०९	५.५२	७.२४	९.१५	३.२३	वृ. ०४/१८	सि. ०९/०९ तक, र. ०९/०९ से
२२	र	१०	१४	५०	वि	१०	४६	५.५२	७.२३	९.१५	३.२३	वृश्चिक	र. अहोरात्र, मृ. १०/४६ से, भ. ०३/३४ से
२३	सो	११	१६	२५	अ	१२	५५	५.५३	७.२३	९.१५	३.२३	वृश्चिक	र. १२/५५ तक, भ. १६/२५ तक
२४	मं	१२	१८	२७	ज्ये	१५	२९	५.५३	७.२२	९.१५	३.२२	धन १५/२९	
२५	बु	१३	२०	४७	मू.	१८	२३	५.५४	७.२१	९.१६	३.२२	धन	यम. १८/२३ तक, र. १८/२३ से, वै. ०८/५२ से, आचार्यश्री भिक्षु का २९३वां जन्म दिवस एवं २६१वां बोधि दिवस
२६	गु	१४	२३	१८	पू.षा.	२१	२६	५.५४	७.२१	९.१६	३.२२	म. ०४/१३	र. २१/२६ तक, भ. २३/१८ तक, वै. ०९/५० तक
२७	शु	१५	०१	५१	उ.षा.	२४	३४	५.५५	७.२०	९.१६	३.२१	मकर	भ. १२/३५ तक, कु. ०१/५१ से, चन्द्रग्रहण, **२५९वां तेरापंथ स्थापना दिवस, चातुर्मासिक पक्खी**

दिनांक	वार	तिथि	बजे	मिनट	नक्षत्र	बजे	मिनट	सूर्योदय घं. मि.	सूर्यास्त घं. मि.	प्र.प्रहर घं. मि.	प्र. अ. घं. मि.	चन्द्रमा	विशेष विवरण
२८	श	१	०४	२२	श्र	०३	३८	५.५५	७.२०	९.१६	३.२१	मकर	
२९	र	२	०	०	ध	०	०	५.५६	७.१९	९.१७	३.२१	कुंभ १७/०७	राज. अहोरात्र, पं. १७/०७ से
३०	सो	२	०६	४१	ध	०६	३३	५.५६	७.१९	९.१७	३.२१	कुंभ	पं., भ. १९/४५ से
३१	मं	३	०८	४४	श	०९	११	५.५७	७.१८	९.१७	३.२०	मीन ०४/५५	पं., मृ. ०९/११ तक, भ. ०८/४४ तक
१	बु	४	१०	२३	पू.भा.	११	२६	५.५७	७.१८	९.१७	३.२०	मीन	पं., कु. १०/२३ से ११/२६ तक
२	गु	५	११	३३	उ.भा.	१३	१३	५.५८	७.१७	९.१८	३.२०	मीन	पं., र. १३/१३ से
३	शु	६	१२	०८	रे	१४	२५	५.५९	७.१७	९.१८	३.१९	मेष १४/२५	अं. १४/२५ तक, र. ०९/१६ तक, सूर्य आश्लेषा में ०९/१६ से, भ. १२/०८ से २४/१२ तक, पं. १४/२५ तक, र. १४/२५ से
४	श	७	१२	०५	अ	१५	००	५.५९	७.१६	९.१८	३.१९	मेष	र. १५/०० तक
५	र	८	११	२१	भ	१४	५४	६.००	७.१५	९.१९	३.१९	वृष २०/४६	
६	सो	९	०९	५६	कृ	१४	०८	६.०१	७.१४	९.१९	३.१८	वृष	कु. १४/०८ से, भ २०/५९ से
७	मं	१०/११	०७/०५	५३/१७	रो	१२	४४	६.०१	७.१४	९.१९	३.१८	मि. २३/५०	भ. ०७/५३ तक, कु. १२/४४ तक, राज. ०५/१७ से
८	बु	१२	०२	११	मृ	१०	४८	६.०२	७.१३	९.२०	३.१८	मिथुन	राज. १०/४८ तक
९	गु	१३	२२	४६	आ/पु	०८/०५	२५/४५	६.०२	७.१२	९.२०	३.१७	कर्क २४/२६	सि. ०८/२५ से ०५/४५ तक, भ. २२/४६ से, गुरुपुष्यामृत योग ०५/४५ से (विवाहे वर्ज्य)
१०	शु	१४	१९	०९	पु	०२	५५	६.०३	७.११	९.२०	३.१७	कर्क	भ. ०८/५८ तक, मृ. ०२/५५ से, व्य. १५/५३ से
११	श	३०	१५	२९	आ	२४	०७	६.०३	७.१०	९.२०	३.१७	सिंह २४/०७	व्य. ११/४५ तक **पक्खी**

दिनांक	वार	तिथि	बजे	मिनट	नक्षत्र	बजे	मिनट	सूर्योदय घं. मि.	सूर्यास्त घं. मि.	प्र.प्रहर घं. मि.	प्र. अ. घं. मि.	चन्द्रमा	विशेष विवरण
१२	र	१	११	५६	म	२१	२९	६.०४	७.०९	९.२०	३.१६	सिंह	यम. २१/२९ तक, राज. २१/२९ से
१३	सो	२ / ३	०८ / ०५	३९ / ४७	पू.फा.	१९	११	६.०४	७.०९	९.२०	३.१६	क. २४/४२	र. १९/११से
१४	मं	४	०३	३०	उ.फा.	१७	२३	६.०५	७.०७	९.२०	३.१६	कन्या	भ. १६/३३ से ०३/३० तक, र. १७/२३ तक, कु. ०३/३० से
१५	बु	५	०१	५४	ह	१६	१५	६.०५	७.०६	९.२०	३.१५	तुला ०३/५७	कु. १६/१५ तक, र. १६/१५ से, स्वतंत्रता दिवस
१६	गु	६	०१	०५	चि	१५	५०	६.०६	७.०५	९.२१	३.१५	तुला	र. १५/५० तक
१७	शु	७	०१	०४	स्वा	१६	१३	६.०६	७.०४	९.२१	३.१४	तुला	सूर्य सिंह एवं मघा में ०६/५२ से, र. ०६/५२ से १६/१३ तक, भ. ०१/०४ से
१८	श	८	०१	४९	वि	१७	२२	६.०७	७.०३	९.२१	३.१४	वृ. ११/०१	भ. १३/२१ तक
१९	र	९	०३	१७	अ	१९	१५	६.०७	७.०२	९.२१	३.१४	वृश्चिक	मृ. १९/१५ तक, र. १९/१५ से, वै. १४/५२ से
२०	सो	१०	०५	१८	ज्ये	२१	४३	६.०७	७.०१	९.२१	३.१३	धन २१/४३	र. अहोरात्र, कु. २१/४३ से, वै. १५/१६ तक
२१	मं	११	०	०	मू	२४	३५	६.०८	७.००	९.२१	३.१३	धन	भ. १८/२८ से, र. एवं कु. २४/३५ तक
२२	बु	११	०७	४२	पू.षा.	०३	४०	६.०८	७.००	९.२१	३.१३	धन	भ. ०७/४२ तक, राज. ०७/४२ से ०३/४० तक
२३	गु	१२	१०	१७	उ.षा	०	०	६.०९	६.५९	९.२१	३.१३	म. १०/२८	
२४	शु	१३	१२	५२	उ.षा.	०६	४९	६.०९	६.५८	९.२१	३.१२	मकर	र. ०६/४९ से
२५	श	१४	१५	१७	श्र	०९	५०	६.१०	६.५७	९.२२	३.११	कुंभ २३/१५	र. ०९/५० तक, भ. १५/१७ से ०४/२५ तक, पं. २३/१५ से
२६	र	१५	१७	२७	ध	१२	३७	६.११	६.५६	९.२२	३.११	कुंभ	पं., राज १२/३७ तक, रक्षा बंधन **पक्खी**

दिनांक	वार	तिथि	बजे	मिनट	नक्षत्र	बजे	मिनट	सूर्योदय घं. मि.	सूर्यास्त घं. मि.	प्र.प्रहर घं. मि.	प्र. अ. घं. मि.	चन्द्रमा	विशेष विवरण
२७	सो	१	१९	१६	श	१५	०४	६.११	६.५५	९.२२	३.११	कुंभ	पं., कु १५/०४ से १९/१६ तक
२८	मं	२	२०	४०	पू.भा.	१७	०९	६.१२	६.५४	९.२३	३.१०	मीन १०/४०	पं., राज. १७/०९ से, सि. १७/०९ से
२९	बु	३	२१	३९	उ.भा.	१८	४९	६.१३	६.५३	९.२३	३.१०	मीन	पं., भ. ०९/१३ से २१/३९ तक, राज. १८/४९ तक
३०	गु	४	२२	१०	रे	२०	०२	६.१३	६.५२	९.२३	३.१०	मेष २०/०२	पं. २०/०२ तक, सूर्य पूर्वा फाल्गुनी में ०२/५४ से
३१	शु	५	२२	१२	अ	२०	४७	६.१४	६.५१	९.२३	३.०९	मेष	कु. २०/४७ तक, ज्वा. २०/४७ से २२/१२ तक
१	श	६	२१	४५	भ	२१	०३	६.१४	६.५०	९.२३	३.०९	वृष ०३/०२	र. २१/०३ से, भ. २१/४५ से, व्या. १८/१३ से
२	र	७	२०	४८	कृ	२०	४९	६.१४	६.४९	९.२३	३.०९	वृष	भ. ०९/२० तक, ज्वा. २०/४८ से २०/४९ तक, र. २०/४९ तक, व्या. १६/२६ तक
३	सो	८	१९	२१	रो	२०	०५	६.१५	६.४८	९.२३	३.०९	वृष	ज्वा. १९/२१ से २०/०५ तक, अ. २०/०५ से
४	मं	९	१७	२५	मृ	१८	५४	६.१५	६.४७	९.२३	३.०८	मि. ०७/३३	यम. १८/५४ से, भ. ०४/१६ से, व्य. ०८/४८ से ०५/३२ तक
५	बु	१०	१५	०२	आ	१७	१५	६.१५	६.४५	९.२३	३.०८	मिथुन	भ. १५/०२ तक, कु. १७/१५ से
६	गु	११	१२	१६	पुन	१५	१४	६.१६	६.४४	९.२३	३.०७	कर्क ०९/४६	सि. १५/१४ तक, गुरुपुष्यामृत योग १५/१४ से (विवाहे वर्ज्य)
७	शु	१२/१३	०९/०६	१३/००	पु	१२	५७	६.१६	६.४३	९.२३	३.०७	कर्क	राज. ०९/१३ तक, मृ. १२/५७ से, भ. ०६/०० से, पर्युषण प्रारम्भ, श्री मज्जयाचार्य का १३७वां निर्वाण दिवस
८	श	१४	०२	४४	आ	१०	३०	६.१७	६.४२	९.२३	३.०७	सिंह १०/३०	भ. १६/२२ तक
९	र	३०	२३	३३	म/पू.फा.	०८/०५	०२/४२	६.१७	६.४१	९.२३	३.०६	सिंह	यम. ०८/०२ तक **पर्युषण पक्खी**

दिनांक	वार	तिथि	बजे	मिनट	नक्षत्र	बजे	मिनट	सूर्योदय घं. मि.	सूर्यास्त घं. मि.	प्र.प्रहर घं. मि.	प्र. अ. घं. मि.	चन्द्रमा	विशेष विवरण
१०	सो	१	२०	३८	उ.फा.	०३	४१	६.१८	६.४०	९.२३	३.०६	क. ११/१०	
११	मं	२	१८	०६	ह	०२	०७	६.१८	६.३९	९.२३	३.०५	कन्या	र. एवं राज. ०२/०७ से
१२	बु	३	१६	०९	चि	०१	१०	६.१८	६.३८	९.२३	३.०५	तुला १३/३३	राज १६/०९ तक, र. ०१/१० तक, भ. ०३/२६ से
१३	गु	४	१४	५४	स्वा	२४	५६	६.१८	६.३७	९.२३	३.०५	तुला	भ. १४/५४ तक, सूर्य उत्तराफाल्गुनी में २०/४२ से, र. २०/४२ से २४/५६ तक, वै. २४/३९ से
१४	शु	५	१४	२६	वि	०१	३०	६.२०	६.३६	९.२४	३.०४	वृ. ११/१६	कु. ०१/३० तक, र. ०१/२० से, वै. २३/२८ तक, संवत्सरी पर्व
१५	श	६	१४	४७	अ	०२	५१	६.२०	६.३५	९.२४	३.०३	वृश्चिक	र. ०२/५१ तक, आचार्यश्री कालूगणी का ८२वां स्वर्गवास दिवस
१६	र	७	१५	५६	ज्ये	०४	५६	६.२१	६.३४	९.२४	३.०३	धन ०४/५६	भ. १५/५६ से ०४/४६ तक, सि. ०४/५६ से
१७	सो	८	१७	४६	मू	०	०	६.२१	६.३३	९.२४	३.०३	धन	सूर्य कन्या में ०६/४८ से
१८	मं	९	२०	०६	मू	०७	३६	६.२१	६.३२	९.२४	३.०३	धन	र. ०७/३६ से, २५वां विकास महोत्सव
१९	बु	१०	२२	४१	पू.षा.	१०	३७	६.२१	६.३१	९.२४	३.०३	म. १७/२४	र. अहोरात्र
२०	गु	११	०१	१७	उ.षा.	१३	४५	६.२२	६.२९	९.२४	३.०२	मकर	भ. १२/०० से ०१/१७ तक, र. १३/४५ तक
२१	शु	१२	०३	४२	श्र	१६	४७	६.२२	६.२८	९.२४	३.०२	कुंभ ०६/१२	राज. १६/४७ से ०३/४२ तक, पं. ०६/१२ से
२२	श	१३	०५	४५	ध	१९	३१	६.२३	६.२७	९.२४	३.०२	कुंभ	पं., र. १९/३१ से, २१६वां आचार्य भिक्षु चरमोत्सव
२३	र	१४	०	०	श	२१	५०	६.२३	६.२५	९.२४	३.०१	कुंभ	पं., र. २१/५० तक
२४	सो	१४	०७	१९	पू.भा.	२३	४०	६.२४	६.२३	९.२४	३.००	मीन १७/१६	पं., भ. ०७/१९ से १९/५५ तक, **पक्खी**
२५	मं	१५	०८	२३	उ.भा.	०१	०२	६.२५	६.२२	९.२४	२.५९	मीन	पं., राज. ०८/२३ तक, सि. ०१/०२ तक

दिनांक	वार	तिथि	बजे	मिनट	नक्षत्र	बजे	मिनट	सूर्योदय घं. मि.	सूर्यास्त घं. मि.	प्र. प्रहर घं. मि.	प्र. अ. घं. मि.	चन्द्रमा	विशेष विवरण
२६	बु	१	०८	५७	रे	०१	५५	६.२५	६.२१	९.२४	२.५९	मेष ०१/५५	पं. ०१/५५ तक, मु. ०१/५५ से, ध्या. ०२/४० से
२७	गु	२	०९	०४	अ	०२	२३	६.२६	६.२०	९.२४	२.५८	मेष	सूर्य हस्त में १२/१६ से, भ. २०/५७ से, ध्या. ०१/२४ तक
२८	शु	३	०८	४५	भ	०२	२९	६.२६	६.१९	९.२४	२.५८	मेष	राज. ०८/४५ तक, भ. ०८/४५ तक
२९	श	४	०८	०५	कृ	०२	१४	६.२६	६.१८	९.२४	२.५८	वृष ०८/२७	अ. ०२/१४ से (प्रयाणे वर्ज्य)
३०	र	५/६	०७/०५	०५/४६	रो	०१	४२	६.२७	६.१७	९.२४	२.५८	वृष	र. ०१/४२ से, भ. ०५/४६ से, राज. ०५/४६ से, व्य. २०/०० से
१	सो	७	०४	१०	मृ	२४	५२	६.२७	६.१६	९.२४	२.५७	मि. १३/११	अ. २४/५२ तक, भ. १७/०० तक, र. २४/५२ तक, व्य. १७/४२ तक
२	मं	८	०२	१८	आ	२३	४६	६.२८	६.१५	९.२५	२.५७	मिथुन	यम. २३/४६ तक
३	बु	९	२४	११	पुन	२२	२४	६.२९	६.१३	९.२५	२.५६	कर्क १६/४७	
४	गु	१०	२१	५०	पु	२०	४९	६.२९	६.१२	९.२५	२.५६	कर्क	गुरुपुष्यामृत योग २०/४९ तक (विवाहे वर्ज्य), भ. ११/०२ से २१/५० तक, ज्वा. २०/४९ से २१/५० तक
५	शु	११	१९	१९	आ	१९	०४	६.२९	६.११	९.२५	२.५५	सिंह १९/०४	मृ. १९/०४ तक, कु. १९/०४ से १९/१९ तक
६	श	१२	१६	४२	म	१७	१२	६.३०	६.१०	९.२५	२.५५	सिंह	
७	र	१३	१४	०४	पू.फा.	१५	१९	६.३०	६.०९	९.२५	२.५५	क. २०/५२	भ. १४/०४ से २४/४८ तक
८	सो	१४	११	३४	उ.फा.	१३	३५	६.३०	६.०८	९.२५	२.५४	कन्या	
९	मं	३०	०९	१९	ह	१२	०७	६.३१	६.०७	९.२५	२.५४	तुला १३/३१	कु. ०९/१९ से १२/०७ तक, वै. १४/३४ से **पञ्चमी**

दिनांक	वार	तिथि	बजे	मिनट	नक्षत्र	बजे	मिनट	सूर्योदय घं. मि.	सूर्यास्त घं. मि.	प्र.प्रहर घं. मि.	प्र. अ. घं. मि.	चन्द्रमा	विशेष विवरण
१०	बु	१/२	०७/०६	२७/०८	चि	११	०३	६.३१	६.०६	९.२५	२.५४	तुला	राज. ०७/२७ से ११/०३ तक, सूर्य चित्रा में ०१/१४ से, वै. १२/०० तक
११	गु	३	०५	३०	स्वा	१०	३३	६.३२	६.०५	९.२५	२.५३	वृ. ०४/३५	
१२	शु	४	०५	३६	वि	१०	४३	६.३२	६.०४	९.२५	२.५३	वृश्चिक	र. १०/४३ से, भ. १७/२७ से ०५/३६ तक
१३	श	५	०६	३०	अ	११	३७	६.३३	६.०३	९.२५	२.५२	वृश्चिक	र. ११/३७ तक
१४	र	६	०	०	ज्ये	१३	१६	६.३३	६.०२	९.२५	२.५२	धन १३/१६	र. १३/१६ से, सि. १३/१६ से
१५	सो	६	०८	०७	मू	१५	३५	६.३४	६.०१	९.२६	२.५२	धन	कु. ०८/०७ तक, र. १५/३५ तक
१६	मं	७	१०	१८	पू.षा.	१८	२४	६.३५	५.५९	९.२६	२.५१	म. ०३/१०	राज. १०/१८ तक, भ. १०/१८ से २३/३३ तक
१७	बु	८	१२	५१	उ.षा.	२१	२९	६.३५	५.५८	९.२६	२.५०	मकर	सूर्य तुला में १८/४५ से, र. २१/२९ से
१८	गु	९	१५	३०	श्र	२४	३५	६.३६	५.५७	९.२६	२.५०	मकर	र. अहोरात्र
१९	शु	१०	१७	५८	ध	०३	२५	६.३७	५.५६	९.२७	२.४९	कुंभ १४/०२	पं. १४/०२ से, र. ०३/२५ तक
२०	श	११	२०	०२	श	०५	४९	६.३७	५.५५	९.२७	२.४९	कुंभ	पं., भ. ०७/०४ से २०/०२ तक
२१	र	१२	२१	३२	पू.भा.	०	०	६.३८	५.५४	९.२७	२.४९	मीन ०१/१३	पं.
२२	सो	१३	२२	२३	उ.भा.	०७	३७	६.३८	५.५३	९.२७	२.४९	मीन	पं., र. ०७/३७ से, व्या. ११/२७ से
२३	मं	१४	२२	३७	उ.भा.	०८	४८	६.३९	५.५२	९.२७	२.४८	मीन	पं., सि. ०८/४८ तक, र. ०८/४८ तक, भ. २२/३७ से, व्या. १०/४४ तक
२४	बु	१५	२२	१५	रे	०९	२३	६.३९	५.५२	९.२७	२.४८	मेष ०९/२३	पं. ०९/२३ तक, मू. ०९/२३ से, भ. १०/३० तक, सूर्य स्वाती में ११/४५ से, कु. २२/१५ से, गाजबीज की अस्वाध्याय प्रारंभ **पक्खी**

दिनांक	वार	तिथि	बजे	मिनट	नक्षत्र	बजे	मिनट	सूर्योदय घं. मि.	सूर्यास्त घं. मि.	प्र.प्रहर घं. मि.	प्र. अ. घं. मि.	चन्द्रमा	विशेष विवरण
२५	गु	१	२१	२५	अ	०९	२६	६.४०	५.५१	९.२८	२.४८	मेष	व्य. ०६/०० से
२६	शु	२	२०	११	भ	०९	०४	६.४१	५.५१	९.२८	२.४७	वृष १४/५५	राज. ०९/०४ तक, व्य. ०३/४४ तक
२७	श	३	१८	३९	कृ	०८	२१	६.४१	५.४९	९.२८	२.४७	वृष	भ. ०७/२७ से १८/३९ तक, अ. ०८/२१ से (प्रयाणे वर्ज्य)
२८	र	४	१६	५६	रो/मृ	०७/०६	२४/११	६.४२	४.४८	९.२८	२.४६	मि. १८/५२	
२९	सो	५	१५	०५	आ	०५	०७	६.४३	५.४८	९.२९	२.४६	मिथुन	र. एवं कु. ०५/०७ से
३०	मं	६	१३	०९	पुन	०३	५२	६.४४	५.४७	९.३०	२.४६	कर्क १३/११	कु. १३/०९ तक, भ. १३/०९ से २४/११ तक, र. ०३/५२ तक, राज. ०३/५२ से
३१	बु	७	११	११	पु	०२	३५	६.४५	५.४६	९.३०	२.४५	कर्क	राज. ११/२१ तक
१	गु	८	०९	११	आ	०१	१८	६.४५	५.४६	९.३०	२.४५	सिंह ०१/१८	
२	शु	९/१०	०७/०५	११/१२	म	२४	००	६.४५	५.४५	९.३०	२.४५	सिंह	कु. ०७/११ से २४/०० तक, भ. १८/११ से ०५/१२ तक, मि. २४/०० से
३	श	११	०३	१५	पू.फा.	२२	४५	६.४६	५.४४	९.३०	२.४४	क. ०४/२७	वै. ०३/२३ से
४	र	१२	०१	२६	उ.फा.	२१	३६	६.४६	५.४३	९.३०	२.४४	कन्या	अ. २१/३६ से, वै. २४/४३ तक
५	सो	१३	२३	४९	ह	२०	३८	६.४७	५.४३	९.३१	२.४४	कन्या	भ. २३/४९ से, धनतेरस
६	मं	१४	२२	२९	चि	१९	५७	६.४८	५.४२	९.३२	२.४३	तुला ०८/१५	भ. ११/०६ तक, सूर्य विशाखा में १९/५४ से
७	बु	३०	२१	३४	स्वा	१९	३८	६.४९	५.४१	९.३२	२.४३	तुला	कु. २१/३४ से, दीपावली, भगवान् महावीर का २५४५वां निर्वाण कल्याणक दिवस **पक्खी**

दिनांक	वार	तिथि	बजे	मिनट	नक्षत्र	बजे	मिनट	सूर्योदय घं. मि.	सूर्यास्त घं. मि.	प्र.प्रहर घं. मि.	प्र. अ. घं. मि.	चन्द्रमा	विशेष विवरण
८	गु	१	२१	१०	वि	१९	५०	६.५०	५.४०	९.३३	२.४२	वृ. ११/४४	
९	शु	२	२१	२३	अ	२०	३६	६.५१	५.४०	९.३३	२.४२	वृश्चिक	राज. २०/३६ तक, आचार्यश्री तुलसी का १०५वां जन्म दिवस (अणुव्रत दिवस)
१०	श	३	२२	१५	ज्ये	२२	०१	६.५१	५.३९	९.३३	२.४२	धन २२/०१	र. २२/०१ से
११	र	४	२३	४७	मू	२४	०४	६.५२	५.३९	९.३४	२.४२	धन	सि. २४/०४ तक, भ. १०/५६ से २३/४७ तक, र. २४/०४ तक
१२	सो	५	०१	५३	पू.षा.	०२	३९	६.५३	५.३९	९.३४	२.४१	धन	र. ०२/३९ से, मृ. ०२/३९ से
१३	मं	६	०४	२४	उ.षा	०५	३८	६.५३	५.३८	९.३४	२.४१	म. ०१/२२	र. ०५/३८ तक
१४	बु	७	०	०	श्र	०	०	६.५४	५.३७	९.३५	२.४१	मकर	
१५	गु	७	०७	०५	श्र	०८	४६	६.५५	५.३७	९.३६	२.४०	कुंभ २२/१८	भ. ०७/०५ से २०/२५ तक, पं. २२/१८ से
१६	शु	८	०९	४१	ध	११	४७	६.५६	५.३६	९.३६	२.४०	कुंभ	पं., र. ११/४७ से, सूर्य वृश्चिक में १८/३३ से, व्या. १८/३१ से
१७	श	९	११	५५	श	१४	२६	६.५६	५.३५	९.३६	२.४०	कुंभ	पं., र. अहोरात्र, व्या. १९/०० तक
१८	र	१०	१३	३४	पू.भा.	१६	३२	६.५७	५.३४	९.३६	२.३९	मीन १०/०३	पं., र. १६/३२ तक, भ. ०२/०८ से
१९	सो	११	१४	३०	उ.भा.	१७	५६	६.५८	५.३४	९.३७	२.३९	मीन	पं., भ. १४/३० तक, सूर्य अनुराधा में ०१/५४ से
२०	मं	१२	१४	४१	रे	१८	३४	६.५९	५.३४	९.३८	२.३९	मेष १८/३४	पं. १८/३४ तक, अ. १८/३४ से (प्रवेशे वर्ज्य), व्या. १७/२५ से
२१	बु	१३	१४	०७	अ	१८	३१	७.००	५.३४	९.३९	२.३८	मेष	मृ. १८/३१ तक, र. १८/३१ से, व्या. १५/४२ तक
२२	गु	१४	१२	५४	भ	१७	५२	७.०१	५.३४	९.३९	२.३८	वृष २३/३६	भ. १२/५४ से २४/०५ तक, र. १७/५२ तक, यम. १७/५२ से, **चातुर्मासिक पक्खी**
२३	शु	१५	११	०९	कृ	१६	४२	७.०२	५.३४	९.४०	२.३८	वृष	कु. एवं यम. १६/४२ से

दिनांक	वार	तिथि	बजे	मिनट	नक्षत्र	बजे	मिनट	सूर्योदय घं. मि.	सूर्यास्त घं. मि.	प्र. प्रहर घं. मि.	प्र. अ. घं. मि.	चन्द्रमा	विशेष विवरण
२४	श	१/२	०९/०६	०२/३१	रो	१५	११	७.०३	५.३४	९.४१	२.३८	मि. ०३/२०	अ. १५/११ तक (प्रयाणे वर्ज्य)
२५	र	३	०४	०८	मृ	१३	२७	७.०४	५.३४	९.४१	२.३७	मिथुन	राज. १३/२७ तक, भ. १७/२४ से ०४/०८ तक
२६	सो	४	०१	३७	आ	११	३८	७.०५	५.३३	९.४२	२.३७	कर्क ०४/१७	कु. ०१/३७ से
२७	मं	५	२३	१०	पुन	०९	५१	७.०६	५.३३	९.४३	२.३७	कर्क	कु. ०९/५१ तक
२८	बु	६	२०	५३	पु/आ	०८/०६	१०/४०	७.०६	५.३३	९.४३	२.३७	सिंह ०६/४०	र. ०८/१० से ०६/४० तक, भ. २०/५३ से
२९	गु	७	१८	४८	म	०५	२२	७.०७	५.३३	९.४४	२.३६	सिंह	भ. ०७/४९ तक, वै. १३/०४ से
३०	शु	८	१६	५६	पू.फा.	०४	१९	७.०७	५.३३	९.४४	२.३६	सिंह	सि. ०४/१९ तक, वै. १०/१७ तक
१	श	९	१५	२१	उ.फा.	०३	३२	७.०७	५.३३	९.४४	२.३६	क. १०/०६	भ. ०२/४० से, मृ. एवं यम. ०३/३२ से
२	र	१०	१४	०२	ह	०३	०२	७.०८	५.३३	९.४४	२.३६	कन्या	अ. ०३/०२ तक, भ. १४/०२ तक, सूर्य ज्येष्ठा में ०६/१५ से, भगवान् महावीर का २५८७वां दीक्षा कल्याणक दिवस
३	सो	११	१३	०२	चि	०२	५१	७.०८	५.३३	९.४४	२.३६	तुला १४/५४	
४	मं	१२	१२	२२	स्वा	०३	०१	७.०९	५.३४	९.४५	२.३६	तुला	
५	बु	१३	१२	०५	वि	०३	३५	७.१०	५.३४	९.४६	२.३६	वृ. ३१/२५	भ. १२/०५ से २४/०६ तक, अ. ०३/३५ से
६	गु	१४	१२	१४	अ	०४	३७	७.११	५.३४	९.४७	२.३६	वृश्चिक	
७	शु	३०	१२	५२	ज्ये	०६	०८	७.११	५.३४	९.४७	२.३६	धन ०६/०८	ज्वा. ०६/०८ से, कु. ०६/०८ से **पक्खी**

दिनांक	वार	तिथि	बजे	मिनट	नक्षत्र	बजे	मिनट	सूर्योदय घं. मि.	सूर्यास्त घं. मि.	प्र. प्रहर घं. मि.	प्र. अ. घं. मि.	चन्द्रमा	विशेष विवरण
८	श	१	१४	०२	मू	०	०	७.१२	५.३४	९.४८	२.३५	धन	व्या. १४/०२ तक
९	र	२	१५	४२	मू	०८	०९	७.१३	५.३४	९.४८	२.३५	धन	सि. ०८/०९ तक, राज. ०८/०९ से
१०	सो	३	१७	५१	पू.षा.	१०	३९	७.१४	५.३४	९.४९	२.३५	म. १७/११	र. १०/३९ से, मृ. १०/३९ से
११	मं	४	२०	२३	उ.षा	१३	३१	७.१५	५.३४	९.५०	२.३५	मकर	भ. ०७/०५ से २०/२३ तक, र. १३/३१ तक, कु. २०/२३ से, व्या २२/४१ से
१२	बु	५	२३	०७	श्र	१६	३७	७.१६	५.३५	९.५०	२.३५	कुंभ ०६/१२	कु. १६/३७ तक, र. १६/३७ से, पं. ०६/१२ से, व्या. २३/४० तक
१३	गु	६	०१	५०	ध	१९	४६	७.१६	५.३५	९.५१	२.३५	कुंभ	पं., र. १९/४६ तक
१४	शु	७	०४	१७	श	२२	४३	७.१७	५.३५	९.५२	२.३४	कुंभ	पं., भ. ०४/१७ से
१५	श	८	०६	१४	पू.भा.	०१	१४	७.१८	५.३५	९.५२	२.३४	मीन १८/४०	पं., भ. १७/२० तक, र. ०१/१४ से, व्य. ०१/५२ से
१६	र	९	०	०	उ.भा.	०३	०८	७.१८	५.३६	९.५२	२.३४	मीन	पं., सूर्य धनु एवं मूल में ०९/११ से, र. ०९/११ तक, र. ०३/०८ से, व्य. ०१/४७ तक, मलमास प्रारम्भ
१७	सो	९	०७	३०	रे	०४	१७	७.१९	५.३६	९.५३	२.३४	मेष ०४/१७	र. अहोरात्र, पं. ०४/१७ तक, कु. ०४/१७ से
१८	मं	१०	०७	५७	अ	०४	३८	७.१९	५.३७	९.५४	२.३४	मेष	अ. ०४/३८ तक (प्रवेशे वर्ज्य), भ. १९/५३ से, र. एवं कु. ०४/३८ तक
१९	बु	११ / १२	०७ / ०६	३६ / २७	भ	०४	१२	७.२०	५.३७	९.५४	२.३४	मेष	भ. ०७/३६ तक, राज. ०७/३६ से ०४/१२ तक, सि. ०४/१२ से
२०	गु	१३	०४	३६	कृ	०३	०५	७.२०	५.३७	९.५४	२.३४	वृष ०९/५८	यम. ०३/०५ तक, र. ०३/०५ से
२१	शु	१४	०२	१०	रो	०१	२२	७.२१	५.३८	९.५५	२.३४	वृष	यम. ०१/२२ तक, र. ०१/२२ तक, भ. ०२/१० से, राज. ०२/१० से
२२	श	१५	२३	१९	मृ	२३	१५	७.२१	५.३८	९.५५	२.३४	मि. १२/२१	भ. १२/४७ तक **पक्खी**

दिनांक	वार	तिथि	बजे	मिनट	नक्षत्र	बजे	मिनट	सूर्योदय घं. मि.	सूर्यास्त घं. मि.	प्र.प्रहर घं. मि.	प्र. अ. घं. मि.	चन्द्रमा	विशेष विवरण
२३	र	१	२०	१३	आ	२०	५२	७.२२	५.३९	९.५६	२.३४	मिथुन	
२४	सो	२	१७	००	पुन	१८	२३	७.२२	५.३९	९.५६	२.३४	कर्क ११/००	भ. ०३/२४ से, वै. ०१/३९ से
२५	मं	३	१३	४९	पु	१५	५६	७.२३	५.४०	९.५७	२.३४	कर्क	राज. १३/४९ तक, भ. १३/४९ तक, वै. २१/५१ तक
२६	बु	४	१०	४९	आ	१३	४१	७.२३	५.४०	९.५७	२.३४	सिंह १३/४१	कु. १३/४१ से
२७	गु	५/६	०८/०५	०५/४४	म	११	४३	७.२४	५.४१	९.५८	२.३४	सिंह	र. ११/४३ से, भ. ०५/४४ से
२८	शु	७	०३	५१	पू.फा.	१०	०९	७.२४	५.४१	९.५८	२.३४	क. १५/४१	राज. एवं सि. १०/०९ तक, र. १०/०९ तक, भ. १६/४४ तक
२९	श	८	०२	२९	उ.फा.	०९	०२	७.२५	५.४२	९.५९	२.३४	कन्या	मृ. एवं यम. ०९/०२ से, सूर्य पूर्वाषाढ़ा में ११/२८ से
३०	र	९	०१	३८	ह	०८	२६	७.२५	५.४३	१०.००	२.३४	तुला २०/१९	अ. ०८/२६ तक
३१	सो	१०	०१	१९	चि	०८	२०	७.२५	५.४३	१०.००	२.३४	तुला	भ. १३/२४ से ०१/१९ तक, भगवान् पार्श्वनाथ जन्म कल्याणक दिवस
१	मं	११	०१	३१	स्वा	०८	४६	७.२५	५.४४	१०.००	२.३५	वृ. ०३/२४	कु. ०८/४६ से ०१/३१ तक
२	बु	१२	०२	१३	वि	०९	४१	७.२६	५.४५	१०.०१	२.३५	वृश्चिक	राज. ०९/४१ से ०२/१३ तक, अ. ०९/४१ से
३	गु	१३	०३	२३	अ	११	०५	७.२६	५.४५	१०.०१	२.३५	वृश्चिक	भ. ०३/२३ से
४	शु	१४	०४	५९	ज्ये	१२	५५	७.२७	५.४६	१०.०२	२.३५	धन १२/५५	भ. १६/०८ तक
५	श	३०	०७	००	मू	१५	०९	७.२७	५.४७	१०.०२	२.३५	धन	व्या. ०२/१४ से **पक्खी**

दिनांक	वार	तिथि	बजे	मिनट	नक्षत्र	बजे	मिनट	सूर्योदय घं. मि.	सूर्यास्त घं. मि.	प्र.प्रहर घं. मि.	प्र. अ. घं. मि.	चन्द्रमा	विशेष विवरण
६	र	१	०	०	पू.षा.	१७	४४	७.२७	५.४८	१०.०२	२.३५	म. २४/२६	व्या. ०२/५० तक
७	सो	१	०१	२०	उ.षा.	२०	३७	७.२७	५.४८	१०.०२	२.३५	मकर	मृ. २०/३७ तक, सि. २०/३७ से
८	मं	२	११	५६	श्र	२३	४२	७.२७	५.४९	१०.०२	२.३५	मकर	र. एवं राज. २३/४२ से
९	बु	३	१४	४०	ध	०२	५१	७.२७	५.५०	१०.०३	२.३६	कुंभ १३/१६	पं. १३/१६ से, राज. १४/४० तक, र. ०२/५१ तक, भ. ०४/०२ से, व्य. ०५/३६ से
१०	गु	४	१७	२३	श	०५	५५	७.२७	५.५१	१०.०३	२.३६	कुंभ	पं., भ. १७/२३ तक, र. ०५/५५ से, व्या. ०६/३० तक
११	शु	५	१९	५६	पू.भा.	०	०	७.२७	५.५२	१०.०३	२.३६	मीन ०३/०३	पं., कु. अहोरात्र, सूर्य उत्तराषाढ़ा में १३/२१ से, र. १३/२१ तक
१२	श	६	२२	०५	पू.भा.	०८	४४	७.२७	५.५२	१०.०३	२.३६	मीन	पं., र. ०८/४४ से
१३	र	७	२३	४२	उ.भा.	११	०६	७.२७	५.५३	१०.०३	२.३६	मीन	पं., राज. ११/०६ तक, र. ११/०६ तक, भ. २३/४२ से
१४	सो	८	२४	३७	रे	१२	५२	७.२७	५.५४	१०.०४	२.३७	मेष १२/५२	भ. १२/१५ तक, पं. १२/५२ तक, सूर्य मकर में १९/५३ से, मलमास समाप्त
१५	मं	९	२४	४५	अ	१३	५६	७.२७	५.५५	१०.०४	२.३७	मेष	अ. १३/५६ तक (प्रवेशे वर्ज्य), र. १३/५६ से
१६	बु	१०	२४	०३	भ	१४	१२	७.२७	५.५६	१०.०४	२.३७	वृष २०/०५	र. अहोरात्र, सि. १४/१२ से
१७	गु	११	२२	३४	कृ	१३	४०	७.२७	५.५७	१०.०५	२.३८	वृष	यम. १३/४० तक, भ. ११/२४से २२/३४तक, र. १३/४० तक
१८	शु	१२	२०	२३	रो	१२	२५	७.२७	५.५८	१०.०५	२.३८	मि. ११/३२	यम. १२/२५ तक, राज. १२/२५ से २०/२३ तक
१९	श	१३	१७	३६	मृ	१०	३१	७.२७	५.५९	१०.०५	२.३८	मिथुन	र. १०/३१ से, वै. १८/३८ से
२०	र	१४	१४	२०	आ / पु	०८ / ०५	०८ / २७	७.२६	५.५९	१०.०५	२.३८	कर्क २४/०६	र. ०८/०८ तक, भ. १४/२० से २४/३५ तक, राज ०५/२३ से, वै. १४/४३ तक **पक्सी**
२१	सो	१५ / १	१० / ०७	४७ / ०६	पु	०२	२८	७.२५	६.००	१०.०४	२.३९	कर्क	

दिनांक	वार	तिथि	बजे	मिनट	नक्षत्र	बजे	मिनट	सूर्योदय घं. मि.	सूर्यास्त घं. मि.	प्र.प्रहर घं. मि.	प्र. अ. घं. मि.	चन्द्रमा	विशेष विवरण
२२	मं	२	०३	२८	आ	२३	२३	७.२४	६.००	१०.०३	२.३९	सिंह २३/३३	
२३	बु	३	२४	०१	म	२०	४८	७.२४	६.०१	१०.०३	२.३९	सिंह	भ. १३/४२ से २४/०१ तक, राज. २०/४८ से २४/०१ तक
२४	गु	४	२०	५६	पू.फा.	१८	२३	७.२४	६.०२	१०.०३	२.३९	क. २३/५१	सूर्य श्रवण में १५/४२ से
२५	शु	५	१८	२०	उ.फा.	१६	२६	७.२४	६.०३	१०.०३	२.४०	कन्या	कु. १६/२६ से
२६	श	६	१६	२१	ह	१५	०६	७.२३	६.०३	१०.०३	२.४१	तुला ०३/४१	मृ. एवं यम १५/०६ तक, र. १५/०६ से, भ. १६/२१ से ०३/३७ तक, गणतंत्र दिवस
२७	र	७	१५	०४	चि	१४	२७	७.२२	६.०४	१०.०३	२.४१	तुला	राज. १४/२७तक, र. १४/२७तक
२८	सो	८	१४	३२	स्वा	१४	३०	७.२२	६.०५	१०.०३	२.४१	तुला	यम. १४/३० से
२९	मं	९	१४	४३	वि	१५	१६	७.२२	६.०६	१०.०३	२.४१	वृ. ०९/०१	कु. १४/४३ से १५/१६ तक, भ. ०३/०४से
३०	बु	१०	१५	३५	अ	१६	४१	७.२२	६.०७	१०.०३	२.४१	वृश्चिक	अ. १६/४१ तक, भ. १५/३५ तक, व्या. ०५/३६ से
३१	गु	११	१७	०३	ज्ये	१८	४१	७.२२	६.०८	१०.०३	२.४१	धन १८/४१	व्या. ०५/४८ तक
१	शु	१२	१९	०१	मू	२१	०९	७.२२	६.०९	१०.०३	२.४२	धन	
२	श	१३	२१	२१	पू.षा.	२३	५६	७.२२	६.०९	१०.०३	२.४२	म. ०५/४०	प. २१/२१ से
३	र	१४	२३	५४	उ.षा.	०२	५६	७.२१	६.१०	१०.०३	२.४२	मकर	प. १०/३६ तक
४	सो	३०	०२	३५	श्र	०६	०२	७.२१	६.११	१०.०३	२.४२	मकर	सि. ०६/०२ तक, कु. ०२/३५ से ०६/०२ तक, व्या ०८/०० से, **पक्सी**

दिनांक	वार	तिथि	बजे	मिनट	नक्षत्र	बजे	मिनट	सूर्योदय घं. मि.	सूर्यास्त घं. मि.	प्र.प्रहर घं. मि.	प्र. अ. घं. मि.	चन्द्रमा	विशेष विवरण
५	मं	१	०५	१७	ध	०	०	७.२०	५.१२	१०.०३	२.४४	कुंभ ११/३६	पं. ११/३६ से, राज. ०५/१७से, व्य. ०८/५७तक
६	बु	२	०	०	ध	०९	०९	७.१९	५.१३	१०.०३	२.४४	कुंभ	पं., राज. ०९/०९ तक, सूर्य धनिष्ठा में १८/४८ से
७	गु	२	०७	५३	श	१२	१०	७.१९	५.१४	१०.०३	२.४४	कुंभ	पं.
८	शु	३	१०	१९	पू.भा.	१४	५९	७.१८	६.१५	१०.०२	२.४४	मीन ०८/१८	पं., र. १४/५९ से, भ. २३/२५ से
९	श	४	१२	२७	उ.भा.	१७	३१	७.१७	६.१६	१०.०२	२.४५	मीन	पं., भ. १२/२७ तक, र. १७/३१ तक
१०	र	५	१४	१०	रे	१९	३८	७.१६	६.१७	१०.०१	२.४५	मेष १९/३८	पं. १९/३८ तक, र. १९/३८ से, बसंत पंचमी
११	सो	६	१५	२१	अ	२१	१३	७.१५	६.१७	१०.००	२.४६	मेष	कु. १५/२१ तक, र. २१/१३ तक
१२	मं	७	१५	५५	भ	२२	११	७.१४	६.१८	१०.००	२.४६	वृष ०४/२०	राज. १५/५५ तक, भ. १५/५५ से ०३/५७ तक, ज्वा. २२/११ से १५५वां मर्यादा महोत्सव
१३	बु	८	१५	४७	कृ	२२	२७	७.१४	६.१८	१०.००	२.४६	वृष	सि. २२/२७ तक, सूर्य कुंभ में ०८/५० से, ज्वा. १५/४७ तक, ज्वा. २२/२७ से, र. २२/२७ से
१४	गु	९	१४	५५	रो	२२	०१	७.१३	६.१९	९.५९	२.४७	वृष	र. अहोरात्र, ज्वा. १४/५५ तक, मृ. २२/०१ से, वै. ०८/३५ से ०६/१६ तक
१५	शु	१०	१३	१८	मृ	२०	५३	७.१२	६.२०	९.५९	२.४७	मि. ०९/३२	र. २०/५३ तक, भ. २४/१५ से
१६	श	११	११	०२	आ	१९	०६	७.१२	६.२१	९.५९	२.४७	मिथुन	भ. ११/०२ तक
१७	र	१२/१३	०८/०४	११/५२	पुन	१६	४७	७.११	६.२१	९.५९	२.४८	कर्क ११/२३	र. १६/४७ से
१८	सो	१४	०१	१२	पु	१४	०२	७.१०	६.२२	९.५८	२.४८	कर्क	र. १४/०२ तक, भ. ०१/१२ से
१९	मं	१५	२१	२५	आ	११	०४	७.१०	६.२३	९.५८	२.४८	सिंह ११/०४	भ. ११/१९ तक, कु. २१/२५ से, सूर्य शतभिषा में २३/१९ से, **पक्खी**

दिनांक	वार	तिथि	बजे	मिनट	नक्षत्र	बजे	मिनट	सूर्योदय घं. मि.	सूर्यास्त घं. मि.	प्र.प्रहर घं. मि.	प्र. अ. घं. मि.	चन्द्रमा	विशेष विवरण
२०	बु	१	१७	३८	म / पू.फा.	०८ / ०५	०१ / ०५	७.०९	६.२३	९.५७	२.४८	सिंह	कु. ०८/०१ तक, राज. १७/३८ से ०५/०५ तक
२१	गु	२	१४	०४	उ.फा.	०२	२८	७.०८	६.२४	९.५७	२.४९	क. १०/२४	भ. २४/२५ से
२२	शु	३	१०	५३	ह	२४	२०	७.०७	६.२४	९.५६	२.४९	कन्या	भ. १०/५३ तक
२३	श	४ / ५	०८ / ०६	१३ / १५	चि	२२	५०	७.०६	६.२५	९.५६	२.५०	तुला ११/२९	सि. २२/५० से
२४	र	६	०५	०६	स्वा	२२	०५	७.०५	६.२५	९.५५	२.५०	तुला	र. २२/०५ से, भ. ०५/०६ से
२५	सो	७	०४	४९	वि	२२	१०	७.०४	६.२६	९.५४	२.५१	वृ. १६/०३	यम. २२/१० तक, भ. १६/५१ तक, र. २२/१० तक, व्या. १२/०२ से
२६	मं	८	०५	२२	अ	२३	०६	७.०३	६.२७	९.५४	२.५२	वृश्चिक	व्या. १०/४८ तक
२७	बु	९	०६	४३	ज्ये	२४	४७	७.०२	६.२७	९.५३	२.५२	धन २४/४७	यम. २४/४७ से, कु. ०६/४३ से
२८	गु	१०	०	०	मू	०३	०८	७.०१	६.२८	९.५३	२.५२	धन	भ. १९/३८ से
१	शु	१०	०८	४१	पू.षा.	०५	५६	६.५९	६.२९	९.५२	२.५३	धन	भ. ०८/४१ तक, व्य. १०/४५ से
२	श	११	११	०६	उ.षा.	०	०	६.५८	६.३०	९.५१	२.५३	म. १३/४१	व्य. ११/३२ तक
३	र	१२	१३	४६	उ.षा.	०९	०१	६.५७	६.३०	९.५०	२.५३	मकर	
४	सो	१३	१६	३०	श्र	१२	११	६.५६	६.३०	९.५०	२.५३	कुंभ ०१/४५	सि. १२/११ तक, भ. १६/३० से ०५/५० तक, पं. ०१/४५ से, सूर्य पूर्वा भाद्रपद में ०५/३७ से
५	मं	१४	१९	०८	ध	१५	१८	६.५५	६.३१	९.४९	२.५४	कुंभ	पं., मृ. १५/१८ से
६	बु	३०	२१	३५	श	१८	१४	६.५४	६.३१	९.४८	२.५४	कुंभ	पं., कु. २१/३५ से **पक्खी**

दिनांक	वार	तिथि	बजे	मिनट	नक्षत्र	बजे	मिनट	सूर्योदय घं. मि.	सूर्यास्त घं. मि.	प्र.प्रहर घं. मि.	प्र. अ. घं. मि.	चन्द्रमा	विशेष विवरण
७	गु	१	२३	४५	पू.भा.	२०	५४	६.५३	६.३२	९.४८	२.५५	मीन १४/१६	पं.,
८	शु	२	०१	३५	उ.भा.	२३	१७	६.५२	६.३३	९.४७	२.५५	मीन	पं., राज. २३/१७ तक, अ. २३/१७ से
९	श	३	०३	०४	रे	०१	१९	६.५१	६.३४	९.४७	२.५६	मेष ०१/१९	पं. ०१/१९ तक, र. ०१/१९ से
१०	र	४	०४	०८	अ	०२	५८	६.५०	६.३४	९.४६	२.५६	मेष	भ. १५/३९ से ०४/०८ तक, र. ०२/५८ तक, ज्वा. ०४/०८ से
११	सो	५	०४	४४	भ	०४	१०	६.४९	६.३४	९.४५	२.५६	मेष	ज्वा. ०४/१० तक, र. ०४/१० से, वै. १६/०४ से
१२	मं	६	०४	५१	कृ	०४	५४	६.४८	६.३५	९.४५	२.५७	वृष १०/२४	र. ०४/५४ तक, वै. १५/१४ तक
१३	बु	७	०४	२४	रो	०५	०६	६.४७	६.३५	९.४४	२.५७	वृष	प. ०४/२४ से
१४	गु	८	०३	२२	मृ	०४	४३	६.४६	६.३६	९.४४	२.५७	मि. १६/५९	मृ. ०४/४३ तक, भ. १५/५८ तक, र. ०४/४३ से, सूर्य मीन में ०५/४१ से, मलमास प्रारम्भ
१५	शु	९	०१	४५	आ	०३	४५	६.४५	६.३७	९.४३	२.५७	मिथुन	र. अहोरात्र, कु. ०३/४५ से
१६	श	१०	२३	३३	पुन	०२	१३	६.४४	६.३८	९.४२	२.५८	कर्क २०/३९	र. ०२/१३ तक
१७	र	११	२०	५१	पु	२४	१२	६.४३	६.३९	९.४२	२.५९	कर्क	भ. १०/१६ से २०/५१ तक, राज. २०/५१ से २४/१२ तक
१८	सो	१२	१७	४५	आ	२१	४७	६.४२	६.३९	९.४१	२.५९	सिंह २१/४७	सूर्य उत्तराभाद्रपद में १४/०१ से
१९	मं	१३	१४	१९	म	१९	०६	६.४१	६.३९	९.४०	२.५९	सिंह	र. १९/०६ से
२०	बु	१४	१०	४६	पू.फा.	१६	१८	६.४०	६.३९	९.४०	३.००	क. २१/३७	राज. १०/४६ से १६/१८ तक, भ. १०/४६ से २१/०० तक, र. १६/१८ तक, होलिका
२१	गु	१५/१	०७/०३	१४/५४	उ.फा.	१३	३५	६.३९	६.४०	९.३९	३.००	कन्या	धुलेटी **चातुर्मासिक पक्खी**

दिनांक	वार	तिथि	बजे	मिनट	नक्षत्र	बजे	मिनट	सूर्योदय घं. मि.	सूर्यास्त घं. मि.	प्र.प्रहर घं. मि.	प्र. अ. घं. मि.	चन्द्रमा	विशेष विवरण
२२	शु	२	२४	५८	ह	११	०८	६.३८	६.४१	९.३९	३.०१	तुला २२/०४	राज. ११/०८ से, व्या. ०१/४४ से
२३	श	३	२२	३५	चि	०९	०७	६.३६	६.४१	९.३७	३.०१	तुला	सि. ०९/०७ से, भ. ११/४२ से २२/३५ तक, व्या. २२/३८ तक
२४	र	४	२०	५४	स्वा	०७	४३	६.३५	६.४२	९.३७	३.०२	वृ. ०१/११	
२५	सो	५	२०	०२	वि	०७	०५	६.३३	६.४३	९.३६	३.०३	वृश्चिक	कु. एवं यम. ०७/०५ तक
२६	मं	६	२०	०४	अ	०७	१७	६.३२	६.४३	९.३५	३.०३	वृश्चिक	र. ०७/१७ से, भ. २०/०४ से, व्य. १७/०५ से
२७	बु	७	२०	५७	ज्ये	०८	२१	६.३१	६.४४	९.३४	३.०३	धन ०८/२१	र. ०८/२१ तक, यम. ०८/२१ से, भ. ०८/२५ तक, व्य. १६/३६ तक
२८	गु	८	२२	३६	मू.	१०	१२	६.३०	६.४४	९.३४	३.०३	धन	भगवान ऋषभ दीक्षा कल्याणक दिवस (वर्षीतप प्रारम्भ)
२९	शु	९	२४	५०	पू.षा.	१२	४२	६.२९	६.४५	९.३३	३.०४	म. १६/२४	
३०	श	१०	०३	२४	उ.षा	१५	३९	६.२८	६.४५	९.३२	३.०४	मकर	भ. १४/०५ से ०३/२४ तक
३१	र	११	०६	०६	श्र	१८	४८	६.२७	६.४५	९.३१	३.०४	मकर	सूर्य रेवती में २४/५५ से, राज. ०६/०६ से
१	सो	१२	०	०	ध	२१	५५	६.२६	६.४६	९.३१	३.०५	कुंभ ०८/२२	पं. ०८/२२ से
२	मं	१२	०८	४०	श	२४	५०	६.२५	६.४६	९.३०	३.०५	कुंभ	पं., मृ. २४/५० तक
३	बु	१३	१०	५७	पू.भा.	०३	२५	६.२४	६.४६	९.२९	३.०५	मीन २०/४८	पं., भ. १०/५७ से २३/५८ तक
४	गु	१४	१२	५२	उ.भा.	०५	३८	६.२३	६.४७	९.२९	३.०६	मीन	पं.
५	शु	३०	१४	२१	रे	०	०	६.२२	६.४७	९.२८	३.०६	मीन	पं., अ. अहोरात्र, वै. २२/०८ से **पक्खी**

		कोलकाता		दिल्ली		मुम्बई		चेन्नई		बैंगलोर		जोधपुर	
महीना		सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त
जनवरी	१	६.१७	५.०३	७.१४	५.३५	७.१२	६.१२	६.२९	५.५४	६.४२	६.०४	७.२८	५.५२
	१५	६.१९	५.१२	७.१५	५.४६	७.१५	६.२१	६.३४	६.०३	६.४६	६.१२	७.३१	६.०१
फरवरी	१	६.१६	५.२४	७.१०	६.००	७.१३	६.३१	६.३८	६.२१	६.४७	६.२१	७.२३	६.१५
	१५	६.०९	५.३२	७.००	६.११	७.०८	६.३८	६.३०	६.१६	६.४३	६.२५	७.१४	६.२५
मार्च	१	५.५८	५.४०	६.४७	६.२०	६.५८	६.४४	६.२४	६.१८	६.३६	६.२८	७.०५	६.३३
	१५	५.४६	५.४६	६.३२	६.२९	६.४८	६.४८	६.१६	६.२०	६.२७	६.३१	६.५१	६.४१
अप्रैल	१	५.३०	५.५२	६.१२	६.३९	६.३३	६.५२	६.०५	६.२१	६.१७	६.३१	६.३४	६.५०
	१५	५.१७	५.५७	५.५६	६.४७	६.२२	६.५६	५.५७	६.२२	६.०८	६.३२	६.१९	६.५६
मई	१	५.०४	६.०३	५.४१	६.५६	६.११	७.०२	५.४९	६.२४	५.५९	६.३५	६.०४	७.०५
	१५	४.५७	६.०९	५.३१	७.०४	६.०५	७.०६	५.४५	६.२८	५.५४	६.३८	५.५५	७.१२
जून	१	४.५२	६.१७	५.२४	७.१४	६.०१	७.१२	५.४३	६.३२	५.५२	६.४२	५.४९	७.२०
	१५	४.५२	६.२२	५.२३	७.२०	६.०१	७.१७	५.४५	६.३७	५.५३	६.४७	५.४८	७.२६
जुलाई	१	४.५५	६.२५	५.२७	७.२३	६.०५	७.२०	५.४८	६.३९	५.५८	६.५०	५.५१	७.२९
	१५	५.०१	६.२४	५.३३	७.२१	६.१०	७.१९	५.५२	६.३९	६.०१	६.५०	५.५८	७.२७
अगस्त	१	५.०८	६.१७	५.४२	७.१२	६.१६	७.१४	५.५५	६.३६	६.०५	६.४७	६.०५	७.२१
	१५	५.१३	६.०८	५.५०	७.०१	६.२०	७.०६	५.५८	६.२९	६.०८	६.४०	६.१३	७.११
सितम्बर	१	५.१९	५.५४	५.५९	६.४३	६.२४	६.५३	५.५९	६.१९	६.०९	६.३१	६.१९	६.५५
	१५	५.२३	५.४०	६.०६	६.२६	६.२६	६.४१	५.५८	६.०९	६.०९	६.२१	६.२४	६.४०
अक्टूबर	१	५.२८	५.२४	६.१४	६.०७	६.२९	६.२७	५.५८	५.५८	६.१०	६.१०	६.३३	६.२२
	१५	५.३३	५.१२	६.२२	५.५२	६.३३	६.१६	५.५९	५.४९	६.११	६.०१	६.४०	६.०७
नवम्बर	१	५.४२	४.५९	६.३३	५.३६	६.३९	६.०५	६.०२	५.४२	६.१४	५.५४	६.४९	५.५३
	१५	५.४९	४.४३	६.४४	५.२७	६.४६	६.००	६.०७	५.३९	६.२०	५.५०	७.००	५.४४
दिसंबर	१	६.००	४.५१	६.५६	५.२४	६.५६	६.००	६.१३	५.४१	६.२६	५.५१	७.११	५.४२
	१५	६.०९	४.५४	७.०६	५.२६	७.०४	६.०४	६.२२	५.४६	६.३४	५.५६	७.२१	५.४३

नक्षत्र से राशि और नामाक्षर का ज्ञान

जिस दिन बालक का जन्म हो, उस समय का नक्षत्र पंचांग में देखें, फिर नक्षत्र के अनुसार नाम का अक्षर और राशि नीचे लिखी तालिका से जानें–

अक्षर	नक्षत्र	राशि	अक्षर	नक्षत्र	राशि
चू चे चो ला	अश्विनी	मेष	पे पो, रा री	चित्रा	कन्या-२, तुला-२
ली लू ले लो	भरणी	मेष	रू रे रो ता	स्वाति	तुला
आ, ई उ ए	कृतिका	मेष-१, वृष-३	ती तू ते, तो	विशाखा	तुला-३, वृश्चिक-१
ओ वा वी वू	रोहिणी	वृष	ना नी नू ने	अनुराधा	वृश्चिक
वे वो, क की	मृगशिरा	वृष-२, मिथुन-२	नो या यी यु	ज्येष्ठा	वृश्चिक
कु घ ङ छ	आर्द्रा	मिथुन	ये यो भा भी	मूल	धन
के को ह, ही	पुनर्वसु	मिथुन-३, कर्क-१	भू धा फा ढ़ा	पूर्वाषाढ़ा	धन
हु हे हो डा	पुष्य	कर्क	भे, भो जा जी	उत्तराषाढ़ा	धन-१, मकर-३
डी डू डे डो	आश्लेषा	कर्क	खा खू खे खो	श्रवण	मकर
मा मी मू मे	मघा	सिंह	गा गी, गू गे	धनिष्ठा	मकर-२, कुम्भ-२
मो टा टी टू	पूर्वाफाल्गुनी	सिंह	गो सा सि सू	शतभिषा	कुम्भ
टे, टो प पी	उत्तराफाल्गुनी	सिंह-१, कन्या-३	से सो द, दि	पूर्वाभाद्रपद	कुम्भ-३, मीन-१
पू ष णा ठ	हस्त	कन्या	दू थ झ ञ	उत्तराभाद्रपद	मीन
			दे दो च ची	रेवती	मीन

राशि स्वामी–मेष और वृश्चिक का मंगल, वृषभ और तुला का शुक्र, मिथुन और कन्या का बुध, कर्क का चन्द्र, सिंह का सूर्य, धन और मीन का गुरु, मकर और कुंभ का स्वामी शनि होता है।

गुरु-दर्शन के लिए नक्षत्र

रोहिणी, मृगशिरा, पुष्य, उत्तराषाढ़ा, उत्तराफाल्गुनी, उत्तराभाद्रपद, रेवती, अश्विनी, ज्येष्ठा, श्रवण, अनुराधा तथा शुभ वार।

घात-चक्रम्

घात तिथि घातवार: घातनक्षत्रमेव च। यात्रायां वर्जये प्राज्ञैरन्य कर्मसुशोभनम्।।

राशि—	मेष	वृषभ	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धन	मकर	कुम्भ	मीन
घात मास—	कार्तिक	मिगसर	आषाढ़	पोष	ज्येष्ठ	भाद्रपद	माघ	आश्विन	श्रावण	वैशाख	चैत्र	फाल्गुन
घात तिथि—	१-६-११	५-१०-१५	२-७-१२	२-७-१२	३-८-१३	५-१०-१५	४-९-१४	१-६-११	३-८-१३	४-९-१४	३-८-१३	५-१०-१५
घात वार—	रविवार	शनिवार	सोमवार	बुधवार	शनिवार	शनिवार	गुरुवार	शुक्रवार	शुक्रवार	मंगलवार	गुरुवार	शुक्रवार
घात नक्षत्र—	मघा	हस्त	स्वाति	अनुराधा	मूल	श्रवण	शतभिषा	रेवती	भरणी	रोहिणी	आर्द्रा	आश्लेषा
घात प्रहर—	१	४	३	१	१	१	४	१	१	४	३	४
पु. घात चंद्र	मेष	कन्या	कुंभ	सिंह	मकर	मिथुन	धन	वृषभ	मीन	सिंह	धन	कुंभ
स्त्री घात चंद्र	मेष	धन	धन	मीन	वृश्चिक	वृश्चिक	मीन	धन	कन्या	वृश्चिक	मिथुन	कुंभ

आचार्यश्री महाश्रमणजी द्वारा घोषित आगामी चातुर्मास एवं मर्यादा महोत्सव

चातुर्मास (वर्ष)	स्थान	मर्यादा महोत्सव (वर्ष)	स्थान
सन् २०१८	चेन्नई (तमिलनाडु)	सन् २०१८	कटक (उड़ीसा)
सन् २०१९	बेंगलुरू (कर्नाटक)	सन् २०१९	कोयम्बतूर (तमिलनाडु)
सन् २०२०	हैदराबाद (तेलंगाना)		

यात्रा में चंद्र विचार

मेषे च सिंहे धन पूर्व भागे, वृषे च कन्या मकरे च याम्ये।
युग्मे तुले कुंभसु पश्चिमायां, कार्कालि मीने दिशिचोत्तरस्याम्॥

अर्थ— मेष, सिंह, धन पूर्व। वृष कन्या, मकर दक्षिण।
मिथुन, तुला, कुंभ पश्चिम। कर्क, वृश्चिक, मीन, उत्तर।

फलम्— सन्मुखे अर्थलाभाय, दक्षिणे सुखसंपदा।
पृष्ठे तु प्राणनाशाय, वामे चंद्रे धनक्षयः॥

अर्थ— सन्मुख का चन्द्रमा, धनदाता दाहिना सुखदाता।
पीठ का प्राण-हर्ता और बायां धन-हर्ता।

यात्रा में योगिनी विचार

ईशान ३०/८	पूर्व १/९	अग्नि ३/११
उत्तर २/१०	योगिनी सुखदा वामे। पृष्ठे वांछित दायिनी॥ दक्षिणे धनहंत्री च। सन्मुखे मरणप्रदा॥	दक्षिण ५/१३
वायव्य ७/१५	पश्चिम ६/१४	नैऋत्य ४/१२

दिशाशूल-विचार-चक्रम्

	पूर्व चन्द्र, शनि	
उत्तर मंगल, बुध	दिशाशूल ले जावो वामे। राहु योगिनी पूठ॥ सन्मुख लेवै चन्द्रमा। लावे लक्ष्मी लूट॥	दक्षिण गुरु
	रवि, शुक्र पश्चिम	

काल-राहू-विचार-चक्रम्

ईशान	पूर्व शनि	अग्नि शुक्र
उत्तर रवि	अर्कोत्तरो वायुदिशा च सोमे भौमे प्रतीच्यां बुधनैऋते च याम्ये गुरौ वह्निदिशा च शुक्रे मंदे च पूर्वे प्रवदंति काल।	दक्षिण गुरु
सोम वायव्य	मंगल पश्चिम	बुध नैऋत्य

अभिजित मुहूर्त—दिनमान का आधा करने से जो समय प्राप्त हो उस समय से २४ मिनट पहले और २४ मिनट बाद तक अभिजित मुहूर्त रहता है, जो नगर प्रवेश आदि में श्रेष्ठ माना जाता है। इस मुहूर्त का बुधवार के दिन निषेध है।

सुयोग-कुयोग चक्र

योग	तिथि या नक्षत्र	रविवार	सोमवार	मंगलवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार
सिद्धि	तिथि			३,८,१३ (जया)	२,७,१२ (भद्रा)	५,१०,१५ (पूर्णा)	१,६,११ (नंदा)	४,९,१४ (रिक्ता)
	—नक्षत्र	मूल	श्रवण	उ. भाद्रपद	कृतिका	पुनर्वसु	पू. फा.	स्वाति
अमृतसिद्धि	—नक्षत्र	हस्त	मृगशिरा	अश्विनी	अनुराधा	पुष्य	रेवती	रोहिणी
सर्वार्थसिद्धि	—नक्षत्र	मू. ह. पुष्य अश्वि. रे. उत्तरा-३	अनु. श्र.रो. कृ. पुष्य	उ.भा.अश्वि. कृ. आश्ले.	ह. कृ.रो. मू. अनु.	पुन.पुष्य.रे. अनु. अश्वि.	अश्वि.रे. श्र. पुन. अनु.	रो. स्वा. श्र.
आनन्द	—नक्षत्र	अश्वि.	मृ.	आश्ले.	ह.	अनु.	उ. षा.	श.
मृत्यु	तिथि—	१,६,११	२,७,१२	१,६,११	३,८,१३	४,९,१४	२,७,१२	५,१०,१५
	—नक्षत्र	अनु.	उ.षा.	शत.	अश्वि.	मृग.	आश्ले.	हस्त.
कालयोग	—नक्षत्र	भ.	आर्द्रा	म.	चि.	ज्ये.	अभि.	पू. भा.

विशेष सुयोग (१) २,३,७,१२,१५ तिथि, रविवार, मंगलवार, बुधवार, शुक्रवार तथा भरणी, मृगशिरा, पुष्य, पू. षा, चित्रा, अनुराधा, धनिष्ठा, उ.भा. नक्षत्र—इनमें तीनों का सुयोग मिलने पर राजयोग बनता है, जो विशेष सिद्धि-दायक है।

(२) १,५,६,१०,११ तिथि, सोम, मंगल, बुध, शुक्रवार तथा अश्वि., रो., पुन., मघा, ह., वि., मू., श्र., पू. भ. नक्षत्र—इनमें तीनों का संयोग मिलने पर कुमार योग बनता है, जो शुभ है।

विशेष कुयोग—यदि एकम तिथि को मूल नक्षत्र हो, पंचमी को भरणी हो, अष्टमी को कृतिका हो, नवमी को रोहिणी हो, दशमी को आश्लेषा हो तो ज्वालामुखी योग बनता है, जो सब कार्यों में वर्जित है।

ज्ञातव्य— (क) सुयोग और कुयोग दोनों होने पर कुयोग का फल नहीं रहता।

(ख) अभिजित नक्षत्र—उत्तराषाढ़ा का चौथा चरण तथा श्रवण का प्रथम पन्द्रहवां भाग अभिजित नक्षत्र होता है।

पौरसी प्रमाण

दिनांक	पग	आंगुल	घंटा	मिनट
२१ अप्रैल	२	८	३	१२
२२ मई	२	४	३	२२
२२ जून	२	०	३	२७
२४ जुलाई	२	४	३	२२
२४ अगस्त	२	८	३	१२
२३ सितम्बर	३	०	३	०
२३ अक्टूबर	३	४	२	४८
२१ नवम्बर	३	८	२	३८
२२ दिसम्बर	४	०	२	३४
२० जनवरी	३	८	२	३८
२१ फरवरी	३	४	२	४८
२० मार्च	३	०	३	०

राहू-काल

वार	समय	राहू-काल बेला
रवि	सायं	४-३० से ६-००
सोम	प्रातः	७-३० से ९-००
मंगल	मध्याह्न	३-०० से ४-३०
बुध	मध्याह्न	१२-०० से १-३०
गुरु	मध्याह्न	१-३० से ३-००
शुक्र	प्रातः	१०-३० से १२-००
शनि	प्रातः	९-०० से १०-३०

टिप्पण :–राहू-काल (समय) में यात्रा करना वर्जित है।

दिन के चौघड़िये

रविवार	सोमवार	मंगलवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार
उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल	काल
चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ
लाभ	शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग
अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल	काल	उद्वेग
काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल
शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ
रोग	लाभ	शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत
उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल	काल

रात्रि के चौघड़िये

रविवार	सोमवार	मंगलवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार
शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ
अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल	काल	उद्वेग
चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ
रोग	लाभ	शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत
काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल
लाभ	शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग
उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल	काल
शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ

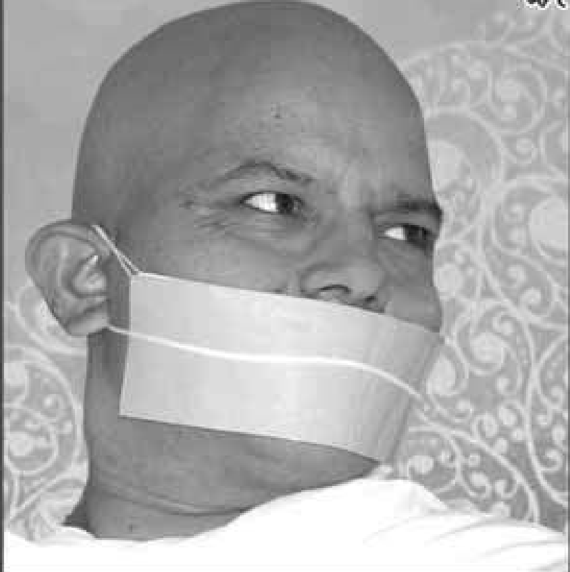

हर व्यक्ति के जीवन में अच्छाइयां और कमियां दोनों होती है। यदि कमियों को दूर करने और अच्छाइयों को विकसित करने का प्रयास होता है तो जीवन अच्छा बन जाता है।

-आचार्य महाश्रमण

श्रद्धावनत

पूज्य पिताजी स्व. रणजीतसिंह जी बैद की पुण्य स्मृति में

प्रकाश प्रमोद बैद

लाडनूं-कोलकाता

हम समता का कवच धारण कर लें।
फिर बाहर की परिस्थितियां हमें प्रभावित
नहीं कर सकेगी, दुःखी नहीं बना सकेगी।

-आचार्य महाश्रमण

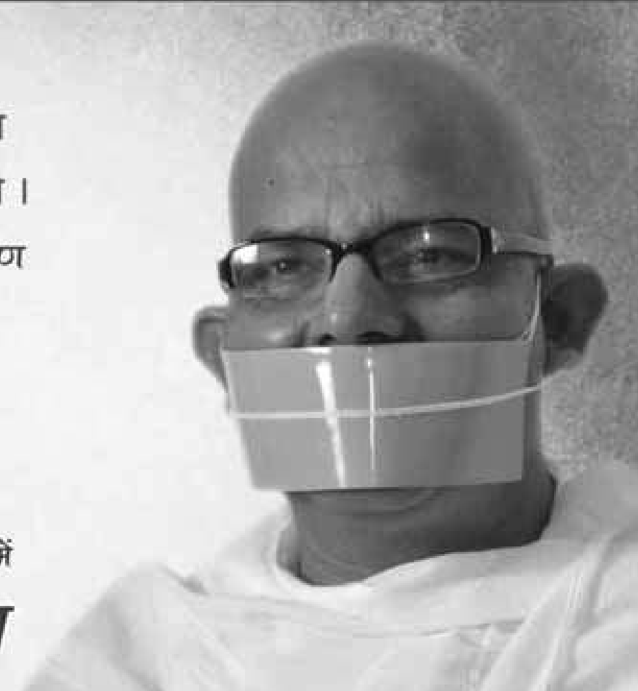

श्रद्धावनत

पूज्य पिताजी स्व. रतनलालजी सेठिया की पुण्य स्मृति में

विजय सोहन सेठिया

सरदारशहर-चेन्नई

तात्कालिक लाभ को अधिक महत्त्व मत दो।
धैर्य रखो व दीर्घकालिक लाभ पर चिन्तन को केन्द्रित करो।

–आचार्य महाश्रमण

श्रद्धावनत

सम्पतदेवी लुणिया
विनोद, दीपक लुणिया

सरदारशहर–कोयम्बटूर

OSWAL Weldmesh Pvt. Ltd. | SAPPHIRE Weld & Wire Private Limited

17, Mill Road, Coimbatore - 641 001
Ph. : 0422 - 2395799 / 2399799, 93677 35799, 98430 13799
E : vinodlunia@gmail.com | W : www.oswalweldmesh.com

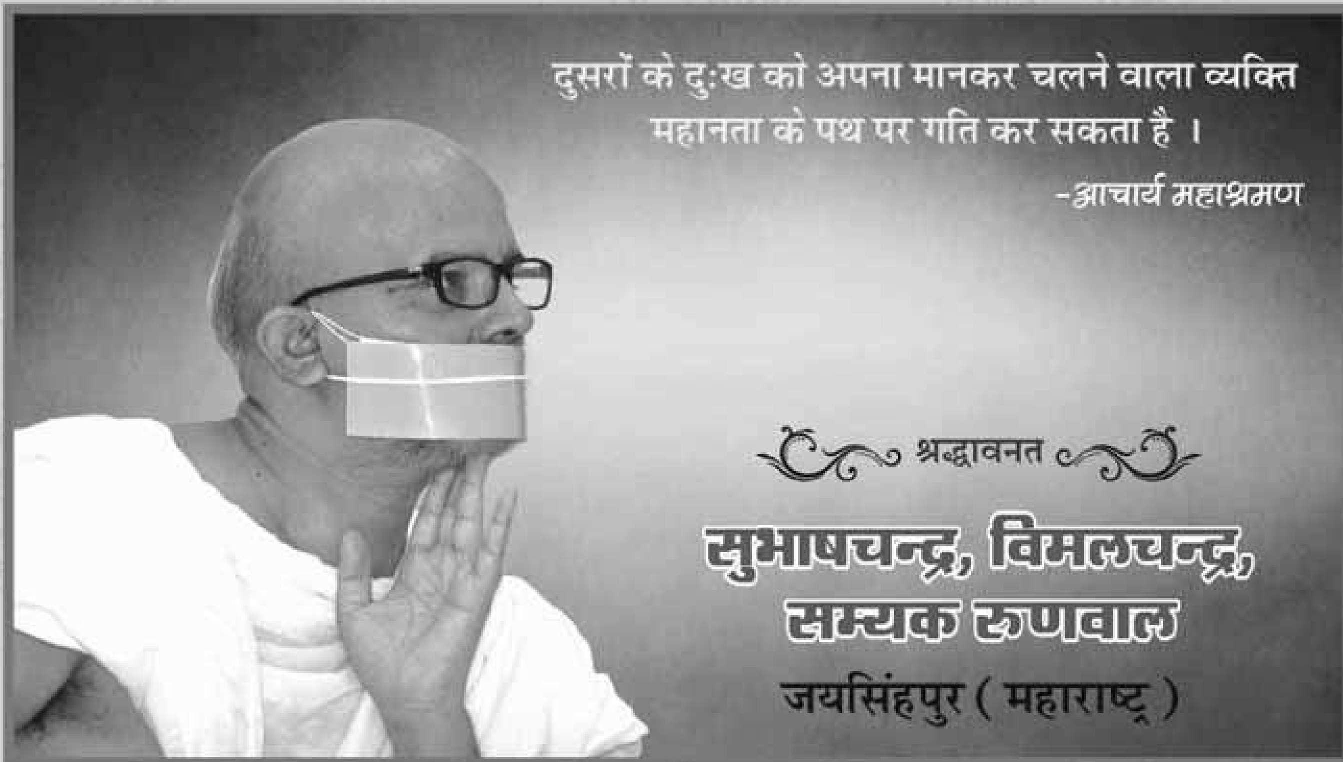
दुसरों के दुःख को अपना मानकर चलने वाला व्यक्ति
महानता के पथ पर गति कर सकता है ।
-आचार्य महाश्रमण
श्रद्धावनत
सुभाषचन्द्र, विमलचन्द्र,
सम्यक रुणवाल
जयसिंहपुर (महाराष्ट्र)

अध्यात्म ऊर्जा का केन्द्र : जैन विश्व भारती

विश्व इतिहास में मानव संस्कृति को सार्थक दिशा देने वाले महापुरुषों में क्रांतिकारी द्रष्टा, विश्वसंत गणाधिपति गुरुदेव श्री तुलसी एवं आचार्यश्री महाप्रज्ञजी के स्वप्नों की साकार प्रतिमान जैन विश्व भारती की स्थापना शिक्षा, शोध साधना एवं सेवा के विशेष उद्देश्यों के साथ सन् 1970 में राजस्थान के नागौर जिले के लाडनूं नगर में हुई। जैन विश्व भारती अहिंसा और शांति का अनुपम सांस्कृतिक केन्द्र है। शिक्षा, शोध, साहित्य, साधना, सेवा, संस्कृति और समन्वय इन सात महान प्रवृत्तियों को अपने आप में समेटे हुए यह संस्था तपोवन का रूप ले चुकी है और यहां के प्रकंपन यह इंगित दे रहे हैं कि यह प्राचीन काल से कोई तपोभूमि रही है। तेरापंथ धर्मसंघ के ग्यारहवें अधिशास्ता आचार्यश्री महाश्रमणजी के आध्यात्मिक संरक्षण व निर्देशन में संस्था निरन्तर गतिशील है।

शिक्षा

जैन विश्व भारती की स्थापना जिन उद्देश्यों को लेकर हुई थी उनमें से एक मुख्य प्रवृत्ति है–शिक्षा। इस उद्देश्य की पूर्ति यहां प्राथमिक से विश्वविद्यालय स्तर तक समस्त शैक्षणिक गतिविधियां संचालित की जा रही हैं। जैन विश्व भारती के तत्त्वावधान में वर्तमान में विमल विद्या विहार सीनियर सेकेण्डरी स्कूल तथा महाप्रज्ञ इंटरनेशनल स्कूल, जयपुर एवं टमकोर संचालित हैं। मातृ संस्था जैन विश्व भारती के संरक्षण में जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय से अब तक लगभग 45,000 विद्यार्थियों ने शिक्षा प्राप्त की है जिनमें सैकड़ों विद्यार्थियों ने उच्च पदों पर पहुंच कर संस्था का गौरव बढ़ाया है।

भावी पीढ़ी में संस्कारों के संरक्षण तथा आध्यात्मिक व नैतिक शिक्षा के विकास की दृष्टि से **'समण संस्कृति संकाय'** के अंतर्गत जैन विद्या की शिक्षा प्रदान की जाती है।

मनुष्य के बौद्धिक विकास के साथ मानसिक, भावनात्मक और चारित्रिक विकास हेतु आचार्यश्री तुलसी एवं आचार्यश्री महाप्रज्ञजी ने **'जीवन विज्ञान'** की परिकल्पना प्रस्तुत की। ध्यान, योग एवं शिक्षण प्रशिक्षण के माध्यम से शिक्षा का यह क्रांतिकारी प्रयोग जैन विश्व भारती के अंतर्गत **'केन्द्रीय जीवन विज्ञान अकादमी'** द्वारा साकार हो रहा है।

सेवा

शिक्षा के साथ-साथ सेवा के क्षेत्र में भी जैन विश्व भारती अग्रणी है। जैन विश्व भारती परिसर में **'सेवाभावी आयुर्वेदिक रसायनशाला'** तथा बीदासर में **'श्रीमद् आचार्यश्री तुलसी महाप्रज्ञ मानव कल्याण केन्द्र'** सुचारु रूप से संचालित हैं।

'सेवाभावी आयुर्वेदिक रसायनशाला' द्वारा चिकित्सा सेवा विषयक जन-कल्याणकारी प्रवृत्ति का संचालन किया जाता है। यहां जिन औषधियों का निर्माण होता है वे आयुर्वेद विभाग से प्राप्त ड्रग मेन्युफेक्चरिंग लाइसेन्स के अंतर्गत जी.एम.पी. प्रमाणित हैं।

प्राकृतिक चिकित्सा, एक्युप्रेशर एवं फिजियोथेरेपी पद्धति से रोगियों की चिकित्सा हेतु **'श्रीमद् आचार्यश्री तुलसी मानव कल्याण केन्द्र'** की स्थापना जैन विश्व भारती की एक इकाई के रूप में बीदासर में की गई। यहां आधुनिक उपकरणों द्वारा व्यायाम की सुविधा उपलब्ध है। वर्तमान में केन्द्र के अंतर्गत होमियोपैथिक चिकित्सा से रोगियों को स्वास्थ्य लाभ दिया जा रहा है।

साधना

प्रेक्षाध्यान–आचार्यश्री महाप्रज्ञजी द्वारा निर्देशित प्रेक्षाध्यान पद्धति के निरंतर प्रयोग, प्रशिक्षण एवं शोध का केन्द्र है जैन विश्व भारती स्थित–**'तुलसी अध्यात्म नीडम्'**, जहां योग एवं अध्यात्म साधना के अभ्यास एवं प्रशिक्षण के द्वारा व्यक्ति के भाव परिष्कार व संवेग परिवर्तन के प्रयोग होते हैं। सन् 1978 में स्थापित तुलसी अध्यात्म नीडम् का उद्देश्य है–प्रेक्षाध्यान का प्रशिक्षण, विकास एवं अधिकाधिक प्रचार-प्रसार करना।

अध्यात्म, योग और अन्य जीवनोपयोगी विषयों पर आधारित मासिक पत्रिका **'प्रेक्षाध्यान'** का विगत 31 वर्षों से जैन विश्व भारती के अंतर्गत तुलसी अध्यात्म नीडम् द्वारा प्रकाशन किया जा रहा है।

साहित्य

साहित्य प्रकाशन एवं वितरण–साहित्य प्रकाशन एवं वितरण जैन विश्व भारती की महत्त्वपूर्ण गतिविधि है। आगम, जैन विद्या, जीवन विज्ञान, प्रेक्षाध्यान आदि से संबंधित साहित्य के साथ आचार्य भिक्षु, श्रीमद् जयाचार्य, आचार्य तुलसी, आचार्य महाप्रज्ञ, आचार्य महाश्रमण एवं साधु-साध्वियों, समण-समणीवृंद तथा शोधार्थियों द्वारा लिखित/सम्पादित साहित्य का प्रकाशन विगत लगभग 39 वर्षों से किया जा रहा है। जैन विश्व भारती गत 2-3 वर्षों से अंतर्राष्ट्रीय स्तर के अन्य प्रकाशकों के साथ मिलकर भी साहित्य प्रकाशन व वितरण का कार्य कर रही है।

शोध

जैन विश्व भारती की स्थापना के उद्देश्यों में **शोध** का विशेष स्थान है। पूज्य आचार्यश्री तुलसी ने इसकी स्थापना के उद्देश्यों में जैन धर्म एवं दर्शन के उच्च-स्तरीय शोध संस्थान की परिकल्पना सामने रखी थी। उसी परिकल्पना की सुखद परिणति स्वरूप जैन विश्व भारती की शोध प्रवृत्ति के अंतर्गत आगम सम्पादन का अत्यन्त महत्त्वपूर्ण कार्य हो रहा है। यह कार्य पूर्व में आचार्यश्री तुलसी व आचार्यश्री महाप्रज्ञजी एवं वर्तमान में आचार्यश्री महाश्रमणजी के निर्देशन में चल रहा है। आगम सम्पादन के प्रबन्धन का सारा दायित्व जैन विश्व भारती द्वारा निर्वहन किया जा रहा है।

हस्तलिखित एवं पाण्डुलिपि विभाग–जैन विश्व भारती में अनेक प्राचीन एवं दुर्लभ जैन हस्तलिखित ग्रन्थ उपलब्ध हैं जिनकी सुरक्षा एवं संरक्षण जैन विश्व भारती के हस्तलिखित एवं पाण्डुलिपि विभाग के अंतर्गत किया जा रहा है।

समन्वय

पुरस्कार एवं सम्मान–जैन विश्व भारती द्वारा कुल 10 पुरस्कारों का संचालन विभिन्न प्रायोजकों के सहयोग से किया जा रहा है। आचार्य महाप्रज्ञ साहित्य पुरस्कार, आचार्य तुलसी अनेकान्त सम्मान, आचार्य तुलसी प्राकृत पुरस्कार, संघ सेवा पुरस्कार, जय तुलसी विद्या पुरस्कार, आचार्य महाप्रज्ञ अहिंसा प्रशिक्षण सम्मान, महादेवलाल सरावगी जैन आगम मनीषी पुरस्कार, जीवन विज्ञान पुरस्कार, गंगादेवी सरावगी जैन विद्या पुरस्कार आदि पुरस्कारों के द्वारा विभिन्न क्षेत्रों में सेवाएं देने एवं उल्लेखनीय कार्य करने वालों को प्रोत्साहित किया जाता है और उनकी प्रतिभा का सम्यक् मूल्यांकन किया जाता है।

संस्कृति

तुलसी कलादीर्घा–जैन विश्व भारती में स्थित तुलसी कलादीर्घा (आर्ट गैलरी) में जैन धर्म को दर्शाने वाली प्राचीन एवं अर्वाचीन चित्रों एवं हस्तकलाओं की प्रचुर सामग्री का संग्रह किया गया है। दुर्लभ, कलापूर्ण, ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक महत्त्व की प्रदर्शन योग्य सामग्री के साथ तेरापंथ के आचार्यों को सरकारी एवं गैर-सरकारी संस्थाओं द्वारा प्रदत्त राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय सम्मानों से संबंधित प्रतीक चिह्न, प्रशस्ति पत्र एवं अन्य सामग्री को यहां पर शो विंडो में कलापूर्ण ढंग से सुसज्जित किया गया है।

उक्त सभी गतिविधियों के साथ सुरम्य हरीतिका से सुशोभित परिसर जैन विश्व भारती के बाह्य सौन्दर्य की मुखर कहानी कह रहा है। जैन विश्व भारती परिवार आप सभी को सादर आमंत्रित करता है। आप यहां पधारें एवं यहां संचालित गतिविधियों के बारे में जानकारी प्राप्त करें। संस्था के विकास हेतु आपके अमूल्य सुझावों एवं विचारों का स्वागत है। अधिक जानकारी हेतु संपर्क करें–

जैन विश्व भारती

पोस्ट : लाडनूं - 341306, जिला : नागौर (राजस्थान)

फोन : (01581) 226025, 226080, 224671

ई-मेल : jainvishvabharati@yahoo.com

वेबसाईट : www. jvbharati.org

प्रेक्षाध्यान

आचार्य तुलसी एवं आचार्यश्री महाप्रज्ञजी के लोक कल्याणकारी अवदानों की शृंखला में एक प्रमुख अवदान है–'प्रेक्षाध्यान'। जो आचार्यश्री महाश्रमणजी के पावन दिशा-निर्देशन में जैन विश्व भारती की एक महत्त्वपूर्ण प्रवृत्ति के रूप में संचालित है। प्रेक्षाध्यान संबंधी समग्र गतिविधियों का नियमन जैन विश्व भारती के अन्तर्गत प्रेक्षा फाउण्डेशन द्वारा होता है। प्रेक्षा फाउण्डेशन द्वारा नियमित रूप से संचालित प्रेक्षाध्यान संबंधी प्रमुख गतिविधियों की जानकारी प्रस्तुत है।

1. प्रतिमाह प्रेक्षाध्यान शिविर

प्रेक्षा फाउण्डेशन द्वारा तुलसी अध्यात्म नीडम्, आचार्य तुलसी अंतर्राष्ट्रीय प्रेक्षाध्यान केन्द्र, जैन विश्व भारती, लाडनूं (राज.) के सुरम्य व शांत परिसर में अष्ट दिवसीय प्रेक्षाध्यान शिविर प्रतिमाह आयोजित होते हैं, शिविर में भाग लेने वालों के लिए आवास, भोजन, प्रशिक्षण आदि की समुचित व्यवस्थाएं यहां उपलब्ध हैं। इन मासिक प्रेक्षाध्यान शिविरों की शृंखला में तुलसी अध्यात्म नीडम्, जैन विश्व भारती, लाडनूं में आगामी वर्ष में आयोजित होने वाले शिविरों की जानकारी निम्नलिखित है–

1. 01-08 फरवरी 2018	6. 21-28 सितम्बर 2018
2. 01-08 मार्च 2018	7. 21-28 अक्टूबर 2018
3. 01-08 अप्रैल 2018	8. 21-28 नवम्बर 2018
4. 01-08 जुलाई 2018	9. 21-28 दिसम्बर 2018
5. 01-08 अगस्त 2018	

2. प्रेक्षाध्यान कार्यशालाएं

प्रेक्षाध्यान के अभ्यास एवं प्रयोग से अधिक से अधिक लोग लाभान्वित हो सकें, इस दृष्टि से प्रेक्षा फाउण्डेशन के तत्त्वावधान में विभिन्न क्षेत्रों में स्थानीय संस्थाओं (बिना जाति, लिंग, समुदाय के भेदभाव के) द्वारा प्रेक्षाध्यान कार्यशालाएं आयोजित की जा सकती है।

3. स्थानीय स्तर पर प्रेक्षावाहिनी

प्रेक्षाध्यान में रुचि रखने वाले न्यूनतम दस साधकों के समूह का नाम है–'प्रेक्षावाहिनी'। इन साधकों को प्रेक्षाध्यान के अभ्यास, प्रयोग एवं प्रशिक्षण के लिए स्थानीय स्तर पर एक सुव्यवस्थित व्यवस्था उपलब्ध हो सके एवं परस्पर संपर्क एवं संवाद बना रहे, इस दृष्टि से प्रेक्षा फाउण्डेशन के अंतर्गत देश के विभिन्न क्षेत्रों में प्रेक्षावाहिनियों का गठन हुआ है जिनकी संख्या 110 हो चुकी है।

4. प्रेक्षा कार्ड योजना

प्रेक्षा फाउण्डेशन के अंतर्गत संचालित प्रेक्षा कार्ड योजना निरन्तर गतिमान है। विभिन्न व्यक्तियों द्वारा इस योजना की सदस्यता प्राप्त की गई है एवं इस कार्ड योजना के माध्यम से कार्ड धारक को प्रदत्त प्रेक्षाध्यान संबंधी विशेष सुविधाओं यथा–प्रतिवर्ष आयोजित होने वाले शिविर में किसी एक साप्ताहिक शिविर में निःशुल्क सहभागिता, प्रेक्षाध्यान पत्रिका की निःशुल्क सदस्यता इत्यादि का लाभ प्राप्त किया जा रहा है। प्रेक्षा कार्ड योजना के अंतर्गत निम्न श्रेणियां है–1. प्रेक्षा सिल्वर कार्ड 2. प्रेक्षा गोल्डन कार्ड 3. प्रेक्षा प्लेटिनम कार्ड 4. प्रेक्षा एमरेल्ड कार्ड।

5. प्रेक्षाध्यान मासिक पत्रिका

अध्यात्म, योग और अन्य जीवनोपयोगी विषयों पर आधारित मासिक पत्रिका 'प्रेक्षाध्यान' का विगत 35 वर्षों से जैन विश्व भारती के अंतर्गत तुलसी अध्यात्म

नीडम् द्वारा प्रकाशन किया जा रहा है। पत्रिका के सदस्य बनकर प्रेक्षाध्यान से संबंधित गतिविधियों की संपूर्ण जानकारी व्यक्ति घर बैठे प्राप्त कर सकता है। प्रेक्षाध्यान पत्रिका की ऑनलाइन सदस्यता भी उपलब्ध है।

6. प्रेक्षा प्रशिक्षक

प्रेक्षा प्रशिक्षकों के निर्माण हेतु प्रेक्षा फाउण्डेशन की एक महत्त्वपूर्ण योजना जारी है। इसके अंतर्गत प्रेक्षाध्यान का एक समग्र पाठ्यक्रम तैयार किया गया है। लिखित एवं प्रायोगिक परीक्षाओं का क्रम रखा गया है। प्रेक्षा फाउण्डेशन प्रशिक्षकों के निर्माण, उनसे नियमित संपर्क एवं प्रशिक्षण विधि की एकरूपता के लिए कटिबद्ध है। वर्तमान में लगभग 429 प्रेक्षा प्रशिक्षक पंजीकृत हो चुके हैं।

7. सोशल मीडिया के माध्यम से प्रेक्षा प्रसार

विगत वर्ष से प्रेक्षा साधकों की रुचि को ध्यान में रखकर विभिन्न सोशल ग्रुप्स के माध्यम से प्रेक्षा सामग्री के ऑडियो, वीडियो एवं पोस्ट व्हाटसप के माध्यम से लाखों लोगों तक प्रसारित किए जा रहे हैं।

प्रेक्षा फाउण्डेशन संबद्धता प्राप्त केन्द्र सूची

1.	तुलसी अध्यात्म नीडम्, लाडनूं	8233344482
2.	अध्यात्म साधना केन्द्र, मैहरोली	9643300655
3.	प्रेक्षा विश्व भारती, कोबा	9825033201
4.	प्रेक्षाध्यान केन्द्र, कूचबिहार	9434213099
5.	प्रेक्षाध्यान केन्द्र, राजकोट	9824043363
6.	प्रेक्षा प्रकोष्ठ, चेन्नई	9440205427
7.	महाप्रज्ञ प्रेक्षाध्यान केन्द्र, नागपुर	9373471831
8.	प्रेक्षाध्यान केन्द्र, अम्बावाड़ी	9426087220
9.	प्रेक्षाध्यान केन्द्र, इन्दौर	9993465883
10.	प्रेक्षाध्यान केन्द्र, सूरत	9377555545
11.	प्रेक्षाध्यान केन्द्र, विक्रोली	9869990868
12.	प्रेक्षाध्यान योग साधना केन्द्र, कांदीवली	9004937723
13.	प्रेक्षाध्यान योग साधना केन्द्र (महिला), कांदीवली	9004798179
14.	प्रेक्षाध्यान योग साधना केन्द्र, दामोदरवाड़ी, कांदीवली	9004937723
15.	प्रेक्षाध्यान योग साधना केन्द्र, अशोकनगर कांदीवली	9004937723
16.	अर्हम् प्रेक्षाध्यान योग केन्द्र, गौहाटी	9435042723
17.	प्रेक्षाध्यान केन्द्र, रायपुर	9425285121
18.	प्रेक्षाध्यान केन्द्र, चेन्नई	9840845337
19.	प्रेक्षाध्यान केन्द्र, बैंगलोर	9686366250
20.	प्रेक्षाध्यान केन्द्र, गंगाशहर	9887914000
21.	प्रेक्षाध्यान केन्द्र, मणिनगर-कांकरियां	9426412624

प्रेक्षा फाउण्डेशन
तुलसी अध्यात्म नीडम्
जैन विश्व भारती परिसर
पोस्ट : लाडनूं-341306, जिला : नागौर (राजस्थान)
फोन नं. : 01581-226119, मोबाईल नं. : 08233344482
ई-मेल: foundation@preksha.com, वेबसाईट: www.preksha.com

जीवन विज्ञान

आचार्यश्री महाप्रज्ञजी द्वारा प्रणीत **'जीवन विज्ञान'** सही ढंग से जीने का विज्ञान सिखाता है। स्वस्थ समाज रचना के लिए स्वस्थ एवं संतुलित व्यक्तित्व के निर्माण की अपेक्षा है। व्यक्तित्व की समग्रता केवल बौद्धिक विकास में नहीं है, जबकि वर्तमान शिक्षा प्रणाली में सर्वाधिक बल इसी पर दिया जा रहा है, समग्र विकास के लिए शारीरिक, मानसिक और भावनात्मक विकास भी आवश्यक है। जीवन विज्ञान बौद्धिक ज्ञान की उपेक्षा नहीं करता परन्तु इसके साथ व्यक्तित्व विकास के अन्य आयामों पर भी पर्याप्त बल देने की बात करता है। यह वर्तमान शिक्षा प्रणाली के पूरक के रूप में जुड़कर व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास का मार्ग प्रशस्त करता है। अतः शिक्षा की सम्पूर्णता के लिए यह आवश्यक है कि शिक्षा में जीवन विज्ञान का समावेश हो।

जीवन विज्ञान के उद्देश्य

1. जीवन में परिष्कार के द्वारा स्वस्थ, बौद्धिक, व्यवहारिक, वैज्ञानिक और आध्यात्मिक व्यक्तित्व का निर्माण करना।

2. जीवन विज्ञान द्वारा शारीरिक एवं मानसिक विकास पर भावात्मक प्रभावों का वैज्ञानिक अध्ययन (शोध) करना एवं अध्यापन करवाना।

3. जीवन के उन नियमों एवं प्रक्रियाओं का अध्ययन एवं अन्वेषण करना, जिससे जीवन के ज्ञानात्मक, भावात्मक एवं क्रियात्मक पक्ष का परिष्कार होता है।

4. स्वस्थ समाज की रचना के लिए ऐसे व्यक्तित्व का निर्माण करना, जो जीवन के विभिन्न क्षेत्रों हेतु स्वस्थ जीवन की प्रायोगिक एवं अभ्यासात्मक प्रक्रियाओं को वैज्ञानिक ढंग से प्रस्तुत कर सके। साथ ही इसके माध्यम से वह समग्र एवं स्वस्थ समाज के निर्माण में सहभागी बन सके।

उपरोक्त उद्देश्यों की पूर्ति हेतु शिक्षा के इस क्रांतिकारी आयाम को राष्ट्रव्यापी बनाने के लिए जीवन विज्ञान अकादमी प्रारम्भ से जैन विश्व भारती के अंतर्गत कार्यरत है। इस अकादमी के प्रयासों से देशभर में अनेक अकादमियां स्थापित हो चुकी हैं जो अपने-अपने क्षेत्र में जीवन विज्ञान का विकास और प्रचार-प्रसार कर रही है।

जीवन विज्ञान पाठ्यक्रम

जीवन विज्ञान के अंतर्गत व्यक्ति के शारीरिक, मानसिक एवं भावनात्मक स्वास्थ्य के समुचित विकास हेतु आधुनिक और प्राचीन विद्याओं के समावेश से परिपूर्ण अन्तर्विषयानुबंधी पाठ्यक्रम प्रस्तुत किया गया है। विद्यालयीन स्तर पर जीवन विज्ञान पाठ्यक्रम का प्रारूप निम्नानुसार है–

1. प्रार्थना सभा में जीवन विज्ञान।
2. प्रत्येक कालांश में विषय शिक्षण से पूर्व लघु प्रवृत्तियां।
3. मुख्यधारा के विषय के रूप में (प्रारम्भ से कक्षा 12 तक)।
4. पाठ्यक्रम सहगामी प्रवृत्तियां।

पाठ्य सामग्री

जीवन विज्ञान : एक परिचय, जीवन विज्ञान : स्वस्थ समाज की संरचना,

जीवन विज्ञान : शिक्षा का नया आयाम, शिक्षा जगत् के लिए जरूरी है नया चिन्तन, जीवन विज्ञान : शिक्षक प्रशिक्षक मार्गदर्शिका, जीवन विज्ञान : शिक्षक निर्देशिका, प्रार्थना सभा में जीवन विज्ञान लघु पुस्तिका, प्रार्थना सभा में जीवन विज्ञान का केलेण्डर, जीवन विज्ञान : संस्कारमाला (नर्सरी से कक्षा 2 तक), बालक का व्यक्तित्व विकास और मूल्यपरक शिक्षा के प्रयोग, जीवन विज्ञान की रूपरेखा, जीवन विज्ञान पाठ्य-पुस्तकें : कक्षा 3 से 12 तक, सहशैक्षिक प्रवृत्तियों के लिए जीवन विज्ञान प्रश्न मंच एवं केरियर क्लब, संवादों में जीवन विज्ञान, जीवन विज्ञान प्रायोगिकी आदि। (पाठ्य-पुस्तकें हिन्दी, अंग्रेजी सहित गुजराती, कन्नड़, आदि कुछ प्रादेशिक भाषाओं में भी उपलब्ध है।)

नोट : कक्षा ३, ४ एवं ५ के लिए हिन्दी एवं अंग्रेजी भाषाओं में अंतर्राष्ट्रीय स्तर की नवीन संशोधित पाठ्य-पुस्तकें आकर्षक बहुरंगी छपाई में उपलब्ध है।

जीवन विज्ञान से लाभ

1. बौद्धिक और भावनात्मक विकास का संतुलन। 2. आवेग और आवेश का संयम। 3. आत्मानुशासन की क्षमता का विकास। 4. जीवन व्यवहार निश्छल एवं मैत्रीपूर्ण। 5. मादक वस्तुओं से सेवन से मुक्ति। 6. स्वस्थ जीवन जीने का मार्ग। 7. नैतिक मूल्यों का विकास। 8. पुस्तकीय ज्ञान के साथ-साथ अच्छे ढंग से जीवन जीने की कला का प्रशिक्षण। 9. जीवन की समस्याओं के समाधान की खोज। 10. स्व-शक्ति से परिचय एवं उसके उपयोग की दक्षता।

देश-विदेश में कार्यरत जीवन विज्ञान अकादमी

(दुबई) अजमन, (दिल्ली) महरौली नई दिल्ली, (राजस्थान) अजमेर, जयपुर, भीलवाड़ा, सरदारशहर, नोखा, चूरू, सुजानगढ़, जसोल, बांसवाड़ा, आमेट, बालोतरा (महाराष्ट्र) मुंबई, नवी मुंबई, जलगांव, नागपुर (पं. बंगाल) कोलकाता, (कर्नाटक) बैंगलोर, (तमिलनाडु) पल्लावरम-चेन्नई, ईरोड़, मदुरई, तिरूवन्नामलाई, (हरियाणा) गुड़गांव, भिवानी, (छत्तीसगढ़) दुर्ग-भिलाई, (मध्यप्रदेश) इन्दौर, रतलाम, (उड़ीसा) टिटिलागढ़ (गुजरात) कोबा-गांधीनगर, सूरत (आन्ध्र-प्रदेश) कुकटपल्ली-हैदराबाद (बिहार) करसर, आरा (आसाम) गौहाटी, धुबड़ी।

वार्षिक आयोजन

1. जीवन विज्ञान दिवस (21 नवम्बर 2018) कार्तिक शुक्ला त्रयोदशी
2. पैन इंडिया कम्पीटिशन 2018
3. जीवन विज्ञान शिक्षक प्रशिक्षण शिविर
4. जीवन विज्ञान प्रशिक्षक प्रशिक्षण शिविर
5. जीवन विज्ञान व्यक्तित्व विकास कार्यशाला

अधिक जानकारी हेतु संपर्क करें

जीवन विज्ञान
स्वस्थ समाज की संरचना

जीवन विज्ञान अकादमी

जैन विश्व भारती

पोस्ट : लाडनूं - 341306, जिला : नागौर (राजस्थान)

फोन : 01581-226977, 09414919371

ई-मेल : jeevanvigyanacademy@gmail.com

समण संस्कृति संकाय

तेरापंथ के नवम अधिष्ठाता गणाधिपति गुरुदेव श्री तुलसी एवं आचार्यश्री महाप्रज्ञजी के क्रांत मस्तिष्क से प्रस्फुटित लोककल्याणकारी अवदानों में सामाजिक, आध्यात्मिक एवं व्यावहारिक स्तर पर एक महत्त्वपूर्ण गतिविधि है 'जैन विद्या का प्रसार'। 'संस्कारों की प्रयोगशाला : समण संस्कृति संकाय'– जो भावी पीढ़ी में सद्-संस्कारों का वपन करने एवं उनके उन्नत व सुदृढ़ भविष्य का निर्माण करने के लिए जैन विद्या पाठ्यक्रम की लम्बी शृंखला के माध्यम से सन् 1977 से इस दिशा में प्रयासरत है। इस प्रयोगशाला के प्रयोगों को विश्वव्यापी बनाने की दिशा में वर्तमान में यह विभाग आचार्यश्री महाश्रमणजी के मार्गदर्शन में सतत् विकासशील है।

जैन विद्या अध्ययन का उद्देश्य

1. जैन विद्या अध्ययन के माध्यम से सभी आयु वर्ग के भाई बहनों को जैन धर्म के सिद्धांत, तत्त्व विद्या, दर्शन, मान्यताओं, परम्पराओं, आदर्शों से रूबरु करवाना। जैन विद्वान तैयार करना।

2. भौतिक संसाधनों की चकाचौंध व पाश्चात्य संस्कृति से लिप्त नई पीढ़ी को जैन संस्कृति से परिचित कराना व सद्संस्कारों का संरक्षण।

3. मानव जीवन के नियमों व प्रक्रियाओं का अध्ययन कराना जिससे जीवन में नैतिक मूल्यों का विकास हो, बौद्धिक विकास हो।

समण संस्कृति संकाय सम, शम और श्रम की संस्कृति के प्रचार का तंत्र है। उपरोक्त उद्देश्यों की पूर्ति हेतु जैन विद्या के आयाम को विश्वव्यापी बनाने के लिए प्रतिवर्ष लगभग 300-350 केन्द्रों से हजारों प्रतिभागी संस्कार निर्माण की दिशा में अग्रसर होते हैं। परीक्षाओं के माध्यम से तैयार हुए प्रशिक्षक भी इसमें अपने समय व श्रम का नियोजन करते हैं। संकाय का पूरा तंत्र विशेष जागरूकता के साथ परीक्षाओं का संचालन करता है।

पाठ्य सामग्री

संकाय द्वारा पूज्यप्रवर के निर्देशन में सुगम व सारगर्भित जैन विद्या 9 वर्षीय पाठ्यक्रम संचालित होता है। जिसके निर्माण में मुनिश्री सुमेरमलजी 'सुदर्शन' का श्रम नियोजित हुआ है। आधुनिक पीढ़ी को ध्यान में रखते हुए इस पाठ्यक्रम के नवीनीकरण कार्य में जैन विश्व भारती के आध्यात्मिक पर्यवेक्षक मुनिश्री कीर्तिकुमारजी एवं मुनिश्री जयंतकुमारजी का मार्गदर्शन प्राप्त हुआ है। वर्तमान में जैन विद्या भाग 1 से 9 तक का पाठ्यक्रम इस प्रकार है–

जैन विद्या प्रथम वर्ष (भाग-1)	जैन विद्या भाग-1 (हिन्दी, अंग्रेजी)
जैन विद्या द्वितीय वर्ष (भाग-2)	जैन विद्या भाग-2 (हिन्दी, अंग्रेजी)
जैन विद्या तृतीय वर्ष (भाग-3)	जैन विद्या भाग-3
जैन विद्या चतुर्थ वर्ष (भाग-4)	जैन विद्या भाग-4 सचित्र श्रावक प्रतिक्रमण
जैन विद्या पंचम वर्ष हेतु प्रवेश परीक्षा	जैन विद्या भाग-1 से 4
जैन विद्या पंचम वर्ष (भाग-5)	जैन तत्त्व विद्या खण्ड-1 जैन परम्परा का इतिहास

जैन विद्या षष्ठम वर्ष (भाग-6)	जैन तत्त्व विद्या खण्ड-2, 3
	जैन धर्म : जीवन और जगत
जैन विद्या सप्तम वर्ष (भाग-7)	भिक्षु विचार दर्शन
	जीव-अजीव
जैन विद्या अष्टम वर्ष (भाग-8)	श्रमण महावीर
	(अध्याय 1-46)
	आचार्य भिक्षु
	(अध्याय 1-8, 10,11)
जैन विद्या नवम वर्ष (भाग-9)	जैन दर्शन मनन और मीमांसा
	(खण्ड-3 एवं 4)

जैन विद्या परीक्षाएं :

जैन विद्या परीक्षाओं का नववर्षीय पाठ्यक्रम कक्षानुसार निर्धारित है, जिसकी पाठ्यपुस्तकें समण संस्कृति संकाय, जैन विश्व भारती द्वारा प्रकाशित होती है। जैन विद्या परीक्षाओं के माध्यम से प्रतिवर्ष भारत, नेपाल एवं दुबई सहित 300-350 केन्द्रों से हजारों की संख्या में प्रतिभागी संस्कार निर्माण की दिशा में अग्रसर होते हैं। परीक्षाओं का संचालन स्थानीय संघीय संस्थाएं करती है। समण संस्कृति संकाय द्वारा स्थानीय संघीय संस्थाओं के अंतर्गत इन परीक्षाओं के व्यवस्थित संचालन की दृष्टि से आंचलिक संयोजक व केन्द्र व्यवस्थापक नियुक्त किये जाते हैं, जो विशेष जागरूकता के साथ परीक्षाओं के संचालन में सहयोग करते हैं। इस वर्ष से विद्यार्थियों की सुविधा की दृष्टि से जैन विद्या परीक्षाएं वर्ष में 2 बार अर्थात नवम्बर एवं जनवरी में आयोजित की गई है। ताकि विद्यार्थी सुविधानुसार समय में परीक्षा में बैठ सकें। इसी वर्ष जैन विद्या परीक्षा के तंत्र को ऑनलाईन भी किया गया है। अब परीक्षार्थी ऑनलाईन आवेदन भी कर सकेंगे।

दीक्षान्त समारोह :

लगभग पूज्यप्रवर के पावन सान्निध्य में चातुर्मास काल में समण संस्कृति संकाय का दीक्षान्त समारोह आयोजित होता है, जिसमें राष्ट्रीय स्तर पर वरीयता प्राप्त ज्ञानार्थियों को सम्मानित व पुरस्कृत किया जाता है।

जैन विद्या कार्यशाला :

भाई-बहिनों में तत्त्वज्ञान की रुचि जागृत करने तथा तत्त्वज्ञान की जानकारी की दृष्टि से समण संस्कृति संकाय एवं अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् द्वारा संयुक्त रूप से गत छह वर्षों से राष्ट्रीय स्तर पर 'जैन विद्या कार्यशाला' का आयोजन किया जा रहा है। प्रतिवर्ष जैन विद्या एवं तत्त्वज्ञान से संबंधित पुस्तक को आधार मानते हुए प्रतियोगिता आयोजित होती है, जिसकी 15 दिन की कक्षा चारित्रात्माओं के सान्निध्य में प्रतिदिन चलती है, जहां अध्ययन करवाया जाता है। उसके पश्चात् पूरे देश में एक दिन विभिन्न केन्द्रों पर लिखित परीक्षा आयोजित होती है। इस उपक्रम में तेरापंथ युवक परिषद् की स्थानीय शाखाओं का पूर्ण सहयोग रहता है।

राज्य स्तरीय/आंचलिक जैन विद्या कार्यकर्ता प्रशिक्षण कार्यशालाओं का आयोजन :

समण संस्कृति संकाय द्वारा कार्यकर्ताओं को जैन विद्या का प्रशिक्षण प्रदान करने की दृष्टि से विभिन्न राज्यों/अंचलों में चारित्रात्माओं/समण-समणीवृंद के सान्निध्य में कार्यकर्ता प्रशिक्षण कार्यशालाओं का आयोजन समय-समय पर किया जा रहा है।

लेख प्रतियोगिता :

जैन विद्या परीक्षाओं में सम्मिलित होने वाले व्यक्ति घर बैठे ही अपना बौद्धिक विकास करने में सफल होते हैं। साथ ही भाषा, लेखन, अभिव्यक्ति क्षमता का विकास करते हुए अपने व्यक्तित्व का

वकास एवं चारित्र निर्माण का आधार भी पुष्ट कर सकते हैं। ऐसी प्रतिभाएं आगे आए इसके लिए विज्ञ उपाधि धारकों के लिए लेख प्रतियोगिता का आयोजन किया जाता है।

जय तिथि पत्रक का प्रकाशन :

समण संस्कृति संकाय द्वारा मर्यादा महोत्सव के अवसर पर विगत ३६ वर्षों से निरन्तर जन उपयोगी सामग्री के साथ जय तिथि पत्रक (पंचांग) का प्रकाशन किया जा रहा है। 'मंत्री मुनि' मुनिश्री सुमेरमलजी 'लाडनूं' द्वारा संपादित जय तिथि पत्रक प्रत्येक घर के लिए अत्यन्त उपयोगी एवं संग्रहणीय है। इसमें दैनिक पंचांग के साथ-साथ जैन विश्व भारती की गतिविधियों एवं अन्य उपयोगी सामग्री का समावेश भी रहता है।

आगम मंथन प्रतियोगिता :

श्रुत संपदा संवर्धन तथा आगम स्वाध्याय के प्रति रुचि जागृत करने के उद्देश्य से जैन विश्व भारती द्वारा विगत दस वर्षों से आगम मंथन प्रतियोगिता का आयोजन किया जा रहा है। इस वर्ष से आगम मंथन प्रतियोगिता का संचालन समण संस्कृति संकाय के अंतर्गत किया जा रहा है। भगवान महावीर की जिनवाणी को सुधि पाठकों तक पहुंचाने का यह एक सार्थक प्रयास है।

अन्य कार्यक्रम :

जैन विद्या प्रचार-प्रचार हेतु जैन विद्या सप्ताह, जैन विद्या संगठन यात्रा, जैन विद्या सम्पर्क कक्षाएं एवं विभिन्न ज्ञानवर्धक प्रतियोगिताओं का आयोजन नियमित रूप से किया जाता है। पिछले चार वर्षों से जैन-अजैन-तेरापंथी विद्यालयों में जैन विद्या परीक्षाओं का आयोजन किया जाता है।

समण संस्कृति संकाय

जैन विश्व भारती

लाडनूं-341306 (राजस्थान)

फोन नं. : 01581-226025, 226974

मो. : 9785442373

E-mail : sssankay@gmail.com

http://sss.jvbharati.org/

जैन विश्व भारती : शैक्षणिक इकाइयां

जैन विश्व भारती अपनी विभिन्न शिक्षण संबंधी इकाईयों के माध्यम से पूज्यवरों के स्वप्नों के अनुरूप आधुनिक शिक्षा प्रणाली में नैतिक मूल्यों का समावेश कर मूल्यपरक शिक्षा प्रदान करते हुए स्वस्थ व्यक्ति, स्वस्थ समाज और स्वस्थ राष्ट्र के निर्माण की दिशा में सतत अग्रसर है। जैन विश्व भारती द्वारा संचालित तीनों विद्यालयों की संक्षिप्त जानकारी निम्न प्रकार है–

विमल विद्या विहार – परमपूज्य आचार्यश्री तुलसी की प्रेरणा से जैन विश्व भारती द्वारा सन् 1989 में विमल विद्या विहार के नाम से अंग्रेजी माध्यम के नगर के प्रथम प्राथमिक विद्यालय का शुभारंभ किया गया। इस विद्यालय में नर्सरी से कक्षा बारहवीं तक अंग्रेजी माध्यम से शिक्षण की व्यवस्था है तथा यह लाडनूं नगर का एकमात्र सी.बी.एस.ई. मान्यता प्राप्त सह-शैक्षिक विद्यालय है। विद्यालय में शिक्षण की आधुनिक तकनीक आई.सी.टी. (स्मार्ट क्लास) कक्षाएं संचालित हैं। वर्तमान में इस विद्यालय में 1185 छात्र-छात्राएं अध्ययनरत हैं।

• vvvldn@gmail.com • www.vimalvidyaschool.in

महाप्रज्ञ इंटरनेशनल स्कूल, जयपुर – आधुनिकता और परम्परा का समुचित संगम करते हुए शिक्षा जगत के बहुआयामी संस्थान के रूप में महाप्रज्ञ इंटरनेशनल स्कूल की स्थापना सन् 2006 में जयपुर में जैन विश्व भारती की एक इकाई के रूप में हुई। सी.बी.एस.ई. मान्यता प्राप्त नर्सरी से कक्षा 12 तक संचालित यह विद्यालय आधुनिक एवं तकनीकी शिक्षण पद्धतियों का प्रयोग कर संस्कारित पीढ़ी के निर्माण की दिशा में गतिशील है। वर्तमान में इस विद्यालय में 325 छात्र-छात्राएं अध्ययनरत हैं।

• mis.jaipur@gmail.com • www.misjaipur.com

महाप्रज्ञ इंटरनेशनल स्कूल, टमकोर – आचार्यश्री महाप्रज्ञ की जन्म स्थली टमकोर में स्थापित यह विद्यालय ग्रामीण क्षेत्र के बच्चों के सर्वांगीण विकास और उन्हें उत्कृष्ट शिक्षा देने की दिशा में गतिशील है। यह विद्यालय सन् 2007 में प्रारम्भ हुआ एवं शैक्षणिक सत्र 2009-10 से जैन विश्व भारती की इकाई के रूप में संचालित है और अनवरत विकास के उच्च शिखरों की ओर आरूढ़ हो रहा है। नर्सरी से कक्षा 11 तक का यह विद्यालय वर्तमान में अपने विशाल निजी भवन में संचालित है। वर्तमान में इस विद्यालय में 489 छात्र-छात्राएं अध्ययनरत हैं।

• mis.tamkor@gmail.com • www.mistamkor.com

तीनों विद्यालयों में जरूरतमंद एवं मेधावी विद्यार्थियों को छात्रवृत्तियां प्रदान की जाती है। प्रति विद्यार्थी प्रतिवर्ष छात्रवृत्ति प्रायोजकीय राशि रु. 13000/- निर्धारित है। छात्रवृत्ति हेतु प्रायोजकीय सहयोग सादर आमंत्रित है।

सहयोग प्रदान करने हेतु संपर्क सूत्र : 08290626767

तेरापंथ धर्मसंघ की विशिष्ट संस्थाएं

जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा
महासभा भवन
3, पोर्चुगीज चर्च स्ट्रीट
कोलकाता - 700001 (पश्चिम बंगाल)
फोन : 033-22357956, 22343598
E-mail : info@jstmahasabha.org

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद्
प्रशासकीय कार्यालय
अणुव्रत भवन, तीसरा तल्ला
210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग
नई दिल्ली - 110002
फोन - 011-23210593
E-mail : abtyp1964@gmail.com

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल
'रोहिणी' जैन विश्व भारती परिसर
पो. लाडनूं - 341306
जिला - नागौर (राजस्थान)
फोन : 01581-226070

जैन विश्व भारती
पो. - लाडनूं - 341 306
जिला : नागौर (राजस्थान)
01581-226080,226025,224671
E-mail jainvishvabharati@yahoo.com
Website : www.jvbharati.org

जैन विश्व भारती संस्थान
जैन विश्व भारती परिसर
पो. - लाडनूं - 341 306
जिला - नागौर (राजस्थान)
01581-226230,226110
E-mail : office@jvbi.ac.in
Website : http:/www.jvbi.ac.in

जय तुलसी फाउण्डेशन
एक्सलेण्ड प्लेस, तीसरा तल्ला
कोलकाता - 17
फोन - 033-22902277,22903377
E-mail : jtfcal@gmail.com

अणुव्रत महासमिति
अणुव्रत भवन, तीसरा तल्ला
210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग
नई दिल्ली - 110002
फोन : 011-23233345, 23239963
E-mail : anuvrat_mahasamiti@yahoo.com

अखिल भारतीय अणुव्रत न्यास
अणुव्रत भवन
210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग
नई दिल्ली - 110002
फोन. 011-23236738, 23222965

अणुव्रत विश्व भारती
विश्व शांति निलयम्
पो. - राजसमंद - 313326 (राजस्थान)
फोन : 02952-220516, 220628
E-mail : rajsamand@anuvibha.in

आदर्श साहित्य संघ
अणुव्रत भवन
210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग
नई दिल्ली - 110002
फोन : 011-23234641, 23238480
E-mail : adarshsahityasangh@yahoo.com

पारमार्थिक शिक्षण संस्था
'अमृतायन' भवन
जैन विश्व भारती परिसर
पो. - लाडनूं - 341306
जिला - नागौर (राजस्थान)
फोन : 01581-226032, 224305

अमृत वाणी
हिन्द पेपर हाउस
951, छोटा छिपावाड़ा
चावड़ी बाजार
दिल्ली - 110006
फोन : 011-23264782, 23263906
E-mail : hindpaper@yahoo.com

आचार्य तुलसी शांति प्रतिष्ठान
'शक्तिपीठ' नोखा रोड
पो. - गंगाशहर - 334401
जिला - बीकानेर (राजस्थान)
फोन : 0151-2270396
E-mail : gurudevtulsi@gmail.com

प्रेक्षा विश्व भारती
गांधीनगर हाइवे
कोबा पाटिया
गांधीनगर - 382009 (गुजरात)
फोन. 079-23276271, 23276606
E-mail : prekshabharati@yahoo.com

तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम
अणुव्रत भवन, 210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग
नई दिल्ली - 110002
फोन : 08094368313,08107451951
E-email : tpfoffice@tpf.org
website : www.tpf.org.in

शिविर कार्यालय
आचार्य महाश्रमण प्रवास स्थल
सम्पर्क सूत्र :
हेमन्त बेद : 9672996960,7044448888
E-mail : campoffice13@gmail.com

प्रेक्षाध्यान का प्रायोजन है अतींद्रिय चेतना का विकास करना।
अतींद्रिय चेतना का अनुभव बहुत लोग नहीं करते,
उन्हें पता भी चलता और करने वाला बता भी नहीं सकता कि
उसका स्वाद कैसा है ? उसका अनुभव कैसा है ?

-आचार्य महाप्रज्ञ

श्रद्धावनत

अरविन्द संचेती

मोमासर-अहमदाबाद

18
पाप

जानो और छोड़ो

आचार्य महाश्रमण

आचार्यश्री महाश्रमण की नवीन कृति

: प्रप्ति स्थान :

जैन विश्व भारती लाडनूं : 8742004849

आचार्य महाश्रमण प्रवास स्थल : 9928393902

ईमेल : books@jvbharati.org

Books are available online at : https://books.jvbharati.org

व्यक्ति प्रशंसा का आकांक्षी रहता है,
परन्तु वास्तविक और स्थायी प्रसन्नता
तब प्राप्त हो सकती है,
जब आदमी समता का अभ्यास कर लेता है।

-आचार्य महाश्रमण

श्रद्धावनत

सुमन कमलेश भादाणी

श्रीडूंगरगढ़ - तिरुपुर

ABCI INFRASTRUCTURES PVT. LTD.

204 South Delhi House, 12 Zamrudpur Community Centre, Kailash Colony, New Delhi 110 048
Phone: 011 – 29234131, 29232405, Fax No. 011 – 66629606, E-mail: delhi@abciinfra.com

KOLKATA OFFICE

"DN-23, The Knowledge Hub
Sector – 5, Salt lake City, Kolkata
Phone: 033 – 40044117, 40044118
Fax No. 033 – 40044119
E-mail: kolkata@abciinfra.com

SILCHAR OFFICE

"Capital Travels Buildings"
Club Road, Silchar 788 001
Cachar (Dist.) Assam.
Phone : 03842 – 247957, 247471, 262396
Fax No. 03842 – 236054
E-mail: silchar@abciinfra.com

GUWAHATI OFFICE

1/3 "Mc Donald Tower, 1st Floor
G.S. Road, Bhangagarh,
Guwahati 781 005
Phone: 0361 – 2458819
Fax No. 0361 – 2464054
E-mail: ghy@abciinfra.com

AIZWAL OFFICE

YC-08, Vanlal fela Building,
Aizawl – 796012 (Mizoram)
Phone: 0389–2396007, 2396768
Fax No. 0389 – 2396007
E-mail: abciaizawl@rediffmail.com

Website of the company: www.abciinfra.com

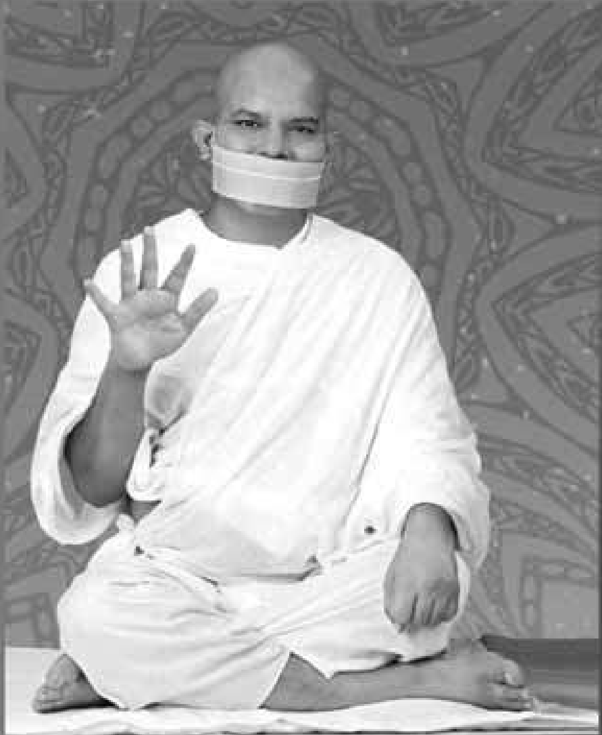

साधारण और प्रतिभाशाली व्यक्ति में
यही अंतर होता है कि
एक बाहरी आकर्षणों में खोया रहता है और
दूसरा आंतरिक यथार्थ में।

-आचार्य महाश्रमण

श्रद्धावनत

नोरतनमल ललित कुमार दूगड़

राजलदेसर-चेन्नई

वे लोग धन्य हैं, जो सदा शान्त रहते हैं और
जिनके चेहरे पर हर परिस्थिति में मुस्कान देखने को मिलती है।

-आचार्य महाश्रमण

श्रद्धावनत

तनसुखलाल, दिलिप, मनोज, अमित नाहर
प्रेम, नक्ष, जीत नाहर

दिवेर-चेन्नई

मेट्रो इलेक्ट्रोनिक्स
माउंट रोड, चेन्नई

कट्टरता सर्वत्र बुरी नहीं होती ।
वह बहुत अच्छी व आवश्यक भी होती है ।
व्रत पालन आदि के संदर्भ में तो कट्टरता अमृत है ।

-आचार्य महाश्रमण

श्रद्धावनत

पुखराज बड़ोला

मुख्य न्यासी, जैन विश्व भारती

जितेन्द्र मुकेश श्रेयांस बड़ोला

ब्यावर - चेन्नई

श्रद्धा का मतलब यह नहीं है कि तुम गलत बात को
पकड़ने के बाद उसे छोड़ो ही नहीं।
श्रद्धा यह रख लो कि मैं गलत लगने वाली बात को छोड़ भी सकता हूं।

-आचार्य महाश्रमण

श्रद्धावनत

अमरचंद धरमचंद लुंकड़

राणावास - चेन्नई

'A' Grade by NAAC and 'A' Category by MHRD

जैन विश्वभारती संस्थान, लाडनूँ

(मान्य विश्वविद्यालय)

नियमित पाठ्यक्रम स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम : एम.ए. : ▸ जैन विद्या एवं तुलनात्मक धर्म तथा दर्शन ▸ दर्शन ▸ संस्कृत ▸ प्राकृत ▸ हिन्दी ▸ योग एवं जीवन विज्ञान ▸ क्लीनिकल साइकोलॉजी ▸ अहिंसा एवं शान्ति ▸ राजनीति विज्ञान ▸ समाज कार्य ▸ अंग्रेजी ▸ एम.एड. (उपरोक्त सभी विषयों में पी-एच.डी. की सुविधा) एम.फिल.: ▸ जैन विद्या एवं तुलनात्मक धर्म तथा दर्शन ▸ अहिंसा एवं शांति ▸ प्राकृत एवं जैन आगम, स्नातक पाठ्यक्रम : ▸ बी.ए. ▸ बी.कॉम ▸ बी.एससी ▸ बी.ए.-बी.एड. ▸ बी.एससी.-बी.एड ▸ बी.एड. (केवल महिलाओं के लिए) विविध पाठ्यक्रम : प्रमाण पत्र एवं डिप्लोमा।

पत्राचार पाठ्यक्रम स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम : ▸ जैन विद्या एवं तुलनात्मक धर्म तथा दर्शन ▸ शिक्षा ▸ हिन्दी ▸ योग एवं जीवन विज्ञान ▸ अंग्रेजी

स्नातक पाठ्यक्रम : बी.ए. ▸ बी.कॉम., प्रमाण-पत्र पाठ्यक्रम, बी.पी.पी. पाठ्यक्रम : ▸ वे आवेदक जो 10+2 उत्तीर्ण नहीं हैं अथवा प्राथमिक औपचारिक योग्यता नहीं रखते हैं, लेकिन 18 वर्ष की उम्र पूर्ण कर चुके हों, विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित पाठ्यक्रम बी.पी.पी. परीक्षा उत्तीर्ण करने के पश्चात बी.ए. प्रथम वर्ष में प्रवेश प्राप्त कर सकते हैं।

फोन : 01581-224332, मो. 9462658701, 9462658501, Web : www.jvbi.ac.in, e-mail : jvbiladnun@gmail.com

।। जय भिक्षु ।।

।। जय महाश्रमण ।।

सद्‌विचार और सदाचार सद्‌भाग्य का निर्माण करने वाले है।

- आचार्य महाश्रमण

श्रद्धावनत

श्रीचंद, उम्मेद, विजयसिंह, अजय, अभिषेक, आतिष, तनिश, आरव एवं विराज मोहोनोत

(डीडवाना निवासी, बैंगलुरु प्रवासी)

Jay Group

Manufacturers & Exporters of
Plastic Tagging Pins, Loop Pins, Tagging Guns, Trimmers &
Texitile Spot Cleaning Guns under popular brands of :

ARROW® | Wonder® | TagStar® | UNIVERSAL® | CHOKHO®

No. 5 Charles Campbell Road, Cox Town, Bengaluru - 560005, Karnataka, India.
Tel. 0091 (0) 80- 25483928/25483508; Fax. 0091 (0)80-25488780/25484364;
E-mail : enquiry@jaygroups. com; Website - www.jaygroups.com